लखनऊ, मंगलवार, 25 अप्रैल 2023 | Email: starexpressnews@gmail.com | वर्ष : 16 अंक : 61 | पृष्ठ : 8 मूल्य : 1 रूपया

हिन्दी दैनिक/डिजिटल

स्टार एक्सप्रेस

सोच..... बदलते भारत की

www.starexpress.news

संक्षिप्त समाचार

चार धाम यात्रा: हार्ट अटैक से 2 श्रद्धालुओं की मौत

(एजेंसी) देहरादून। उत्तराखंड के यमुनोत्री में चल रही चार धाम यात्रा के दौरान दिल का दौरा पड़ने से दो लोगों की मौत हो गई। अधिकारियों ने सोमवार को यह जानकारी दी। चारधाम यात्रा को लेकर उत्तराखंड सरकार द्वारा जारी एडवायजरी पर चारधाम यात्रा पर आने वाले तीर्थयात्री ध्यान नहीं दे रहे हैं। यात्रियों के लिए सरकार द्वारा स्वास्थ्य एडवाइजरी जारी की गई है, लेकिन लापरवाही के कारण लगातार दूसरी बार यमुनोत्री धाम में श्रद्धालुओं की मौत हुई है। यमुनोत्री में दिल का दौरा पड़ने से अब तक दो लोगों की मौत हो चुकी है। सरकार ने उत्तराखंड चार धाम यात्रा पर आने वाले श्रद्धालुओं को यात्रा पर जाने से पहले अपने स्वास्थ्य की अच्छी तरह से जांच कराने की सलाह दी है।

भाजपा कुछ भी कर ले, फर्क नहीं पड़ता : जद (एस)

(एजेंसी) हासन। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह के कर्नाटक में जद (एस) के गढ़ हासन का दौरा करने के दौरान सोमवार को पूर्व प्रधानमंत्री एच.डी. देवेगौड़ा के बड़े बेटे एच.डी. रेवन्ना ने कहा कि भाजपा चाहे अमेरिकी या रूसी राष्ट्रपति की भूमिका निभाए, इससे जद (एस) को कोई फर्क नहीं पड़ता। एच.डी. देवेगौड़ा हासन जिले से आते हैं और इस क्षेत्र को गौड़ा परिवार का गढ़ माना जाता है। पिछले चुनाव में बीजेपी केवल एक सीट (प्रीतम गौड़ा) जीतने में कामयाब रही। लेकिन इस बार देवेगौड़ा परिवार ने भाजपा के कब्जे वाली सीट पर जीत हासिल करना अपनी प्रतिष्ठा का विषय बना लिया है।

पंजाब के गुरुद्वारा साहिब में बडी घटना, सामने आई हैरान कर देने वाली फुटेज

(एजेंसी) चण्डीगढ़। मोरिंडा के ऐतिहासिक गुरुद्वारा श्री कोतवाली साहिब में एक बेहद शर्मनाक घटना हुई है। जानकारी के अनुसार गुरुद्वारा साहिब में अखंड पाठ चल रहा था और संगत गुरुघर में नतमस्तक हो रही थी। इस बीच एक व्यक्ति गुरुघर में दाखिल होकर ग्रंथी सिंह की तरफ इशारा करता है और आगे आकर उन पर हमला कर देता है। गुरुघर के अंदर हुई उक्त वारदात वहां लगे सी.सी.टी.वी. कैमरे में कैद हो गई, जो अब वायरल हो रही है। फुटेज में दिखाई दे रहा है कि आगे से ग्रंथी सिंह भी तलवार निकाल लेता है। इसका कारण अभी पता नहीं चला है, लेकिन बताया जा रहा है कि उक्त व्यक्ति की ग्रंथी सिंह से रंजिश थी। बेशक ग्रंथी सिंह के साथ कोई रंजिश हो सकती है।

एनआईए ने हिज्बुल मुजाहिदीन सरगना के बेटे का मकान कुर्क किया

(एजेंसी) श्रीनगर। राष्ट्रीय अन्वेषण अभिकरण (एनआईए) ने यहां रामबाग इलाके में हिज्बुल मुजाहिदीन के सरगना सैयद सलाहुद्दीन के बेटे का एक मकान सोमवार को कुर्क कर लिया। अधिकारियों ने यह जानकारी दी। उन्होंने बताया कि गैर कानूनी गतिविधि रोकथाम अधिनियम (यूएपीए) के तहत अदालत के आदेश पर मकान कुर्क किया गया, जो राजस्व रिकॉर्ड में सैयद अहमद शकील के नाम पर पंजीकृत है। संपत्ति कुर्क करने की घोषणा वाला एक नोटिस बोर्ड मकान के बाहर लगा दिया गया है। एनआईए द्वारा हिज्बुल मुजाहिदीन आतंकी समूह के संस्थापक सरगना मोहम्मद युसूफ शाह उर्फ सैयद सलाहुद्दीन की और भी संपत्ति कुर्क किए जाने की संभावना है।

देश की महाविनाशक मिसाइल

दुश्मन के हर वार को वायुमंडल में करेंगी खाक...

❑ पीएम मोदी ने डीआरडीओ-नौसेना को दी बधाई

❑ विकसित भारत के लिए गांव का विकसित होना जरुरी : पीएम मोदी

(एजेंसी)

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने समुद्र आधारित अंत: वायुमंडलीय इंटरसेप्टर मिसाइल का पहला उडान परीक्षण सफल होने पर सोमवार को रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ) और भारतीय नौसेना को बधाई दी। ओडिशा के तट से डीआरडीओ और भारतीय नौसेना ने शुक्रवार को इस मिसाइल का सफल परीक्षण किया। नौसेना की ओर से इस सफलता को लेकर किए गए एक ट्वीट के जवाब में प्रधानमंत्री ने कहा, ''हमारी रक्षा क्षमताओं को और मजबूत करने के लिए हमारे वैज्ञानिकों को उनके निरंतर धैर्य और दृढ संकल्प के लिए बधाई। रक्षा मंत्रालय के मुताबिक डीआरडीओ और भारतीय नौसेना ने 21 अप्रैल, 2023 को बंगाल की खाड़ी में ओडिशा के तट पर समुद्र आधारित एंडो-ऐटमौस्फेयरिक बैलिस्टिक मिसाइल रक्षा (डीआरडीओ) इंटरसेप्टर की पहली उड़ान परीक्षण का सफलतापूर्वक संचालन किया। मंत्रालय ने कहा कि परीक्षण का उद्देश्य दुश्मन के बैलिस्टिक मिसाइल खतरे के प्रभाव को लक्षित करना और नष्ट करना था। यह भारतीय नौसेना को बीएमडी क्षमताओं वाले देशों के विशिष्ट समूह में स्थान दिला सकता है। इससे पहले, त्क्क् ने सतह आधारित ठडक् प्रणाली की क्षमता का सफलतापूर्वक प्रदर्शन किया था और इस तरह दुश्मन की तरफसे आने वाली बैलिस्टिक मिसाइल के खतरों को बेअसर करने की क्षमता हासिल की थी। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने मध्य प्रदेश के रीवा के एसएएफ मैदान में आयोजित राष्ट्रीय पंचायती राज दिवस समारोह में गांव के विकास पर जोर देते हुए कहा कि विकसित भारत के लिए गांव का विकसित होना जरुरी है। प्रधानमंत्री ने रीवा की धरती से विंध्वासिनी को प्रणाम और यहां के शूरवीरों का नमन करते हुए कहा, भारत को विकसित बनाने के लिए भारत के गांवों की सामाजिक व्यवस्था को विकसित करना जरूरी है। भारत को विकसित बनाने के लिए भारत के गांवों की आर्थिक व्यवस्था को विकसित करना जरूरी है। प्रधानमंत्री ने अपने रीवा के पूर्व के प्रवासों का भी स्मरण किया और कहा, हम सभी जनता के प्रतिनिधि लोकतंत्र के लिए समर्पित हैं। काम के दायरे भले ही अलग हों, लेकिन लक्ष्य एक ही है- जनसेवा से राष्ट्र सेवा। उन्होंने आगे कहा, गांव, गरीब का जीवन आसान करने के लिए केन्द्र सरकार की योजनाओं को पंचायतें पूरी निष्ठा से जमीन पर उतार रही हैं।

बस सफर, रहने का ठिकाना और बच्चों की कोचिंग, 13 लाख मजदूरों पर मेहरबान हुई केजरीवाल सरकार

(एजेंसी)

नयी दिल्ली । दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने सोमवार को श्रम विभाग के अधिकारियों के साथ बैठक की और उन्हें मजदूरों के लिए मकान व होस्टल (आश्रयस्थलों) की व्यवस्था करने का निर्देश दिया। मुख्यमंत्री कार्यालय ने सिलसिलेवार ट्वीट में कहा, मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने आज श्रम विभाग के साथ एक महत्वपूर्ण समीक्षा बैठक की। मुख्यमंत्री ने विभाग को आदेश दिया कि सरकारी सुविधाओं तथा योजनाओं को दिल्ली में पंजीकृत सभी 13 लाख श्रमिकों तक पहुंचाने के लिए काम हो। कार्यालय ने कहा, बैठक में इन बिंदुओं पर फैसले किए गए-सभी श्रमिकों को बसों में मुफ्त सफर के लिए सालाना डीटीसी (दिल्ली परिवहन निगम) पास दिए जाए। श्रमिकों के रहने के लिए मकानों व होस्टल की व्यवस्था की जाए। सभी श्रमिकों के बच्चों के लिए मुफ्त 'कोचिंग की व्यवस्था हो। सभी श्रमिकों को 'टूलकिट दिए जाएंगे व बड़े स्तर पर उनके लिए 'कौशल विकास कार्यक्रम चलाए जाएंगे। सभी श्रमिकों को ईएसआई (कर्मचारी राज्य बीमा निगम) तथा एवं ग्रुप इंश्योरेंस दिए जाएंगे।

अब उपद्रव और माफिया नहीं, बल्कि महोत्सव है यूपी की पहचान : योगी

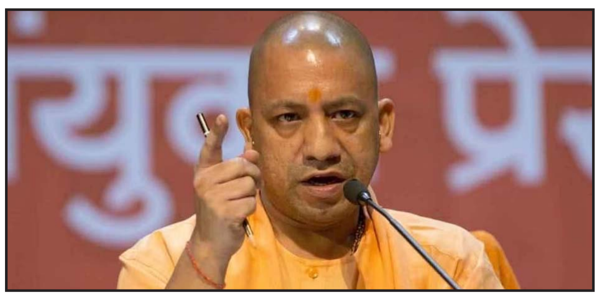

(संवाददाता)

लखनऊ । उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने सोमवार को विपक्ष की पिछली सरकारों पर निशाना साधते हुए कहा कि, अब उपद्रव एवं माफिया नहीं बल्कि उत्सव एवं महोत्सव उत्तर प्रदेश की पहचान है। दरअसल, मां शाकंभरी और बाला सुंदरी की पवित्र भूमि सहारनपुर से नगर निकाय चुनाव प्रचार की शुरुआत करते हुए योगी आदित्यनाथ ने चुनावी जनसभा में अपनी सरकार की सिलसिलेवार उपलब्धियां गिनाईं और रंगदारी न फिरौती, अब यूपी नहीं किसी की बपौती और आज यूपी में न कर्फ्यू न दंगा, आज यूपी में सब ओर चंगा जैसे नारे दिये। सीएम योगी ने कहा कि, अब उपद्रव नहीं, उत्सव हमारी पहचान है, माफिया नहीं, महोत्सव हमारी पहचान है। उन्होंने पिछली सरकारों पर आरोप लगाते हुए कहा कि, 2017 से पहले सरकारों को दंगा कराने से फुर्सत नहीं थी, लेकिन आज उत्तर प्रदेश में कहीं कर्फ्यू नहीं लगता। अब तो कांवड़ यात्रा निकलती है। पहले नौजवानों पर झूठे मुकदमे होते थे। पहले शोहदों का आतंक रहता था और बेटियां घर से निकलने में डरती थी और आज उत्तर प्रदेश में भयमुक्त माहौल है।

उन्होंने कहा कि यह चुनाव डबल इंजन की सरकार के साथ तीसरे इंजन को जोड़ने के लिए हो रहा है जिसमें नगर निगमों के महापौर, पार्षद, नगर पालिका एवं नगर पंचायतों के अघ्यक्षों और सभासदों को कमल निशान पर मत देकर चुनाव जिताना है और जब बहुमत का उनका बोर्ड बनेगा तो दिल्ली से जो पैसा आएगा उसका सदुपयोग होगा। मुख्यमंत्री ने कहा कि, हमें तय करना है कि, हमें 2017 के पहले की जातिवादी सरकारें चाहिए या फिर गरीब कल्ध्याण के लिए समर्पित सरकार चाहिए। उन्होंने कहा कि हमें तय करना होगा कि युवाओं के हाथ में तमंचे हों या युवाओं के हाथ में टैबलेट और स्मार्टफोन हो।

हमें तय करना है कि गलियों में अपराधियों की गोलियों की तड़तड़ाहट होनी चाहिए या फिर भजन गंगा का प्रवाह सुनाकर लोगों के जीवन में परिवर्तन। सीएम योगी ने कहा,''मां शाकंभरी का आशीर्वाद मिले, मैं इसलिए यहां से चुनाव प्रचार की शुरुआत कर रहा हूं। हमने जाति, मजहब या किसी का चेहरा देखे बिना सभी तक योजनाओं का लाभ पहुंचाया। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में सहारनपुर विकास की एक नई आभा के साथ देश और दुनिया के सामने चमकता हुआ दिखाई दे रहा है। उन्होंने सहारनपुर के लिए विकास योजनाओं को भी विस्तार से बताया।

ज्ञानवापी केस की संयुक्त सुनवाई 3 मई को

वादनियों के 7 केस की सुनवाई का शेड्यूल तय करेंगे जिला जज

(संवाददाता)

वाराणसी। ज्ञानवापी से जुड़े एक ही प्रकृति के सात मामलों की सुनवाई के आदेश के बाद शेडयूल को लेकर फैसला तीन मई को होगा। मामले में पहले 17 अप्रैल को एक साथ जिला जज की कोर्ट में सुनवाई का फैसला आया था। अब इनका शेडयूल तय करने के लिए 21 अप्रैल को जिला जज की कोर्ट में सुनवाई होनी थी। कोर्ट ने अवकाश के चलते इसे 24 अप्रैल तक टाल दिया। आज सुनवाई के लिए वादी पक्ष कोर्ट पहुंचा लेकिन अधिवक्ता राजेंद्र सेठ के निधन के बाद वकील न्यायिक कार्य से विरत रहे। बार एसोसिएशन द्वारा शोक प्रस्ताव के मद्देनजर सुनवाई नहीं हुई। ऐसे में अब सुनवाई की तिथि तीन मई तय की गई है। ज्ञानवापी से जुड़े श्रृंगार गौरी वाद की महिला वादिनी लक्ष्मी देवी, रेखा पाठक, सीता साहू व मंजू व्यास ने जिला जज की अदालत में प्रार्थना पत्र देकर सात मामलों की सुनवाई एक साथ, एक ही अदालत में करने की मांग की थी। 17 अप्रैल को इस पर फैसला आया कि सभी मामलों की सुनवाई एक कोर्ट में एक साथ होगी मगर एक साथ होगी या अलग-अलग इसे जिला जज तय करेंगे। जिला जज की अदालत ने बीते सोमवार को आदेश पारित किया था। 19 पेज के आदेश में कहा गया है कि जिन अदालतों में मामले लंबित हैं, उन्हें जिला जज की अदालत में स्थानांतरित किया जाता है। इनके स्थानांतरित होकर जिला जज की अदालत में आने के बाद इस बिंदु का निर्धारण किया जाएगा कि सभी वादों का एक साथ सुना जाना उचित है या नहीं। जिला जज ने आदेश में स्पष्ट किया है कि जब सभी मामले स्थानांतरित होकर जिला जज की अदालत में आ जाएंगे, तब देखा जाएगा कि सभी मामले एक साथ सुने जाने योग्य हैं या नहीं। जिन सात मामलों को स्थानान्तरित कर एक साथ सुनवाई किए जाने का अनुरोध जिला जज की अदालत से श्रृंगार गौरी वाद की महिला वादिनी लक्ष्मी देवी, रेखा पाठक, सीता साहू व मंजू व्यास ने किया है, वो सभी एक ही प्रकृति हैं। पहला मामला अविमुक्तेश्वरानंद, दूसरा मां श्रृंगार गौरी व अन्य,तीसरा आदि विश्वेश्वर व अन्य, चौथा आदि विश्वेश्वर आदि, पांचवां मां गंगा व अन्य, छठा सत्यम त्रिपाठी व अन्य और सातवां नंदी जी महाराज की तरफसे दाखिल वाद हैं। यह सभी वाद एक ही प्रकृति के बताए गए हैं। इनमें आराजी नंबर 9130 के स्वामित्व की मांग और ज्ञानवापी परिसर स्थित श्रृंगार गौरी, आदि विश्वेश्वर व अन्य देवी देवताओं के राग भोग, दर्शन पूजन आदि की मांग नाबालिग देवता मानते हुए की गई है।

मोदी 'सरनेम' मामले में राहुल गांधी को बडी राहत, पटना हाईकोर्ट ने मामले की सुनवाई पर लगाई रोक

(एजेंसी)

पटना। मोदी सरनेम' मामले में राहुल गांधी को बडी राहत, पटना हाईकोर्ट ने मामले की सुनवाई पर लगाई रोक। न्यायमूर्ति संदीप कुमार ने गांधी की एक याचिका पर सुनवाई करते हुए कार्यवाही पर रोक लगा दी, जिसमें कहा गया है कि चूंकि उन्हें पहले ही गुजरात की एक अदालत द्वारा इसी तरह के मामले में दोषी ठहराया जा चुका है, इसलिए उनपर उसी अपराध के लिए फिर से मुकदमा नहीं चलाया जा सकता है। बिहार के पूर्व उपमुख्यमंत्री और भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के वरिष्ठ नेता सुशील कुमार मोदी के वकील एस डी संजय ने बताया, (उच्च न्यायालय ने 15 मई तक मुकदमे की सुनवाई पर रोक लगा दी है।

उसी तारीख पर हम याचिका पर अपना जवाब दाखिल करेंगे।) साल 2019 के लोकसभा चुनाव के दौरान कर्नाटक में एक चुनावी रैली में राहुल गांधी के भाषण देने के कुछ दिनों बाद सुशील मोदी ने उनके खिलाफमानहानि का मुकदमा दायर किया था। यहां की सांसदों/विधायकों के खिलाफ मामले की सुनवाई के लिये गठित विशेष अदालत ने हाल के एक आदेश में गांधी को याचिका के संबंध में 25 अप्रैल को उसके समक्ष पेश होने को कहा था। गौरतलब है गांधी को 'मोदी उपनाम संबंधी टिप्पणी को लेकर उनके खिलाफदायर मानहानि के मामले में सूरत की एक अदालत ने उन्हें दोषी करार दिया था और दो साल कैद की सजा सुनाई थी, जिसके बाद कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष को संसद की सदस्यता से अयोग्य घोषित कर दिया गया था।

बीजेपी को करना होगा हीरो से जीरो', नीतीश के साथ बैठक के बाद ममता बोलीं, आइए बिहार में करते हैं मीटिंग

(एजेंसी)

कोलकाता। बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने सोमवार को यहां पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी से मुलाकात की और उन्होंने विपक्षी दलों का गठबंधन बनाने की वकालत की। दोनों क्षेत्रीय नेताओं ने 2024 के लोकसभा चुनाव के लिए मिलकर तैयारी करने की जरूरत पर जोर दिया। दोनों नेताओं की मुलाकात को 'सकारात्मक बताया गया है जिसमें बिहार के उप मुख्यमंत्री तेजस्वी यादव भी उपस्थित थे। राज्य सचिवालय 'नबन्ना में बैठक के बाद कुमार ने कहा, ''बेहद सकारात्मक बातचीत हुई। विपक्षी दलों को एकसाथ बैठकर रणनीति तैयार करने की जरूरत है। बैठक से बाहर आकर ममता बनर्जी ने कहा, ''हमें यह संदेश देना है कि हम सभी एक साथ हैं। ममता ने कहा, हम खुश हैं कि बंगाल में आये हैं। जय प्रकाश का आंदोलन बिहार से हुआ था। बिहार में पार्टी मीटिंग करें। वहां से इसकी शुरुआत हो। हम लोग एक साथ हैं। हमारा कोई एतराज नहीं है। मैं चाहती हूं कि बीजेपी जीरो बन जाए। हम संयुक्त रूप से एक साथ काम करना चाहते हैं। देश की जनता भाजपा के साथ लडेगी और सभी पार्टियां एक साथ हैं। सूत्रों ने कहा कि दोनों पक्षों ने बैठक में इस बारे में बातचीत की कि वे चुनाव से पहले कारगर गठबंधन बनाने के लिए किस तरह मिलकर काम कर सकते हैं। कुमार ने सरकार पर निशाना साधते हुए दावा किया, ''भारत के विकास के लिए कुछ भी नहीं किया जा रहा, शासन करने वालों को केवल प्रचार करने में दिलचस्पी है। ममता बनर्जी ने समाजवादी पार्टी (सपा) के अध्यक्ष अखिलेश यादव, ओडिशा के मुख्यमंत्री नवीन पटनायक और जनता दल (सेक्युलर) के नेता एच.डी. कुमारस्वामी के साथ पिछले महीने इसी तरह की बैठकें की थीं। लोकसभा चुनाव से पहले विपक्षी दलों को एकजुट करने के लिए कुमार ने इस महीने की शुरुआत में नयी दिल्ली में कांग्रेस के अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे और पार्टी के वरिष्ठ नेता राहुल गांधी से मुलाकात की थी।

अमित शाह का विपक्ष पर हमला

कांग्रेस आज भी तुष्टिकरण की राजनीति कर रही है : शाह

❑ भाजपा कर्नाटक में पूर्ण बहुमत के साथ सरकार बनाएगी और एक बार फिर भारत के दक्षिण में पार्टी के प्रवेश को मजबूत करेगी : अमित शाह

(एजेंसी) गुंडलुपेट ।केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने सोमवार को कहा कि कर्नाटक में 10 मई को होने वाला विधानसभा चुनाव प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की विकास की राजनीति बनाम कांग्रेस की तुष्टिकरण की राजनीति के बारे में है। उन्होंने जोर देकर कहा कि भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) कर्नाटक में पूर्ण बहुमत के साथ सरकार बनाएगी और एक बार फिर भारत के दक्षिण में पार्टी के प्रवेश को मजबूत करेगी। उन्होंने कहा कि कांग्रेस आज भी तुष्टिकरण की राजनीति कर रही है। कांग्रेस द्वारा मुसलमानों को दिया गया चार प्रतिशत आरक्षण भाजपा ने समाप्त कर दिया है और उसने लिंगायत, वोक्कालिगा, अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के लिए आरक्षण बढ़ा दिया है। चामराजनगर जिले के गुंडलुपेट में एक विशाल रोड शो करने के बाद एक जनसभा को संबोधित करते हुए, पूर्व भाजपा प्रमुख ने कहा कि राज्य कांग्रेस अध्यक्ष डी के शिवकुमार ने कहा था कि अगर उनकी पार्टी सत्ता में आती है तो वे एक बार फिर मुसलमानों के लिए आरक्षण लाएंगे। शाह ने लोगों से पूछा क्या वे मुस्लिम आरक्षण वापस चाहते हैं? साथ ही उन्होंने कहा कि मैं कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष शिवकुमार से पूछना चाहता हूं, आप एक बार फिर मुस्लिम आरक्षण लाने के बारे में बोल रहे हैं, लेकिन आप किसका हिस्सा कम कम करेंगे? कर्नाटक के लोगों को जवाब दें, क्या आप वोक्कालिगा या लिंगायत या एससीध्एसटी के आरक्षण को कम करेंगे? पार्टी के प्रमुख चुनावी रणनीतिकारों और प्रचारकों में से एक शाह ने कहा, ''यह चुनाव मोदी की विकास की राजनीति बनाम कांग्रेस की तुष्टिकरण की राजनीति के बारे में है। कर्नाटक में चुनाव की घोषणा से ठीक पहले मुख्यमंत्री बासवराज बोम्मई के नेतृत्व में राज्य मंत्रिमंडल ने अन्य पिछड़ा वर्ग (ओबीसी) कोटा के तहत मुसलमानों के लिए चार प्रतिशत आरक्षण को खत्म करने और इसे प्रमुख वोक्कालिगा और लिंगायत समुदायों के बीच समान रूप से वितरित करने का फैसला किया था। कर्नाटक में भाजपा के पूर्ण बहुमत की सरकार बनाने और दक्षिण भारत में पार्टी के प्रवेश को एक बार फिर मजबूत करने का विश्वास जताते हुए शाह ने कहा, ''मोदी के नेतृत्व में डबल इंजन की सरकार बनेगी। मोदी और हमारे सीएम बोम्मई ने कर्नाटक की प्रगति के लिए काम किया है। शाह ने लोगों से मौजूदा विधायक निरंजन कुमार को गुंडलुपेट से एक बार फिर बड़े अंतर से चुनाव जिताने और चामराजनगर जिले की सभी चार विधानसभा सीटों को भाजपा की झोली में डालने की अपील की। केंद्रीय गृह मंत्री ने इससे पहले गुंडलुपेट में एक विशाल रोड शो किया। इस दौरान उन्होंने भारी भीड़ का हाथ हिलाकर कई बार अभिवादन भी किया।

संपादकीय

सर्जिकल और एअर स्ट्राइक

कांग्रेस से कुछ सवाल हैं- जब भी चीन और पाकिस्तान से जुड़ा मुद्दा होता है तब कांग्रेस देश के साथ क्यों खड़ी नजर नहीं आती? इसके अलावा क्या पुलवामा हमले को लेकर कांग्रेस के आरोप एक तरह से पाकिस्तान को क्लीन चिट देना नहीं है? देश पर दशकों तक शासन करने वाली पार्टी कांग्रेस को पता है कि देश की रक्षा-सुरक्षा से जुड़े मुद्दों पर राजनीति नहीं की जानी चाहिए लेकिन कांग्रेस है कि मानती नहीं। सर्जिकल स्ट्राइक और एयर स्ट्राइक को फर्जी बता कर कांग्रेस नेता तमाम अवसरों पर सेना के शौर्य पर सवाल उठाते रहे हैं। अब कांग्रेस के नेता जम्मू-कश्मीर के पूर्व राज्यपाल सत्यपाल मलिक के एक साक्षात्कार में कही गयी बात पर विश्वास करते हुए पुलवामा हमले के लिए मोदी सरकार को दोषी ठहरा रहे हैं। हम आपको याद दिला दें कि कांग्रेस ने पिछले लोकसभा चुनावों के दौरान एक पूर्व सेना अधिकारी के दावों के हवाले से सर्जिकल स्ट्राइक को संदिग्ध बनाने का प्रयास किया था और अब सत्यपाल मलिक के हवाले से वह पुलवामा हमले को संदिग्ध बनाने का प्रयास कर रही है। यहां कांग्रेस से कुछ सवाल हैं- जब भी चीन और पाकिस्तान से जुड़ा मुद्दा होता है तब कांग्रेस देश के साथ क्यों खड़ी नजर नहीं आती? इसके अलावा क्या पुलवामा हमले को लेकर कांग्रेस के आरोप एक तरह से पाकिस्तान को क्लीन चिट देना नहीं है? क्योंकि पाकिस्तानी मीडिया कांग्रेस नेताओं के बयानों को चौबीसों घंटे दिखा रहा है। सर्जिकल और एयर स्ट्राइक से पाकिस्तान तो कुछ दिनों बाद संभल गया था मगर शायद कांग्रेस अब तक नहीं संभल पाई है। यही नहीं, जो कांग्रेस नेता वर्तमान सरकार की आतंकवाद से निबटने संबंधी नीति पर सवाल उठा रहे हैं और पुलवामा में सैनिकों की दुखद मौत के लिए सरकार को जिम्मेदार ठहरा रहे हैं उन्हें बताना चाहिए कि जब उनके शासन में हमारे जवानों की गर्दन काट कर सीमा पार आतंकवादी भाग जाया करते थे तब क्या बदला लिया गया था? कांग्रेस को यह भी बताना चाहिए कि 26¤11 के मुंबई हमले के बाद सेना को पाकिस्तान पर जवाबी कार्रवाई करने से क्यों रोका गया था? कांग्रेस को बताना चाहिए कि क्यों उसके शासन में भीड़भाड़ वाले इलाकों में ही नहीं बल्कि आलीशान होटलों और अदालत परिसरों में भी श्रृंखलाबद्ध बम विस्फोट होना आम बात थी? कांग्रेस बताये कि क्यों उसके राज में पूर्वोत्तर उग्रवाद और कश्मीर आतंकवाद से जूझता रहता था और देश के कई दर्जन जिले माओवाद की समस्या से ग्रसित थे? कांग्रेस को समझना चाहिए कि वक्त बदल चुका है। भारत का स्पष्ट संदेश है कोई छेड़ेगा तो छोड़ेंगे नहीं। आपको याद ही होगा कि पुलवामा हमले के तुरंत बाद अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने दावा कर दिया था कि भारत तगड़ी जवाबी कार्रवाई कर सकता है। भारत ने कार्रवाई की और ऐसी की कि दुश्मन देश के सेनाध्यक्ष के हाथ पैर कांप रहे थे। कांग्रेस के राज में हर जगह एक ही उद्घोषणा होती थी कि लावारिस वस्तु बम हो सकती है लेकिन उरी, पुलवामा, डोकलाम, गलवान और तवांग के बाद हर दुश्मन को यह स्पष्ट हो गया है कि भारत को आजमाने की कोशिश मत करना।

जटिल यक्ष प्रश्न

आखिरकार बठिंडा सैन्य स्टेशन में चार सैनिकों की निर्मम हत्या के पांच दिन बाद पंजाब पुलिस ने हत्या के कारणों का पता लगाने तथा अभियुक्त को गिरफ्तार करने का दावा किया है। सैन्य स्टेशन के भीतर चार सैनिकों की हत्या ने हर किसी को स्तब्ध किया था कि आखिर कैसे हत्यारे कड़ी सुरक्षा को बेधने में कामयाब हुए। इस बात की आशंका पहले से जतायी जा रही थी कि हत्या के सुराग स्टेशन के भीतर ही मिलेंगे। हुआ भी ऐसा ही, और पुलिस का दावा है कि हत्याओं का मकसद व्यक्तिगत रंजिश थी और यह अभियुक्त के शारीरिक उत्पीड़न की प्रतिक्रिया थी। निस्संदेह, यह घटना बेहद चिंता का विषय है। साथ ही सुरक्षा की कमजोर कड़ियों को संबोधित करने की जरूरत बताती है। वहीं अभियुक्त द्वारा लगाये शारीरिक शोषण के आरोपों को गंभीरता से लेने की जरूरत भी बताती है। निस्संदेह, एक सैनिक की लंबी ड्यूटी और लगातार घर से दूर रहने की वजह कई तरह की जटिल स्थितियां पैदा करती है। एक युवा सैनिक अपनी भरपूर ऊर्जा के काल में देश सेवा में जीवन का बहुमूल्य समय देता है। लेकिन उसे आमतौर पर जटिल व दुर्गम इलाकों में ड्यूटी के दौरान अपने परिवार से दूर रहना पड़ता है। हालांकि, कई सुगम इलाकों में सैनिकों व जेसीओज को परिवार साथ रखने की इजाजत होती है। लेकिन इसके बावजूद सेना व सुरक्षा बलों के जवानों को लंबे समय तक परिवार से दूर रहना पड़ता है। साल में एक बार मिलने वाली लंबी छुट्टी के अलावा उन्हें बीच में छुट्टी लेने के अवसर कम ही मिलते हैं। दरअसल, वक्त बदलने के साथ सेना में पढ़े-लिखे युवाओं की भर्ती भी बढ़ी है। उनकी उम्मीदें और आकांक्षाएं भी देश के शेष युवाओं से कमतर नहीं हैं। एक बहुत बड़ा वर्ग ऐसा भी है जो महज रोजगार की दृष्टि से सेना को अपना कैरियर चुनता है। वक्त के साथ ही जीवन व नैतिक मूल्यों के प्रति उसके दृष्टिकोण में बदलाव भी आया है। दरअसल, सोशल मीडिया के उफान के बाद शेष देश के साथ ही सेना के जवान भी उससे अछूते नहीं रहे हैं। मोबाइल के जरिये इंटरनेट तक सहज पहुंच के चलते युवाओं तक ऐसी सामग्री सहजता से पहुंच रही है जो भारतीय जीवन पद्धति में वर्जित मानी जाती रही है। हमारे आम लोगों में खूब देखे जा रहे सोशल मीडिया एप्स पर देर-सवेर ऐसी सामग्री का प्रसारण होता है, जो भारतीय समाज में नैतिक मूल्यों को ताक पर रखती है। जाहिर है यह रोग सेना की दहलीज तक भी पहुंचा है। खासकर सीमा पार से भी सेना के जवानों को शिकंजे में लेने की साजिशें लगातार चलती रहती हैं। हाल के दिनों में हनी ट्रैप में कई जवानों को फंसाये जाने और खुफिया दस्तावेज शत्रुओं तक पहुंचाने के मामले सेना के विभिन्न अंगों में प्रकाश में आये हैं। दरअसल, देश-विदेश के उत्तेजक वीडियो काम वासनाओं को भड़काकर वर्जनाओं को तोड़ने को बाध्य करते हैं। बठिंडा सैन्य स्टेशन में वारदात में शामिल सैनिक ने अपने सहयोगियों पर शारीरिक शोषण का आरोप लगाया है। इस गंभीर समस्या को अविलंब संबोधित करने की जरूरत है। ऐसी किसी असामान्य स्थिति पर नजर रखने की आवश्यकता है। फिर जरूरत पीड़ित पक्ष की बात सुनकर तुरंत कार्रवाई करने की है। इसके अलावा सैनिकों व सुरक्षा बलों के जवानों को सामान्य दिनों में बीच-बीच में छुट्टियां देने की व्यवस्था के बारे में सोचने की भी जरूरत है। निस्संदेह, सीमा पर तनाव व सुरक्षा को चुनौती के दिनों में ऐसा करना संभव नहीं होगा,लेकिन फिर भी सैनिकों की जैविक जरूरतों पर ध्यान देने की जरूरत है। भारत जैसे गर्म जलवायु वाले इलाकों में युवाओं की परिपक्वता की उम्र कम होने के पहलू को ध्यान में रखते हुए मनोरंजन, खेलों तथा अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रमों के जरिये सैनिकों को व्यस्त रखने का प्रयास करना होगा। इसके अलावा योग व ध्यान के जरिये सैनिकों को मनोभावों पर नियंत्रण व संयमित जीवन जीने के लिये प्रेरित करना होगा। अमेरिका, कनाडा व आस्ट्रेलिया आदि दुनिया की तमाम सेनाओं में सैनिकों के आत्मसंयम व मानसिक शांति के लिये योग व ध्यान की समृद्ध भारतीय विरासत को अपनाया जा रहा है, तो हम पीछे क्यों हैं?

सरकारी लापरवाही लोगों की जान पर भारी

नवी मुंबई में खुले मैदान में महाराष्ट्र भूषण पुरस्कार समारोह आयोजित किया गया था। 1995 में शिवसेना और भाजपा की मिली-जुली सरकार ने इसकी शुरुआत की थी। यह महाराष्ट्र का सबसे बड़ा पुरस्कार है और पहला महाराष्ट्र भूषण पुरस्कार 1996 में दिया गया था। साहित्य, कला, खेल, विज्ञान, समाज सेवा, पत्रकारिता, लोक प्रशासन और स्वास्थ्य कार्य इन क्षेत्रों में कार्यरत लोगों को यह पुरस्कार दिया जाता है। इस बार यह पुरस्कार आध्यात्मिक नेता और समाजसुधारक अप्पासाहेब धर्माधिकारी को दिया गया। 2008 में उनके पिता नाना साहेब धर्माधिकारी भी इससे सम्मानित हो चुके हैं। महाराष्ट्र की विभूतियों को सम्मानित करने का यह आयोजन रविवार को एक दर्दनाक घटना में तब्दील हो गया। कार्यक्रम में लाखों लोगों की भीड़ जुटी थी। खुले मैदान में समारोह चल रहा था और इस दौरान तपती गर्मी और लू की चपेट में आने से 13 लोगों की मौत हो गई, कई अस्पताल में भर्ती हैं, जिनमें से कुछ की हालत गंभीर है। सरकार की ओर से जारी विज्ञप्ति में 11 की मौत का ही जिक्र है, लेकिन सोमवार को मृतकों का आंकड़ा बढ़ गया। एक की मौत हो या 11 की या 13 की, एक इंसान के जाने से पूरा परिवार उजड़ने की कगार पर आ जाता है, इस व्यथा से हर मध्यमवर्गीय, निम्नवर्गीय नागरिक परिचित है। खुले मैदान में अपने नेता या उद्धारक को सम्मानित होते देखने के लिए जो लोग बैठे हुए थे, वे अभिजात्य वर्ग के तो नहीं होंगे, यह तय है। अगर होते तो शायद व्यवस्था का स्तर कुछ और होता। अप्पासाहेब को सम्मानित करने के लिए केन्द्रीय गृहमंत्री अमित शाह आए थे और कार्यक्रम का

वक्त दोपहर का रखा गया था। सरकार का कहना है कि अप्पासाहेब से पूछकर यह वक्त रखा गया था। हालांकि शिवसेना सांसद संजय राउत के मुताबिक अमित शाह की सुविधा से कार्यक्रम का वक्त तय किया गया। कारण कुछ भी हो, सच यही है कि गर्म मौसम के बावजूद दोपहर में कार्यक्रम रखने की गैरजिम्मेदारी और लापरवाही दिखाई गई। इस कार्यक्रम के आयोजक हिंदुस्तानी ही थे, विदेशी नहीं, जो उन्हें पता ही न हो कि गर्मी के महीने गर्म प्रदेशों में कितना कहर हर साल बरपाते हैं। लू के कारण लोगों की मौत होना, गर्मियों के कारण स्कूलों में असमय अवकाश घोषित कर देना, जंगलों में आग लगना, पशु-पक्षियों का प्यास से तड़पना, ऐसी खबरें गर्मी के मौसम में हर साल ही आती हैं। फिर भी सरकार ने इस ओर ध्यान नहीं दिया। जब कार्यक्रम के लिए मंच तैयार हो रहा होगा, बाकी व्यवस्थाएं की जा रही होंगी, तब भी गर्मी का पता चल ही रहा होगा। लेकिन सरकार ने इस पर ध्यान नहीं दिया होगा, क्योंकि दर्शकों में अधिकतर आम लोग ही शामिल थे और आम जनता की जान की कीमत इस देश में कुछ है ही नहीं। लॉकडाउन के वक्त पैदल चलने मजदूरों की जान की परवाह नहीं की गई, मोरबी कांड में मरने वालों को अब तक इंसाफनहीं मिल सका है, तो अब महाराष्ट्र भूषण पुरस्कार समारोह में हुई आपराधिक लापरवाही में किसी को सजा मिलेगी, इसकी उम्मीद करना बेमानी है। मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे ने इन मौतों को श्बहुत दुर्भाग्यपूर्णश् बताया। खुद को आटो चलाने वाला बताकर आम आदमी से जुड़े होने का दावा करने वाले श्री शिंदे बताएं कि किस तरह की मौत को वे सौभाग्यपूर्ण मानते हैं। उन्हें पता होना चाहिए एक इंसान की मौत से पूरा परिवार प्रभावित होता है। उनके दुर्भाग्यपूर्ण कहने से किसी का दुख कम नहीं होगा, न ही मृतक के परिजनों को जो पांच-पांच लाख रुपये का मुआवजा देने का ऐलान उन्होंने किया है, उससे किसी कोई क्षतिपूर्ति होगी। महाराष्ट्र भूषण सम्मान में 25 लाख रुपए सम्मान निधि के तौर पर दिए जाते हैं। हर बार यह कार्यक्रम किसी सभागृह में होता था और कुछ लाख रुपए के खर्च में सारी व्यवस्थाएं हो जाती थीं। लेकिन इस बार 305 एकड़ के खुले मैदान में यह आयोजन हुआ, जिस पर 13 करोड़ रुपए खर्च हुए। शिंदे सरकार इस बात का जवाब दे कि 25 लाख रुपए की सम्मान राशि और 13 करोड़ रुपए खर्च के बीच के हिसाब-किताब को वह कैसे न्यायसंगत ठहराएगी। महाराष्ट्र सरकार के मंत्री उदय सामंत का कहना है कि इतने बड़े मैदान को समतल करने और वहां लोगों के लिए सुविधाएं जुटाने में पैसा खर्च हुआ है। सवाल ये है कि ऐसी कौन सी सुविधाएं वहां दी गईं, जो लोगों की जिंदगी बचाने के काम नहीं आ सकीं। खबरों के मुताबिक आयोजन स्थल पर छह सौ सहायक, डेढ़ सौ नर्स, और 75 एम्बुलेंस तैनात थीं। लोगों को लाने-ले जाने के लिए 1050 बसें भी थीं। जब इतना इंतजाम था तो फिर कैसे इतने सारे लोग बीमार पड़ गए। आयोजन पर इतना पैसा खर्च करने के बाद भी खुले मैदान में आयोजित किए गए इस सम्मान समारोह में जनता के लिए न तो पंडाल की व्यवस्था थी, न ही पीने के पानी का पर्याप्त इंतजाम। इसका परिणाम यह हुआ कि सुबह से वहां जमा लाखों लोगों को बिना छांव के कड़ी धूप में बैठना पड़ा। उन्हें न तो पीने का पानी मिला और न अन्य तरह की कोई सहायता। लिहाजा तेज धूप और डिहाइड्रेशन के चलते लोगों की तबीयत बिगड़ने लगी। श्री धर्माधिकारी के संगठन श्री सदस्य के अनुयायियों के लिए ऑडियोध्वीडियो सुविधाएं थीं और गर्मी में पीने का पानी नहीं था, इस हैरतअंगेज इंतजाम पर क्या कहा जाए। 13 लोगों की अकाल मौत पर जब विपक्षी दलों के लोग सवाल उठा रहे हैं, तो उन्हें नसीहत मिल रही है कि इस पर राजनीति न की जाए। लेकिन इस हादसे को दुर्भाग्यपूर्ण कहने या कुछ लाख के मुआवजे और हमदर्दी से मृतकों की जान वापस नहीं आ जाएगी। विपक्ष ही नहीं किसी भी दल से जुड़े नेताओं को ऐसे हादसों पर सवाल उठाने ही चाहिए, क्योंकि वे जनता की आवाज उठाने के लिए ही राजनीति में हैं, सरकार की गलतियों को बहाने से ढंकने के लिए नहीं।

देश की जनसंख्या में बड़ी भागीदारी रखने वाली स्त्रियां भी अभी मूल अधिकारों से वंचित

संजीव ठाकुर

देश की विशाल जनसंख्या मैं 50: की भागीदारी रखने वाली राष्ट्र की संवेदनशील माताएं ,बहने अपने मूल तथा सार्थक अधिकार की तलाश में अभी भी संविधान और सरकार की तरफआस लगाए इंतजार में बैठी हुई है। स्त्रियों का एक बड़ा तबका अभी भी अपनी स्वतंत्रता एवं मौलिक अधिकार से वंचित है। महिलाओं का विकास जितना विशाल आभासी रूप से दिखाया जा रहा है, वास्तविकता एवं धरातल पर स्थिति वैसी नहीं है। महिलाओं के भौतिक रूप से विकास के लिए एक जन अभियान और पृथक समेकित योजना की आवश्यकता देश में होगी तब जाकर महिलाओं के सशक्तिकरण की बात अपनी मूल भावना को प्राप्त कर पाएगा। भारतीय गणतंत्र में 15वीं राष्ट्रपति के रूप में महामहिम द्रौपदी मुर्मू जी के निर्वाचित होने के साथ-साथ महिला सशक्तिकरण और आदिवासी महिलाओं के लिए विकास के नए द्वार खुलने की संभावनाएं बलवती हो गई हैं। माननीय राष्ट्रपति को महिलाओं के संघर्ष, जिजीविषा और नैतिक मूल्यों की पोषक होने का पर्याय माना जा रहा है। उनके राष्ट्रपति चयनित होने के साथ-साथ आदिवासी वर्ग में और खासकर समग्र रूप से महिलाओं में नई ऊर्जा,शक्ति तथा उत्साह का संचार हुआ है। अब भारत देश के क्रमिक विकास में महिलाओं की भागीदारी में निश्चित तौर पर इजाफा होना चाहिए, आदिवासी महिला के सर्वोच्च राष्ट्रपति जैसे गरिमामई पद में चयन होना भारतीय लोकतंत्र के लिए शुभ संकेत है। वर्तमान में भारत की विशाल जनसंख्या में 45: से 50: भागीदारी महिलाओं की है । महिलाओं को अभी उनके हक का अधिकार एवं भागीदारी सुनिश्चित

नहीं हो पा रही है, ऐसे में रक्षा प्रतिरक्षा क्षेत्र में महिलाओं की भर्ती एक अच्छे संकेत के रूप में सामने आ रही हैस आज के समय में महिलाएं सभी क्षेत्रों में साहस, शौर्य और ऊर्जा का बेहतरीन प्रदर्शन करते आ रही हैं, महिलाएं पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर हर काम में अग्रणी भूमिका निभाने के लिए तैयार है। अब इसमें सशस्त्र बलों यानी डिफेंस सर्विस भी अछूता नहीं रहा सबसे बड़ी बात स्वतंत्र भारत की दूसरी रक्षा मंत्री निर्मला सीतारमण बनी थी इसके पूर्व श्रीमती इंदिरा गांधी प्रथम रक्षा मंत्री रही थीस अब कोई भी क्षेत्र ऐसा अछूता नहीं रहा जहां महिलाओं ने अपनी सशक्त दस्तक ई पहचान ना कराई हो, यह तो पूर्व से ही कहा गया है यदि आप एक पुरुष को शिक्षित करते हैं तो सिर्फएक पुरुष शिक्षक होता है किंतु यदि आप किसी महिला को सर्वांगीण शिक्षा देते हैं तो आने वाली संपूर्ण पीढ़ी को शिक्षित कर रहे हैं ।नारी शक्ति को अब ज्यादा दिनों तक देश की प्रगति विकास के योगदान से परे नहीं रखा जा सकता हैस परिवार की धुरी महिलाएं होती है परिवार से घर बनता है धर से समाज और समाज और संपूर्ण समाज से एक सशक्त राष्ट्र की बुनियाद रखी जाती है। इस तरह देश की बुनियाद ही स्त्री सशक्तिकरण हैस महिलाएं अच्छी तरह समझती हैं कि घर से लेकर देश की सीमा तक उन्हें व्यवहार कर देश के विकास और उसकी रक्षा में उन्हें किस तरह योगदान देना है। महिलाओं के बिना देश की प्रगति एवं विकास की कल्पना सर्वथा बेमानी हैस सशक्त माताएं सशक्त राष्ट्र का निर्माण करती हैंस और सीमा रक्षा बलों में महिलाओं की भागीदारी इसका एक बड़ा उदाहरण और प्रतिफल है इन उदाहरणों में से प्रथम लेफ्टिनेंट सुनीता अरोड़ा ,प्रथम एयर मार्शल पद्मावती बंदोपाध्याय ,कैप्टन मिताली मधुमिता ,भारत में आए अमेरिकी राष्ट्रपति को गार्ड ऑफ ऑनर देने वाली प्रथम विंग कमांडर पूजा ठाकुर ऐसे अधिकारियों के नाम है जिन्होंने रक्षा क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है एवं महिलाओं के प्रति सारी अवधारणाओं को गलत साबित कर एक सशक्त छवि को निरूपित किया हैस महिलाओं की शारीरिक बनावट तथा उनके शारीरिक विन्यास को देखते हुए प्रतिरक्षा सेवा में उनकी भूमिका बहुत कम रही है,हम मां दुर्गा भवानी की पूजा करते हैं और महिलाओं को कमजोर समझते हैं। किंतु उनकी शक्ति को उनकी भागीदारी को अंततः स्वीकार किया गया और 1992 में पहली बार भारतीय सेना में महिलाओं के लिए द्वार खोले गए एवं 25 महिला कैंडिडेट को ऑफिसर ट्रेनिंग एकेडमी गया में ट्रेनिंग दी गई इसके पूर्व सिर्फचिकित्सा सेवा में महिलाओं को नियुक्त किया जाता रहा है। सेना में इनकी भागीदारी होते हुए भी इन्हें पुरुषों के समान अधिकार नहीं दिए गए थे, महिलाएं रक्षा सेवा में विधिक, शिक्षा, इंजीनियरिंग, इंटेलिजेंस तथा ऐयर सिग्नल कोर में अपनी सेवाएं देती रही हैं ।महिलाओं को केवल शॉर्ट सर्विस कमिशन जाने की 14 साल तक के लिए कमीशन किया जाता रहा जबकि पूरे समय के लिए केवल पुरुषों को ही सेना में भर्ती किया जाता थास 2008 में उच्च न्यायालय के निर्देश पर महिलाओं को परमानेंट कमिशन पर रखा जाने लगा ।यह नारी सशक्तिकरण के लिए एक सशक्त मील का पत्थर साबित हुआस सेना की सैन्य प्रमुखों की समिति ने सशस्त्र बलों में महिलाओं की नियुक्ति पर स्थाई कमीशन की सिफारिश तो की किंतु इन्हें लड़ाकू सैनिकों की भूमिका देने से इनकार कर दिया उसके पीछे यह दलील दी गई की महिलाओं को लड़ाई के मैदान में भेजना उनकी व्यक्तिगत सुरक्षा के लिए ठीक नहीं एवं देश की संस्कृति के अनुसार महिलाओं को दुश्मन से लड़ने भेजना अथवा दुश्मन द्वारा पकड़े जाने पर उचित नहीं होगा। इसलिए महिलाओं को फ्रंटलाइन में नियुक्त किया जाना उचित नहीं होगा किंतु बाद में कुछ संशोधन किए जाने के पश्चात महिला अधिकारी कॉम्बैट जोन में पदस्थ की जाने लगी किंतु समाज का नजरिया महिलाओं के संदर्भ में बदलने लगा एवं 2016 में सशस्त्र बलों के कॉम्बैट क्षेत्र में महिलाओं को नियुक्ति देने की बात स्वीकार की गई इसमें दुनिया में कुछ देश ही हैं जिन्होंने महिलाओं को वार फ्रंट पर नियुक्त किया है। पूर्व के थल सेना प्रमुख बिपिन रावत ने भी कहा था कि हम महिला और पुरुष को समान रूप से देखना चाहते एवं इसके लिए जल थल और वायु सेना एक रूपरेखा तैयार कर रही है जिसके सुखद परिणाम भी होंगे,सशस्त्र बलों में महिलाओं की भागीदारी मजबूत रूप से सामने आएगी एवं पुरुषों की भांति देश की रक्षा तथा दुश्मनों से लोहा लेने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगीं।

नया अवतार लेता खालिस्तान का विचार

डॉ प्रियंका सौरभ

> कई ऐसे लोग भी शामिल हैं जो 1980 के दशक के बुरे दिनों को याद करते हैं और इस तरह खालिस्तान का समर्थन वहां मजबूत बना हुआ है ऑपरेशन स्टार और स्वर्ण मंदिर की बेअदबी पर गहरा गुस्सा सिखों की नई पीढ़ियों में कुछ के साथ प्रतिध्वनित होता रहता है।

हाल के दिनों में पंजाब में खालिस्तान अलगाववादी आंदोलन के विचार का प्रचार कर रहे सिख उग्रवादी जरनैल सिंह भिंडरावाले का अनुयायी अमृतपाल सिंह भागने में सफल रहा है। हिंसक खालिस्तानी आंदोलन गायब हो गया हैय हालाँकि, एक अलग सिख राष्ट्र यानी खालिस्तान का विचार अभी तक गायब नहीं हुआ है। खालिस्तान आंदोलन वर्तमान पंजाब (भारत और पाकिस्तान दोनों) में एक अलग, संप्रभु सिख राज्य के लिए लड़ाई है। ऑपरेशन ब्लू स्टार (1984) और ऑपरेशन ब्लैक थंडर (1986 और 1988) के बाद भारत में इस आंदोलन को कुचल दिया गया था, लेकिन यह सिख आबादी के वर्गों के बीच सहानुभूति और समर्थन पैदा करना जारी रखता है, खासकर कनाडा, ब्रिटेन, और ऑस्ट्रेलिया जैसे देशों में सिख डायस्पोरा में। हाल के दिनों में पंजाब में खालिस्तान अलगाववादी आंदोलन के विचार का प्रचार कर रहे सिख उग्रवादी जरनैल सिंह भिंडरावाले का अनुयायी अमृतपाल सिंह भागने में सफल रहा है। खालिस्तान आंदोलन की उत्पत्ति भारत की स्वतंत्रता और बाद में धार्मिक रेखाओं के साथ विभाजन के लिए खोजी गई है। पंजाब प्रांत, जो भारत और पाकिस्तान के बीच विभाजित था, ने सांप्रदायिक हिंसा देखी और लाखों शरणार्थियों को जन्म दिया। ऐतिहासिक सिख साम्राज्य की राजधानी, लाहौर, साथ ही गुरु नानक की जन्मस्थली ननकाना साहिब जैसे पवित्र सिख स्थल पाकिस्तान में चले गए। जबकि अधिकांश सिखों ने खुद को भारत में पाया, वे देश में एक छोटे से अल्पसंख्यक (जनसंख्या का 2 प्रतिशत) थे। पंजाबी भाषी राज्य के निर्माण के लिए पंजाबी सूबा आंदोलन के साथ अधिक स्वायत्तता के लिए राजनीतिक संघर्ष शुरू हुआ। राज्य पुनर्गठन आयोग की रिपोर्ट (1955) ने इस मांग को खारिज कर दिया, लेकिन 1966 में पंजाब राज्य को पुनर्गठित किया गया (हिंदी-हिंदू-बहुसंख्यक हिमाचल प्रदेश और हरियाणा, और पंजाबी-सिख-बहुसंख्यक पंजाब में विभाजित)। पंजाबी सूबा आंदोलन ने अकाली दल को प्रेरित किया, जिसने पंजाब राज्य के लिए स्वायत्तता (भारत से अलगाव नहीं) की मांग करते हुए आनंदपुर साहिब प्रस्ताव (1973) को समाप्त किया। यह मांग 1971 तक वैश्विक हो गई थी - जब न्यूयॉर्क टाइम्स में एक विज्ञापन ने खालिस्तान के जन्म की घोषणा की। 1980 के दशक तक जरनैल सिंह भिंडरावाले की अपील सरकार के लिए मुसीबत खड़ी करने लगी थी। वह और उनके अनुयायी (ज्यादातर सामाजिक सीढ़ी के निचले पायदान से) तेजी से हिंसक हो रहे थे। 1982 में, अकाली दल के नेतृत्व के समर्थन से, उन्होंने धर्म युद्ध मोर्चा नामक सविनय अवज्ञा आंदोलन शुरू किया और पुलिस के साथ प्रदर्शनों और झड़पों का निर्देश देते हुए स्वर्ण मंदिर के अंदर निवास किया। ऑपरेशन ब्लू स्टार (1984 में स्वर्ण मंदिर से उग्रवादियों को बाहर निकालने और भिंडरावाले को बेअसर करने के लिए भारतीय सेना द्वारा) और ऑपरेशन ब्लैक थंडर (1986 और 1988) के बाद भारत में खालिस्तान आंदोलन को कुचल दिया गया था। जबकि ऑपरेशन अपने उद्देश्य में स्पष्ट रूप से सफल रहे, उन्होंने दुनिया भर के सिख समुदाय को गंभीर रूप से घायल कर दिया (स्वर्ण मंदिर को अपवित्र करके) और खालिस्तान की मांग को भी तेज कर दिया। आबादी का बड़ा हिस्सा उग्रवादियों के खिलाफ हो गया और भारत आर्थिक उदारीकरण की ओर बढ़ गया। पंजाब लंबे समय से शांतिपूर्ण रहा है, लेकिन यह आंदोलन विदेशों में कुछ सिख समुदायों के बीच रहता है। डायस्पोरा मुख्य रूप से ऐसे लोगों से बना है जो भारत में नहीं रहना चाहते हैं। इन लोगों में कई ऐसे लोग भी शामिल हैं जो 1980 के दशक के बुरे दिनों को याद करते हैं और इस तरह खालिस्तान का समर्थन वहां मजबूत बना हुआ है। ऑपरेशन ब्लू स्टार और स्वर्ण मंदिर की बेअदबी पर गहरा गुस्सा सिखों की नई पीढ़ियों में कुछ के साथ प्रतिध्वनित होता रहता है। हालाँकि, भिंडरावाले को कई लोगों द्वारा शहीद के रूप में देखा जाता है और 1980 के दशक को काले समय के रूप में याद किया जाता है, यह खालिस्तान के कारण के लिए ठोस राजनीतिक समर्थन में प्रकट नहीं हुआ है। एक छोटा अल्पसंख्यक है जो अतीत से जुड़ा हुआ है, और वह छोटा अल्पसंख्यक लोकप्रिय समर्थन के कारण महत्वपूर्ण नहीं है, बल्कि इसलिए कि वे बाएं और दाएं दोनों से विभिन्न राजनीतिक दलों के साथ अपने राजनीतिक प्रभाव को बनाए रखने की कोशिश कर रहे हैं। राष्ट्रीय सुरक्षा और अखंडता के लिए खालिस्तान आंदोलन का पुनरुत्थान कश्मीर और पूर्वोत्तर विद्रोह के समान राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए खतरा है। इससे पंजाब का भविष्य अंधकारमय हो सकता है, एक खराब कानून और व्यवस्था की स्थिति निवेशकों को पंजाब में निवेश करने से रोक सकती है, इस प्रकार इसकी अर्थव्यवस्था और बिगड़ती जा रही है और सामाजिक और राजनीतिक क्षेत्रों में प्रभाव फैल रहा है। सिखों के लिए एक अलग राज्य बनाने का विचार पंजाब में दम तोड़ चुका हैय हालाँकि, इसने प्रवासी भारतीयों में एक बड़े दर्शकों का ध्यान आकर्षित किया है जो अब लंबे समय तक अन्य देशों में बस गए हैं और इस तरह भारत के साथ अपनी मातृभूमि के रूप में अपना संबंध खो चुके हैं। जो किसी भी अंतरराष्ट्रीय सीमा का उल्लंघन करता है, इस प्रकार पाकिस्तान और अन्य देशों में अलगाववादियों द्वारा इसका दुरुपयोग किया जाता है। द्विपक्षीय संबंधों को खालिस्तान मुद्दे ने पहले ही भारत-कनाडा संबंधों को नुकसान पहुंचाया है और अब भारत सरकार की आपत्ति के बावजूद इन देशों में रेफरेंडम 2020 के संचालन के कारण भारत-ब्रिटेन के बीच तनाव बढ़ रहा है। खालिस्तान को जड़ से उखाड़ने के लिए उठाए जाने वाले कदम हमें ठोस रखने होंगे और नई चुनौतियों को पहचानना होगा। पारंपरिक हितधारकों और नए सोशल मीडिया रिक्रूट द्वारा पेश की गई चुनौती को पहचानना आवश्यक है ।विदेशी सरकारों के साथ सहयोग भारतीय सुरक्षा और खुफिया बलों को खालिस्तानी ताकतों द्वारा की जाने वाली भारत विरोधी गतिविधियों पर नजर रखने और उनके धन स्रोतों को प्रतिबंधित करने के लिए विदेशी सरकारों के साथ सहयोग करने की आवश्यकता है। सुरक्षा प्रयासों में वृद्धि के साथ भारत सरकार को करतारपुर कॉरिडोर के खुलने के बाद से खालिस्तानी सोशल मीडिया गतिविधि में वृद्धि का मुकाबला करने के लिए सुरक्षा प्रयासों को बढ़ाना चाहिए ।आर्थिक और सामाजिक विकास को बढ़ावा देने के लिए राज्य को फिर से विकास के रास्ते पर लाने के लिए घरेलू स्तर पर पंजाब और केंद्र सरकार और सुरक्षा बलों को राज्य की आर्थिक स्थिति में सुधार के लिए सहयोग करना चाहिए ।सिख प्रवासी के साथ जुड़ाव, भारतीय एजेंसियों, जैसे कि उन देशों में स्थापित मिशन, को खालिस्तानी संगठनों द्वारा चलाए जा रहे गलत सूचना अभियान से निपटने के लिए सिख प्रवासी के साथ कूटनीतिक रूप से जुड़ना चाहिए। इस तरह के जुड़ाव भारतीय राज्य और सिख डायस्पोरा के बीच सकारात्मक संबंध की सुविधा प्रदान करेंगे। भारतीय सुरक्षा बलों को पंजाब में हथियार और ड्रग्स पहुंचाने के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले ड्रोन में वृद्धि से निपटने के लिए अपनी तैयारी बढ़ाने की जरूरत है। पश्चिमी देशों के साथ-साथ भारत को भी पाकिस्तान के साथ कूटनीति का प्रयोग करने से पीछे नहीं हटना चाहिए और पाकिस्तान में छिपे आतंकवादियों को प्रत्यर्पित करने का काम करना चाहिए। हिंसक खालिस्तानी आंदोलन गायब हो गया हैय हालाँकि, एक अलग सिख राष्ट्र यानी खालिस्तान का विचार अभी तक गायब नहीं हुआ है।

स्वस्थ और स्वच्छ जीवन का आधार बनेंगे अमृत सरोवर : केशव

ग्रामीण सरोवरो पर सेल्फी विद अमृत सरोवर कार्यक्रम का हुआ आयोजन

संवाददाता

लखनऊ। उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने कहा कि अमृत सरोवर लोगों के स्वस्थ और स्वच्छ जीवन का आधार बनेंगे। वाटर रिचार्जिंग के अच्छे स्रोत बनने के साथ ही ग्रामीणो के जीवन में खुशहाली लाने का माध्यम बनेंगे। गांवो में पानी की कमी नहीं होगी। वृक्षारोपण से हरियाली रहेगी, शुद्ध प्राणवायु मिलेगी, इनकी देखभाल से तालाबो पर अवैध अतिक्रमण नहीं होगा, ग्रामीणों व ग्राम सभा कीघ् यह सार्वजनिक सम्पत्ति, एक ग्रामीण तीर्थ स्थल, ग्रामीण पर्यटन केन्द्र बनेगी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के विजन और जन आकांक्षाओं के अनुरूप उत्तर प्रदेश में लक्ष्य से दोगुना अमृत सरोवरो का निर्माण किया गया है और उत्तर प्रदेश देश में प्रथम स्थान पर है। उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने लखनऊ के गोसाईगंज ब्लॉक के काजीखेड़ा ग्राम पंचायत में अमृत सरोवर पर आयोजित सेल्फी विद अमृत सरोवर महा जन -अभियान का शुभारंभ करते हुए उक्त उद्गार व्यक्त किए।उत्तर प्रदेश में सभी जिलों में ग्रामीण अमृत सरोवरो पर सेल्फी विद अमृत सरोवर कार्यक्रम का आयोजन किया गया ।उप मुख्यमंत्री केशव

प्रसाद मौर्य ने जल और पर्यावरण संरक्षण के प्रति लोगों को सचेत करते हुए प्रेरक संदेश दिये और विश्व पृथ्वी दिवस पर ग्रामीणों को जल संरक्षण और पर्यावरण संरक्षण के प्रति संकल्प दिलाया। उन्होंने जल संरक्षण के साथ पर्यावरण संरक्षण और स्वच्छता पर विशेष जोर दिया तथा विश्व पृथ्वी दिवस पर ग्रामीण अमृत सरोवरो पर आयोजित सेल्फी विद अमृत सरोवर कार्यक्रम के माध्यम से स्वच्छ भारत स्वस्थ भारत के संदेश को जन जन तक पहुंचाने की अपील की। सेल्फी विद अमृत सरोवर को सोशल मीडिया में जमकर पोस्ट करते हुए टैग किया गया ।उप मुख्यमंत्री ने कहा कि अमृत सरोवरो को पर्यटन केन्द्र के रूप में विकसित करें। अमृत सरोवरो के पास बृहद स्तर पर वृक्षारोपण किया जाय ।अमृत सरोवरो के रखरखाव की भी उचित व्यवस्था की जाय ।कहा कि अमृत सरोवरो पर बने ओपन जिम और खेल मैदानों से ग्रामीण खेल प्रतिभाओं को निखारने का अच्छा अवसर मिलेगा ।अमृत सरोवर गांवों के तीर्थ स्थल व पर्यटन केन्द्र बनेगे ।उप मुख्यमंत्री ने कहा कि 24 अप्रैल 22 को देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अमृत सरोवर की शुरुआत की थी, जिसमें प्रदेश हर जिले में 75 अमृत सरोवर बनाने का आह्वान किया गया था। उत्तर प्रदेश में लक्ष्य से लगभग 2 गुना अमृत सरोवर बनाए गए हैं और एक साल बाद इन सरोवरों पर सेल्फी विद अमृत सरोवर का प्रोग्राम आयोजित किया जा रहा है। उन्होंने कहा की 15 अगस्त 2022 को स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर 8288 अमृत सरोवरो पर झंडारोहण के साथ राष्ट्रप्रेम की भावना से ओतप्रोत प्रोग्राम कराए गए। उन्होंने कहा सेल्फी विद अमृत सरोवर कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य इन अमृत सरोवरो को सुरक्षित व संरक्षित रखना है तथा ग्रामीणों को इनके महत्व और महत्ता के बारे में भी बताना भी है। हमारे देश में इस धरती को माता के नाम से पुकारा जाता है और इसको बचाना तथा प्रकृति को बचाना हम सब लोगों की सामूहिक जिम्मेदारी है। पेड़ पौधे नहीं होंगे तो जल नहीं होगा ,बारिश नहीं होगी ऑक्सीजन की कमी होगी। पर्यावरण संरक्षण के लिए वृक्षारोपण किया जाना बहुत जरूरी है और उससे ज्यादा जरूरी उन पौधों की सुरक्षा किया जाना है ।तालाबों और छोटी-छोटी नदियों में अतिक्रमण हो जाने से गांव में पानी की निकासी की भी समस्या पैदा हुई है ,इस समस्या का भी निदान होगा। हम सबकी सामाजिक जिम्मेदारी है कि पूरे गांव में महीने में एक दिन स्वच्छता अभियान ग्रामीण जन मिलकर की चलाएं और गांव की परिसंपत्तियों को सुरक्षित रखने के लिए हम सब लोग मिलकर काम करें। सरोवरो में हमेशा पानी भरा रहे और यहां पर हमेशा हरियाली बनी रहे ,यह हमारी जागरूकता पर निर्भर करता है इसलिए यहां पर अधिक से अधिक सेल्फी लेकर ट्वीट किया जाए। वन और जल नहीं होगे, तो जीवन का अस्तित्व नहीं बचेगा। अक्षय तृतीया के पावन अवसर पर आयोजित इसह कार्यक्रम के परिणाम निश्चित रूप से अक्षय होंगे ।आज हम विश्व पृथ्वी दिवस के अवसर पर इस पृथ्वी, जिसमें हमें यह जीवन मिला उसके पर्यावरण की सुरक्षा का संकल्प लेते हैं। हम शपथ लेते हैं कि हम इस अमृत सरोवर को स्वच्छ रखेंगे एवं वर्षा जल का संचयन भी करेंगे तथा कोई भी ऐसा कार्य नहीं करेंगे, जिससे हमारी वसुधा एवं पर्यावरण पर कोई प्रतिकूल असर पड़े। मैं अपने परिवार के साथ एक वृक्ष लगाने तथा इसकी सुरक्षा करने की प्रतिज्ञा करता हूँ। इसके साथ ही मैं अपने आस-पास के सभी लोगों से इस पृथ्वी एवं पर्यावरण की सुरक्षा के लिए वृक्ष लगाने एवं उसकी देखभाल के लिए प्रोत्साहित करूंगा।

पृथ्वी दिवस पर लिया पर्यावरण और जल संरक्षण का संकल्प

संवाददाता

लखनऊ। अंतर्राष्ट्रीय पृथ्वी दिवस के अवसर पर जनविकास महासभा द्वारा एक बैठक का आयोजन सेक्टर 7 जानकीपुरम विस्तार में किया गया जिसमें पर्यावरण एवं जल संरक्षण के संकल्प के साथ विद्यार्थी प्रतिभा उत्सव के माध्यम से लगभग सौ कार्यक्रम करा कर विद्यार्थियों को पर्यावरण के प्रति जागरूक करने के लिए कार्यक्रम की रूपरेखा पर चर्चा हुई। बैठक एसके बाजपेई के संरक्षण में डॉ. अगम दयाल अध्यक्षता में सरयू प्रसाद पांडेय फाउंडेशन के सहयोग से आयोजित की गई बैठक में जनविकास महासभा के संरक्षक एवं मार्गदर्शक डॉ. एस. सी. श्रीवास्तव, जूही सोनाली श्वेतांक शर्मा एडवोकेट प्रदेश मंत्री अजय कुमार यादव, प्रदेश संगठन मंत्री दिव्या शुक्ला, लखनऊ जन विकास महासभा के अध्यक्ष एसके बाजपेई जनविकास सनातन प्रकोष्ठ के प्रदेश प्रभारी डॉ आशीष गुप्ता, शोभा फाउंडेशन के अध्यक्ष प्रदीप जयसवाल एवं वरिष्ठ सदस्य अंकेश सिंह हिंदू महासभा के प्रदेश संयोजक डॉक्टर मुकेश अग्रवाल, आर्थिक आजादी अभियान के संयोजक गोपी किशन, सृजन फ़ाउंडेशन के अध्यक्ष डॉ अमित सिकरेवाल, वरिष्ठ समाजसेवी विकास पांडे, अनुपम मिश्रा, अमित श्रीवास्तव, अभिषेक जयसवाल, पंकज श्रीवास्तव, शिव कुमार पाण्डेय, आर. के. पांडेय, अजय कृष्ण पांडे एडवोकेट, भास्कर भूषण मिश्रा, अशोक बाजपेई, संतोष उपाध्याय सहित कई गणमान्य व्यक्तियों ने अपने विचार रखे। इस अवसर पर जनविकास महासभा के अध्यक्ष पंकज तिवारी ने कहा कि आज के विद्यार्थी कल के राष्ट्र निर्माता होंगे। अत: आज पृथ्वी दिवस के उपलक्ष में हम सब को यह संकल्प लेना है कि हम इन विद्यार्थियों को उनकी जिम्मेदारी के प्रति जागरूक करने के लिए अपनी जिम्मेदारी का निर्वहन करें इसके लिए जन विकास महासभा शोभा फाउंडेशन के साथ मिलकर 30 नवंबर तक 100 से अधिक कार्यक्रमों का आयोजन करेगी जिसके अंतर्गत पर्यावरण एवं जल संरक्षण के संकल्प के साथ साथ बच्चों की अंदर छिपी प्रतिभा को निखारने का प्रयास भी किया जाएगा साथ ही साथ उनके माता-पिता को बच्चों को तनाव मुक्त शिक्षा के लिए सहयोग प्रदान करने के लिए भी प्रेरित करने का कार्य होगा। विद्यार्थियों से जुड़े इस कार्यक्रम की सराहना करते हुए सरयू प्रसाद पांडेय फाउंडेशन की अध्यक्षा श्वेता तिवारी ने अपनी शुभकामनाएं प्रेषित की।

संक्षिप्त समाचार

इंदिरा नहर में मिला प्रेमी-प्रेमिका का शव, जांच में जुटी पुलिस

संवाददाता, लखनऊ। राजधानी लखनऊ में शनिवार दोपहर इंदिरा नहर में प्रेमी-प्रेमिका का शव मिला। सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को गोताखोरों की मदद से बाहर निकलवाया। पुलिस आस-पास के लोगों से शवों की शिनाख्त करवा रही है। पुलिस के मुताबिक, शव देखकर लग रहा है कि दोनों ने एक दूसरे को गले लगाकर पानी में कूदकर जान दी है। घटना बीबीडी थाना क्षेत्र का है। विभूतिखंड एसीपी अभय प्रताप मल्ल ने बताया कि नहर के रेगुलेटर में एक युवक-युवती और कुछ जानवरों के शव फंसे मिलने की सूचना मिली। पुलिस टीम ने मौके पर पहुंचकर गोताखोरों की मदद से शवों को बाहर निकलवाया। युवक और युवती के शिनाख्त के प्रयास किए जा रहे हैं। अभी तक की जांच से प्रतीत हो रहा है कि दोनों शव तैरकर आएं है। जो नहर के गेट में फंस गए। दोनों ने एक दूसरे को गले लगाकर सुसाइड किया होगा। शवों की शिनाख्त और पोस्टमॉर्टम के आधार पर आगे की कार्रवाई की जाएगी।

अक्षय तृतीया पर हुये धार्मिक आयोजन, 48 दीपों के साथ हुआ भक्तामर पाठ

संवाददाता, लखनऊ। अक्षय तृतीया पर आशियाना जैन मन्दिर में श्रद्धालुओं ने सब प्राणियों के कल्याण की भावना से प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव का जिनबिम्ब अभिषेक और शान्तिधारा की। सामूहिक शान्तिधारा श्री दिगम्बर जैन सेवासमित के अध्यक्ष चन्द्र प्रकाश द्वारा सम्पन्न करायी गयी। भक्तामर स्त्रोत पाठ के पुर्ण्याजक अल्पना जैन एवं डॉ. अभय कुमार जैन रहे। मंत्रोच्चार के बीच प्रत्येक काव्य पद के साथ 48 दीप भक्तों द्वारा समर्पित किये गये। इस अवसर पर उ.प्र. जैन विद्या शोध संस्थान के उपाध्यक्ष प्रो. अभय कुमार जैन ने बताया के भक्तामर का पाठ भक्तों को अमरत्व प्रदान करता है जिससे संसार में जन्म-मरण का विनाश होता है। कर्मों का क्षय कर आत्मा अक्षय पद अर्थात मोक्ष प्राप्त कर लेती है। भक्तामर के नियमित पाठ से जीवन में आयी आपदाओं और कष्टों का नाश होता है और सुख शान्ति में वृद्धि होती है। इस अवसर पर जैन समाज आशियाना की ओर से अहिंसा चौक पर गन्ने का रस वितरित किया गया। आयोजनों में सेवासमित के अध्यक्ष चन्द्र प्रकाश जैन, उपाध्यक्ष अनुज जैन, मंत्री अजय जैन, कोषाध्यक्ष शरद जैन, पूर्व अध्यक्ष नरेश जैन, विपिंन जैन ,बृजेश जैन, संरक्षक अभय शाह, संजीव जैन ,जैन संस्थान के उपाध्यक्ष प्रो. अभय कुमार जैन, जैन महिला मण्डल के पदाधिकारी अल्पना जैन, डॉ. सविता जैन, मनीषा जैन, किरन जैन, सरिता जैन,राखी जैन, अभिलाषा जैन आदि के साथ बड़ी संख्या में जैन भक्त उपस्थित रहे।

धूमधाम से मनाई भगवान परशुराम जयंती, ब्राह्मण समाज के लोगों को किया सम्मानित

संवाददाता

लखनऊ। राजधानी लखनऊ की पेपर मिल कॉलोनी स्थित मेट्रो सिटी में भगवान परशुराम का अवतरण दिवस धूम धाम से मनाया गया। कार्यक्रम का आयोजन अखिल भारत वर्षीय ब्राह्मण महासभा ने किया। परशुराम भगवान विष्णु के छठें अवतार थे। उनका जीवन तप, त्याग और परमार्थ था। कार्यक्रम की शुरुआत समाज सेवी अधिवक्ता डॉ मधु सूदन दीक्षित, महामंत्री पूर्वी भारत विदुषी कनुप्रिया और अन्य मेहमानों ने दीप प्रज्ज्वलन से की। इस मौके पर मौजूद सभी लोगों ने विश्वकल्याण और विशेषकर ब्राह्मण कल्याण के लिए पूजन और विधि विधान से हवन किया। साथ ही सभी ने ब्रह्म शिरोमणि परशुराम की मूर्ति पर माल्यार्पण कर श्रद्धा सुमन अर्पित किए। कार्यक्रम में अधिवक्ता उच्च न्यायलय लखनऊ आकांक्षा शुक्ला, उत्तराखंड लोक सेवा आयोग की सहायक अभियोजन अधिकारी परीक्षा में टॉप करने वाली अपर्णा अवस्थी, यूपी ब्रह्म चेतना संवाद के अध्यक्ष पंडित विश्व दीप अवस्थी का माला पहनाकर और परशुराम की मूर्ति देकर सम्मान किया गया। इस दौरान पंडित मधुसूदन दीक्षित, विनय मिश्रा और पंडित अनिल दिवेदी ने परशुराम जी के जीवन दर्शन की आज के ब्रह्म समाज के उत्थान में भूमिका पर अपने विचार रखे। कार्यक्रम का संचालन अवध प्रांत के अध्यक्ष पंडित संजय अवस्थी ने किया। अंत में महिला प्रकोष्ठ की अध्यक्ष रागिनी अवस्थी ने प्रसाद वितरण कर ब्रह्म समाज के लोगों को धन्यवाद दिया।

मनुष्यता विहीन मानव जीवन निरर्थक : चिदंबरानंद

संवाददाता

लखनऊ। जानकीपुरम विस्तार में चल रही श्रीमद्भागवत कथा के दूसरे दिन धुंधकारी की कथा सुनाते हुए कथा-व्यास स्वामी चिदंबरानंद सरस्वती महाराज ने कहा कि श्रीमद्भागवत एक धर्म ग्रंथ के साथ ही नीति और इतिहास का दर्पण भी है। कथा के माध्यम से रचनाकार ने जीवनमूल्यों को दिशा देने का अद्भुत प्रयोग किया है। उन्होंने कहा कि गोस्वामी तुलसीदास ने बडे भाग मानुष तन पावा कहकर मानव जीवन की श्रेष्ठता का प्रतिपादन किया है किंतु हमारे शास्त्रों ने इसे और विस्तार दिया है। शास्त्रों के अनुसार मानव जीवन श्रेष्ठ और सुर-दुर्लभ तो है परन्तु यदि मानव में मानवता नहीं है तो वह निरर्थक और निकृष्ट है। स्वामी जी ने कहा कि धुंधकारी वास्तव में निकृष्ट मनोवृत्ति का प्रतीक है। सभी निकृष्ट कार्यों,अधो चिंतन से जुड़ा व्यक्ति ही धुंधकारी है। ऐसा व्यक्ति अपने साथ औरों के लिए कष्टों का कारक बनता है। श्रीमद्भागवत इन्हीं धुंधकारी -प्रवृतियों का निर्मूलन कर मानव मात्र के लिए मोक्ष अर्थात कल्याण का मार्ग प्रशस्त करती है। उन्होंने कहा कि जीवन में चिंता करने से समस्या का समाधान नहीं होता है तो चिंतन श्रेयस्कर है। चिंतन हर समस्या के समाधान का रास्ता खोलता है ।इससे पूर्व मंगलाचरण के उपरांत उपस्थित श्रोताओं को अक्षय तृतीया की बधाई देते हुए महामंडलेश्वर ने कहा कि आज भगवान परशुराम का अवतरण हुआ था जिन्होंने अनीति, अनाचार और आसुरी शक्तियों से पृथ्वी को अभय प्रदान किया था। दुर्भाग्य से जन जन के लिए पूज्य भगवान परशुराम जी को एक जाति विशेष से जोड़ दिया गया है। परमात्मा या उनका प्रतिरूप कभी एक समूह का न होकर सर्व समाज के लिए कल्याण करता है ।समागम के दौरान सुमधुर भक्ति गीतों व भजनों ने श्रद्धालुओं को भक्ति भाव से सराबोर कर दिया।

कानपुर-लखनऊ और जालौन में बारिश

5 दिन ऐसा ही रहेगा मौसम

संवाददाता

लखनऊ। यूपी में एक बार फिर बेमौसम बारिश शुरू हो गई है। कानपुर-जालौन में सुबह धूप खिली। दोपहर बाद अचानक मौसम बदल गया और बारिश शुरू हो गई। लखनऊ में दोपहर में अंधेरा छा गया। तेज हवाओं के साथ बारिश हुई। मथुरा-अलीगढ़ में भी सुबह हल्की बूंदाबांदी हुई। मौसम विभाग ने लखनऊ, कानपुर देहात, कानपुर नगर, उन्नाव के लिए बारिश का रेड अलर्ट जबकि प्रयागराज समेत 15 जिलों में यलो अलर्ट जारी किया है। मौसम विभाग के मुताबिक,

अगले 5 दिनों तक प्रदेश का मौसम ऐसा ही उतार-चढ़ाव भरा रहेगा। मौसम विभाग के मुताबिक, जिन जिलों में यलो अलर्ट जारी किया है। इनमें बांदा, चित्रकूट, कौशांबी, प्रयागराज, फतेहपुर, प्रतापगढ़, सोनभद्र, मिर्जापुर, अलीगढ़, मथुरा, हाथरस, कासगंज, एटा, आगरा और रायबरेली हैं। इस दौरान आंधी और बिजली गिरने की भी आशंका है। उधर, गुरुवार को 24 घंटे में 0.5 मिलीमीटर बारिश प्रदेश में रिकॉर्ड की गई। कानपुर में रविवार दोपहर 12 बजे अचानक आसमान में घने बादल छा गए। फिर धूल भरी आंधी चली। इसके बाद बारिश शुरू हो गई। बिजली कट गई है। शुक्रवार की तुलना में शनिवार रात को कानपुर का तापमान में 5.2 डिग्री की गिरावट हुई। यहां 24.8 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। रविवार को भी मौसम में बदलाव के बाद लोगों को गर्मी से राहत मिली। मौसम विभाग के मुताबिक, अगले 72 घंटों तक कानपुर और आसपास के जिलों में आंधी और बारिश के आसार हैं।

पुस्तक का हुआ विमोचन

संवाददाता, लखनऊ। क्षेत्रीय विज्ञान केंद्र के सभागार में. अलीगंज, लखनऊ. पुस्तक प्राचीन भारतीय अवधारणाओं और हमारे ग्रंथों में पाई जाने वाली धारणाओं पर आधारित एक विज्ञान कथा है, जिसे ज्यादातर दार्शनिक या धार्मिक झुकाव से संबंधित माना जाता है, लेकिन यह केवल उस तक सीमित नहीं लगता है. बल्कि इस तरह के कई ग्रंथों जैसे कि रामायण, महाभारत, गीता और कई अन्य ग्रंथों में निहित है. धार्मिक अधिकारों की पूजा या प्रदर्शन के दौरान पढ़ें, सुनाए गए या पुनः प्रस्तुत किए गए. हैरानी की बात है कि उनमें ऐसे विवरण शामिल हैं जिनकी अगर सही व्याख्या की जाए, तो वैज्ञानिक विवरणों के आश्चर्यजनक सुराग सामने लाएं. सवाल यह है कि प्रत्येक धारणा और अवधारणाएं जो हमारे धार्मिक-दार्शनिक ग्रंथों में हैं. वे सभी एक और केवल से आगे आए हैं। संस्थापक मंच, और वह है. (द वर्डिक्ट ऑफद वेदाज़) पुस्तक को एक रोमांचक कहानी के साथ आगे बढ़ाया जाता है जो निश्चित रूप से किसी भी पाठक को मंत्रमुग्ध कर देगा. विशेष रूप से युवा रक्त, जो कभी भी इस तरह की अनिश्चित अवधारणाओं को पढ़ने के लिए इच्छुक नहीं हो सकता है अगर किसी विचार से बिल्कुल मोहित न हो. खैर, यह न केवल युवाओं के लिए केंद्रित है, बल्कि सभी आयु समूहों के व्यक्ति यदि कोई इसे पढ़ने के लिए एक बार भी कुछ पृष्ठों के लिए शुरू करता है, तो पुस्तक के पहले से इस 2 खंड तक शुरू होता है वेद-एएस का विषय. वह कहानी के साथ इतना मुग्ध हो सकता है कि जब तक वे नहीं पहुंचते, तब तक वे अपने दिमाग को कथा की निरंतरता के अनुक्रम से दूर ले जाने से अक्षम कर सकते हैं।

बीकेटी में थोक विक्रेता की दुकान का ताला तोड़कर चोरी

संवाददाता

लखनऊ। राजधानी के बीकेटी थाना क्षेत्र में चोरों का आतंक हैं। बीकेटी थाना पुलिस चोरों पर अंकुश लगाने में नाकाम साबित हो रही है। बीती रात को भी क्षेत्र में चोरों ने सिगरेट, पान मसाला की थोक की दुकान में ताला तोड़कर नकदी, सिगरेट व पान मसाला भारी मात्रा में चोरी कर ले गए। सूचना पाकर मौके पर पहुंची बीकेटी पुलिस ने पीड़ित के तहरीर लेकर जांच शुरू कर दी है। बख्शी का तालाब थाना क्षेत्र में अस्ती रोड़ पर मिलन मैरिज लान के सामने सिगरेट, पान मसाला की थोक दुकान में चोरी हो गई। दिनेश चौरसिया निवासी श्याम बिहार कालोनी, अस्ती रोड़,भीखा पुरवा बीकेटी की अस्ती रोड़ पर मिलन मैरिज लान के सामने बीड़ी, सिगरेट, पान मसाला सहित अन्य सामग्री की थोक में समान बेचने की दुकान है। ईद के त्यौहार के चलते दिनेश भारी मात्रा में बीड़ी, सिगरेट, पान मसाला और अन्य सामग्री दुकान में भर रखा था। चोरों ने दुकान में लगे ताले तोड़ कर दुकान के अंदर कैश काउंटर में रखी 20 हजार की नकदी और भारी मात्रा में पान मसाला और सिगरेट

के गत्ते चुरा ले गए। दुकानदार के अनुसार लगभग एक लाख रुपए की कीमत का माल था। दिनेश ने बताया कि मिलन मैरिज लान में सीसीटीवी कैमरे लगे हुए हैं। जिसके चलते चोरों ने फुटेज में न दिखाई दें। लिहाजा शातिराना तरीके से दुकान के पीछे खाली पड़े मैदान की बाउंड्री वॉल में सेंध लगा करके दुकान का ताला तोड़ा और उसी रास्ते से माल उड़ा ले गए। दुकान मालिक ने इसकी सूचना बीकेटी थाना पुलिस को दी। मौके पर पहुंची पुलिस ने जांच शुरू कर दी है। पुलिस तहरीर के आधार पर कार्रवाई करने को कहा। गौरतलब हो कि दो दिन पहले ही बीकेटी क्षेत्र से चोरों ने बैग काटकर नकदी और जेवरात चोरी कर ले गए। परिजनों ने एक चोर को पकड़ कर दिया गया था। अभी तक खुलासा नहीं हुआ।

क्या माफिया अतीक और अशरफ को दी जाएगी श्रद्धांजलि

विधानसभा में कार्य मंत्रणा समिति करेगी विचार

संवाददाता, लखनऊ। उत्तर प्रदेश विधानसभा के अध्यक्ष सतीश महाना ने कहा है कि गैंगस्टर से नेता बने पूर्व सांसद और पूर्व विधायक अतीक अहमद और उसके भाई पूर्व विधायक अशरफ को विधानसभा के अगले सत्र में श्रद्धांजलि देने के विषय पर कार्य मंत्रणा समिति विचार करेगी। पारंपरिक रूप से सदन के प्रत्येक सत्र की शुरुआत के बाद दिवंगत सदस्यों को श्रद्धांजलि दी जाती है। हालांकि, पूर्व विधायक और पूर्व सांसद अतीक अहमद को अपहरण के एक मामले में दोषी ठहराया गया था। राज्य में विधानमंडल के दोनों सत्रों की मानसून सत्र की शुरुआत होगी, लेकिन अभी इसके लिए कोई तारीख तय नहीं की गई है। अतीक अहमद इलाहाबाद पश्चिम विधानसभा क्षेत्र से 5 बार विधायक और 2004 से 2009 तक एक बार फूलपुर से लोकसभा सदस्य चुना गया। वह इलाहाबाद पश्चिम से 3 बार निर्दलीय विधायक था। सन् 1996 में वह सपा के टिकट पर चुना गया, जबकि 2002 में उसने अपना दल के टिकट पर सीट बरकरार रखी। बहुजन समाज पार्टी के तत्कालीन विधायक राजू पाल की हत्या के बाद अतीक के भाई खालिद अजीम उर्फ अशरफ 2005 में सपा के टिकट पर उसी सीट से विधायक बना था। प्रयागराज में 15 अप्रैल की रात को जब पुलिसकर्मी अतीक को जांच के लिए एक मेडिकल कॉलेज ले जा रहे थे, तब पत्रकार बनकर आए 3 लोगों ने अतीक (60) और उसके भाई अशरफकी गोली मारकर हत्या कर दी थी। यह पूछे जाने पर कि क्या अतीक और उसके भाई अशरफको श्रद्धांजलि दी जाएगी, महाना ने कहा कि मामले का फैसला सदन की कार्य मंत्रणा समिति करेगी। समिति की अध्यक्षता विधानसभा अध्यक्ष करते हैं। संवैधानिक विषयों के विशेषज्ञ और लोकसभा के पूर्व महासचिव सुभाष सी कश्यप ने कहा कि इस मामले पर अध्यक्ष को ही फैसला करना है। उत्तर प्रदेश विधान सभा के सूत्रों ने कहा कि ऐसा दृष्टांत उनके सामने कभी नहीं आया। अतीक अहमद और अशरफका कोई स्पष्ट उल्लेख किए बिना उत्तर प्रदेश के एक पूर्व वरिष्ठ विधायक ने नाम न छापने की शर्त पर कहा, एक श्रद्धांजलि संदर्भ, जो सदन के दिवंगत सदस्यों के लिए किया जाता है, संसदीय परंपरा का हिस्सा है। न तो संविधान में और न ही किसी कानून में इसका उल्लेख है। यह विशुद्ध रूप से संसदीय परंपराओं के हिस्से के रूप में किया जाता है। यह पूछे जाने पर कि क्या ऐसा कोई प्रावधान है कि सदन (संसद या विधान सभा) कानून की अदालत द्वारा दोषी ठहराए गए पूर्व सदस्य के निधन का संदर्भ देता है, लोकसभा की पूर्व महासचिव स्नेहलता श्रीवास्तव ने कहा कि, पूर्व सांसदों और सांसदों में किसी की मृत्यु के बारे में कोई सूचना मिलती है, तो सदन में, सत्र में या अगले सत्र में, एक शोक सन्दर्भ दिया जाता है। उन्होंने कहा, मेरे सामने ऐसा कोई मामला नहीं आया है। (कोई सांसद या पूर्व सांसद जिसे सजा सुनाई गई हो और उसे श्रद्धांजलि दी गई हो)। 28 मार्च को प्रयागराज में एक सांसद-विधायक अदालत ने अतीक अहमद और दो अन्य को 2006 के उमेश पाल अपहरण मामले में दोषी ठहराया और उन्हें आजीवन कारावास की सजा सुनाई।

शाहजहांपुर सपा उम्मीदवार बीजेपी में शामिल,डिप्टी सीएम बृजेश पाठक ने दिलाई अर्चना वर्मा को सदस्यता

संवाददाता

लखनऊ। शाहजहांपुर महापौर के चुनाव में सपा की उम्मीदवार अर्चना वर्मा ने लखनऊ में भाजपा कार्यालय में बीजेपी का दामन थाम लिया। रविवार को दूसरे चरण के नामांकन के आखिरी दिन अर्चना वर्मा ने डिप्टी सीएम ब्रजेश पाठक और कैबिनेट मंत्री सुरेश खन्ना की मौजूदगी में पार्टी की सदस्यता ली है। अर्चना वर्मा सपा सरकार में मंत्री रहे राममूर्ति वर्मा की बहू हैं। सपा सरकार में शाहजहांपुर में पत्रकार को जला देने के मामले में मंत्री राममूर्ति वर्मा पर गंभीर आरोप भी लगे थे। डिप्टी सीएम ब्रजेश पाठक ने अर्चना वर्मा को बीजेपी की सदस्यता दिलाई। कहा, मैं कह सकता हूं समाज सेवा के क्षेत्र में अग्रणी भूमिका अर्चना वर्मा के परिवार ने निभाई है। अर्चना वर्मा के जो ससुर थे पूर्व मंत्री राममूर्ति वर्मा दो बार सांसद रहे। चार बार के विधायक रहे दो बार मंत्री रहे हैं। सबसे अहम बात ये है कि अभी जो हाल ही में चुनाव होने वाले हैं। इसमें शाहजहांपुर में सपा ने अर्चना को अपना उम्मीदवार बनाया था। लेकिन, वो पार्टी की रीति नीति से बहुत दुखी थीं। खुद को उनसे जोड़ नहीं पा रहीं थीं। उनकी पार्टी में

माताओं-बहनों के साथ हो रहा था। उससे अर्चना को बहुत पीड़ा हो रही थी। वो इसे लंबे समय से महसूस कर रहीं थीं। इस वजह से उन्होंने भाजपा को चुना है। सुरेश खन्ना ने कहा, अर्चना वर्मा को इसलिए भी बधाई देते हैं कि उन्होंने साहस करके सपा से दूर होने का जो फैसला किया। वह कदम उठाया इसके लिए बहुत-बहुत बधाई। अर्चना वर्मा के जो ससुर रहे हैं लंबे समय से राजनीतिक परिवार और राजनीति की। जिला पंचायत अध्यक्ष और अन्य सभी सपा के शाहजहांपुर के उम्मीदवारों को लगातार बीजेपी तोड़ रही है। इस सवाल पर सुरेश खन्ना ने कहा, यह उनकी पीड़ा है, वह उनकी नीतियों से आहत होकर पार्टी छोड़ रहे हैं। भाजपा में आ रहे हैं। अर्चना ने कहा, हम गुटबाजी से बहुत परेशान हो चुके थे। लेकिन, नरेंद्र मोदी की राष्ट्रवाद और उनकी नीति से प्रभावित होकर भाजपा शामिल हुए। अर्चना वर्मा 2005 में जिला पंचायत अध्यक्ष बनीं थीं। वह चार बार विधायक और सपा सरकार में मंत्री रहे राममूर्ति वर्मा के बेटे राजेश वर्मा की पत्नी हैं। राजेश वर्मा 2022 के विधानसभा चुनाव में ददरौल सीट से सपा के प्रत्याशी थे। भाजपा के कद्दावर नेता सुरेश कुमार खन्ना ने सपा के तनवीर खां को 9,313 वोटों से हराया था। सपा को करीब एक लाख वोट मिले थे। नगर निगम के चुनाव में भी सपा और भाजपा के बीच करीबी मुकाबला देखने को मिल सकता था। इसी वजह से सभी की नजर मेयर पद के लिए दोनों पार्टियों के प्रत्याशियों पर टिकी हुई थी। बीजेपी संगठन ने नामांकन के आखिरी दिन से पहले सपा उम्मीदवार को बीजेपी में शामिल करा दिया है। फिलहाल, सपा की तरफसे अभी कोई भी नया कैंडिडेट नहीं घोषित किया गया है।

CMYK

अनियंत्रित होकर युवकों की कार हाईवे से बहकी

बड़ी सड़क दुर्घटना टली

स्टार एक्सप्रेस संवाददाता

भरथना, इटावा। भरथना कोतवाली क्षेत्र अन्तर्गत इटावा कन्नौज हाईवे स्थित ग्राम हथनोली चौराहे पर सोमवार की सुबह साढ़े 9 बजे एक बैगनार कार उस समय अनियंत्रित होकर हाईवे सड़क से एक खाई में उतर गई,जब कार में सबार 4 नवयुवक इटावा की ओर से भरथना की ओर जा रहे थे। हालांकि उक्त दुर्घटना में किसी युवक के कोई खरोच तक नही आई और एक बड़ी सड़क दुर्घटना टल गई। प्रत्यक्षदर्शियों की मानें तो उक्त कार के बराबर में युवकों के मित्रों से भरी एक दूसरी कार आगई थी,और दोनो करो में सबार युवक आपस मे बात चीत करने लगे,इसी बीच दोनो कारें आपस मे मामूली रगड़ गई जिसके चलते बैगनार कार हाईवे सड़क से किनारे बनी खाई में चली गई। उक्त दुर्घटना में किसी के कोई खरोंच नही आई है। लेकिन हाईवे पर एक बड़ी सड़क दुर्घटना टल गई है।

सपा से गुल्लू के सामने बसपा की वर्तिका ने किया नामांकन

- ❑ वर्तिका पूर्व चेयरमैन नीता-मनोज पोरवाल की हैं पुत्रबधू
- ❑ भाजपा से मनीषी गुप्ता ने भी किया नामांकन पत्र दाखिल

स्टार एक्सप्रेस संवाददाता

भरथना, इटावा। नगर निकाय निर्वाचन के चलते नामांकन प्रक्रिया के आठ वें और अन्तिम दिन सोमवार को भरथना नगर पालिका परिषद में अध्यक्ष पद के लिए नगर क्षेत्र के कुल 7 प्रत्याशियों ने बड़ी ही सादगी के साथ अपने नामांकन पत्र दाखिल किए हैं। इस प्रकार इस पद के लिए प्रत्याशियों की कुल संख्या 18 हो गई है। सोमवार को नामांकन पत्र दाखिल के अन्तिम दिन बसपा की अधिकृत प्रत्याशी वर्तिका गुप्ता पत्नी नितिन पोरवाल ने अपने परिजन पूर्व चेयरमैन नीता पोरवाल व मनोज पोरवाल के साथ भरथना उपजिलाधिकारी कार्यालय पहुँच कर अपने नामांकन का दूसरा सैट दाखिल किया है। जबकि इससे पूर्व सपा के अधिकृत प्रत्याशी अजय कुमार उर्फ गुल्लू यादव और भाजपा प्रत्याशी मनीषी गुप्ता ने भी अपना नामांकन पत्र दाखिल कर दिया था। इस प्रकार भरथना नगर पालिका परिषद ने अध्यक्ष पद के लिए सपा,भाजपा, बसपा आदि दलों के अधिकृत प्रत्याशियों के अलावा कुल 18 प्रत्याशियों ने अपने नामांकन पत्र दाखिल किए हैं। सहायक निर्वाचन अधिकारी तहसीलदार अशोक कुमार सिंह ने बताया कि अध्यक्ष पद के लिए कुल 38 प्रपत्रों की बिक्री हुई थी जिसमें अन्तिम दिन तक कुल 18 प्रत्याशियों द्वारा अपने नामांकन पत्र दाखिल किए जा सके हैं। आपको बतादें सपा प्रत्याशी अजय कुमार उर्फगुल्लू यादव की पत्नी रंजना यादव विगत बर्ष 20 12 से 2017 तक नगर पालिका परिषद भरथना की अध्यक्ष रहीं थी,जिनके सफ्ल कार्यकाल की आम जनमानस में चर्चा आज भी बनी हुई है। वहीं बसपा प्रत्याशी वर्तिका गुप्ता की सास नीता पोरवाल और मनोज पोरवाल दोनो ही लगातार दो कार्यकाल चेयरमैन पद पर काविज रहे हैं। इसके अलावा भाजपा की अधिकृत प्रत्याशी मनीषी गुप्ता की सास पुष्पा गुप्ता बर्ष 2012 में भाजपा से बगाबत करके अध्यक्ष पद का चुनाव लड़ चुकीं है जिसमें उन्हें सपा प्रत्याशी रंजना यादव से अपनी हार झेलनी पड़ी थी। इस वार फ्रि से भरथना नगर पालिका परिषद का अध्यक्ष पद के चुनाव में घमासान होने की उम्मीद है।

एक दर्जन दबंगों ने दंपति सहित बच्चो को तमंचे के वट से पीटा

महिला ने सीओ मौदहा से लगाई सुरक्षा की गुहार

स्टार एक्सप्रेस संवाददाता

हमीरपुर। एक दर्जन दबंगों द्वारा महिला सहित उसके पति और बच्चो के साथ मारपीट करके बोरिंग का काम ठप कराने तथा जान माल की धमकी देने से भयभीत महिला ने क्षेत्राधिकारी मौदहा से सुरक्षा की गुहार लगाई है, थाना बिवार क्षेत्र के ग्राम बंडा निवासी रजनी देवी पत्नी उमाकान्त ने सीओ मौदहा को दिए शिकायती पत्र में अवगत कराया है कि 23 अप्रैल की शाम समय लगभग 08रू00 बजे वह अपने पति और बच्चों के साथ अपने खेत मे सरकारी रिंगबोर करा रही थी, तो उसी समय गांव के रहने वाले महेन्द्र सिंह, अभिषेक, रामदेव, जगदेव, अभय सिंह उर्फ अब्भू, सुनील सविता, रंजीत व तीन अज्ञात लोग उसे, उसके पति और बेटे को अश्लील गन्दी गन्दी गालियां देने लगे और धमकी देते हुए कहा कि बोरिंग का काम रोक दो नहीं तो हम लोग तुम्हारे दोनो बेटे मनीष व आशीष को जान से मार देंगे। उन्होंने एतराज जताया तो उक्त सभी लोगों ने मुझे व मेरे पति व बच्चों को लाठी डण्डों व कुल्हाडी व तमन्चे के बट से बेरहमी से मारा पीटा जिससे मुझे व मेरे बच्चों को गम्भीर चोंटें आयी है। उनके साथ उन्होंने बोरिंग की मशीन चलाने वाले भवानी गांव निवासी सुनील और नंदू को के साथ भी मारपीट की जिसे कई लोगो ने देखा, सभी लोग गांव के दबंग व अपराधी प्रवृत्ति के लोग है वे लोग गांव में कई संगीन वारदात कर चुके है। उक्त लोगों की इस मारपीट से उसका परिवार बहुत भयभीत हैं इस घटना को गांव के कई लोगों ने देखा ।

अगर समय पर लोग न आ जाते तो वे लोग उसे व उसके बच्चों को जान से मार देते। पीड़ित महिला ने उक्त लोगो के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कर सख्त कानूनी कार्यवाही करने की गुहार लगाई है।

खौफ : हिस्ट्रीसीटर ने गोली मारकर की आत्महत्या

भाजपा सरकार में अपराधियों में बढ़ा है पुलिस का खौफ

स्टार एक्सप्रेस संवाददाता

चौबिया, इटावा। चौबिया थाना क्षेत्र के अंतर्गत ग्राम भदामई में एक 36 वर्षीय हिस्ट्रीसीटर प्रदीप उर्फछोटे पुत्र स्व0भूरे सिंह यादव ने खुद को गोली मारकर आत्महत्या कर ली,घटना की जानकारी पर अपर पुलिस अधीक्षक ग्रामीण सत्यपाल सिंह,सैफई क्षेत्राधिकारी नागेंद्र चतुर्वेदी,चौबिया, बसरेहर के थाना प्रभारियों के साथ पुलिस बल लेकर पहुंचे,जहां उन्होंने मृतक हिस्ट्रीसीटर के शव को कब्जे में लेकर पंचनामा भरकर पोस्टमार्टम हेतु मुख्यालय भेजा है। घटना की जानकारी देते हुए मृतक के बड़े भाई राजपाल यादव ने बताया की बीते दिन की शाम जब उसकी अपने छोटे भाई प्रदीप से बात हुयी तब उसने बताया था की रोज-रोज पुलिस घर पर आकर पूछताछ करती और मारपीट कर चली जाती है, उनके हाथो से पीटने से अच्छा है की वह खुद आत्महत्या करले,जिसपर उसने अपने छोटे भाई को ऐसा नही करने से खूब समझाया लेकिन वह पुलिस की रोज-रोज की कार्यवाही से परेशान था। जिसके चलते छोटा भाई रविवार की दोपहर करीब डेढ़ बजे घर पर आया और अपनी मोटरसाकिल खड़ी कर घर में मम्मी और बड़े बुजुर्गो के पैर छूकर घर के बहार गली में कुर्सी पर बैठ गया,इसी बीच उसे पता नही क्या सनक आई और खुद को गोली मारकर आत्महत्या करली। घटना की जानकरी दते हुए अपर पुलिस अधीक्षक ग्रामीण सत्यपाल सिंह ने बताया की चौबिया थाना क्षेत्र के अंर्तगत ग्राम भदामई के एक हिस्ट्रीसीटर प्रदीप उर्फ छोटे पुत्र स्व0भूरे सिंह ने खुद को गोली मारकर आत्महत्या करली है। मृतक चौबिया थाने का हिस्ट्रीसीटर था,जिसके ऊपर करीब एक दर्जन से अधिक आपराधिक मामले दर्ज है,आत्महत्या का कारण अभी सामने नहीं आया है मामले की जाँच की जा रही है।

मौसम : वेमौसम ओलावृष्टि-बारिश से किसान चिन्तित

स्टार एक्सप्रेस संवाददाता

महेवा, इटावा। भरथना तहसील अंतर्गत भरथना और महेवा विकास खंड क्षेत्र के कस्बा एवं ग्रामीण अंचलों में विगत 3 दिनों से एकाएक मौसम में बदलाव से भीषण गर्मी तेज-लू के बाद सोमवार की सुबह से आसमान में छाए घने बादल व हल्की बूंदाबांदी से खेतों में पड़े गेहूं के गट्टे व पकी तैयार खड़ी आधे से अधिक फ्सल खराब होने का डर किसानों को दिन-रात सता रहा है और किसान रात दिन ट्रैक्टर थ्रेसर चलाकर अपनी गेहूं की फ्सल समेटने में जुटे हुए हैं। विकास खंड क्षेत्र के कस्बा महेवा एवं ग्रामीण अंचलों में प्रमुख रूप से ग्राम आनेपुर, ग्राम बहेड़ा, ग्राम उझियांनी, ग्राम नोधना, ग्राम नागरी लोलपुर, ग्राम मतिरामपुर, ग्राम सुनबरसा, ग्राम शेरपुरा, ग्राम फतेहपुरा, ग्राम ढका ताल, ग्राम पुरावली, मेहंदीपुर, ग्राम अहेरीपुर, ग्राम निवाड़ी खुर्द, ग्राम निवाड़ी कला आदि में हजारों एकड़ कृषि भूमि पर पड़ी खड़ी फसल का नुकसान होने की आशंका के चलते किसान चिन्तित हैं। किसान वेद प्रकाश त्रिपाठी, रामनरेश दुबे, राजीव ऋषिसर, सतीश पांडे, रामपाल, अनिल भदौरिया, बबलू तिवारी, हरिश चंद्र पाल, ठाकुर राम सिंह, राजावत आदि का कहना है कि मौसम में अचानक बदलाव से किसान परेशान हैं साथ ही मजदूरों की कमी के कारण फसल उठाने में रात दिन खेतों पर मेहनत कर रहे हैं। वहीं ट्रैक्टर से गेहूं के गट्ठर से पहले भूसा सुरक्षित जगह पहुंचाने का प्रयास कर रहे हैं तेज हवा में भूसा उड़ने वह बारिश में भूसा सड़ने का अंदेशा बना हुआ है जिसकी पशुओं के लिए बहुत आवश्यक है।

युवक के घर पर दबंगों ने की फायरिंग

संवाददाता, राठ, हमीरपुर : कस्बे के भटियाना मोहल्ला निवासी रवि पुत्र गिरजानंदन ने बताया कि शनिवार की शाम करीब साढ़े छह बजे अनमोल पठान निवासी गुलाब नगर लुधियातपुरा, राहुल चौधरी पुत्र हरी निवासी भटियाना, पार्थ बुधौलिया पुत्र चंद्र प्रकाश निवासी सिकंदरपुरा एक बाइक पर बैठकर नरेंद्र यादव पुत्र रामबाबू निवासी गुलाब नगर के घर के सामने अपने वर्चस्व को लेकर एवं अपना प्रभाव बनाने के लिए अवैध तमंचे से फायर किए और देशी सूतली बम फोड़ कर मोहल्ले में आतंक मचाया। इसके बाद उक्त युवक अवैध तमंचा लहराते हुए भाग गए। बताया कि उक्त युवक प्रशांत बुधौलिया के घर के सामने शाम करीब साढ़े सात बजे उसी बाइक से आए। बताया कि उक्त युवक उसके साथ गाली-गलौच करते हुए दो राउंड अवैध तमंचे से फायर किए। साथ ही लोगों को डराने-धमकाने को लेकर देशी सूतरी बम फोड़ कर भाग गए। बताया कि सरेआम इस घटना से मोहल्लेवासियों में तहशत व्याप्त है। कोतवाल भरत कुमार ने बताया कि मामला दर्ज कर लिया गया है। जांच कराकर कार्रवाई की जाएगी।

जमीन के बंटवारे को लेकर मारपीट

संवाददाता, राठ, हमीरपुर। चिकासी थाने सिकरौधा गांव निवासी दीपू कुमार पुत्र रामसिंह ने बताया कि शनिवार की रात करीब 10 बजे वह अपने घर पर था। उसने अपने चाचा करन सिंह, राजू पुत्र रामेश्वर से कहा कि अपनी अपनी जमीन का बंटवारा कर लो। इसी बात को लेकर गाली गलौज करने लगे। जब उसने गाली देने से मना किया तो विरोध करने पर मारा-पीटा। आवाज सुनकर उसकी पत्नी अर्चना और मां उमा बचाने आईं तो उन्हें भी मारापीटा। पीड़ित ने कोतवाली में मुकदमा दर्ज कराया है।

सन्दिग्ध हालत में मिला युवक का शव

संवाददाता, राठ, हमीरपुर। ममेरे भाई के साथ ससुराल गया युवक का शव हमीरपुर मार्ग स्थित चिल्ली गांव के संदिग्ध हालात में पड़ा मिलने से सनसनी फैल गई। सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। युवक की मौत पर स्वजनों का रो रोकर बुरा हाल है। जलालपुर थाने के कुपरा गांव निवासी 30 वर्षीय देवेंद्र पुत्र पंचमलाल अहिरवार का शव रविवार की रात हमीरपुर मार्ग स्थित चिल्ली गांव के पास संदिग्ध हालात में पड़ा मिला। सूचना पर पहुंची पुलिस ने मृतक के स्वजनों को जानकारी दी। मृतक के बड़े भाई ने बताया कि उसका छोटा भाई मजदूरी कर अपने परिवार का भरण-पोषण करता था पर। रविवार की शाम करीब पांच बजे उसका भाई अपने ममरे भाई दीपू के साथ बाइक से अपनी ससुराल चरखारी थाने के बिहारी गांव गया था। बताया कि दीपू उसके भाई बबलू को छोड़ कर भाग आया था। सूचना पर पहुंची पुलिस ने उन लोगों रात करीब 12 बजे को जानकारी दी।

15 प्रत्याशियों ने किया निकाय अध्यक्ष के लिए नामांकन

संवाददाता, राठ, हमीरपुर। नगर निकाय चुनाव के नामांकन के आखिरी दिन प्रत्याशी अपने समर्थकों के साथ नामांकन पत्र जमा करने के लिए पहुंचे। इस दौरान पुलिस प्रशासन ने प्रत्याशी के साथ उनके प्रस्तावक को ही जाने दिया। वहीं भाजपा प्रत्याशी और सपा प्रत्याशी अपने भारी समर्थकों के साथ नामांकन पत्र दाखिल करने के लिए पहुंचे। इस तरह कुल 15 लोगों ने अध्यक्ष पद के लिए नामांकन किया। नगर पालिका परिषद के चुनाव के लिए नामांकन प्रक्रिया के आखिरी दिन सोमवार को 9 नामांकन पत्र दाखिल किए गए। दिन भर तहसील परिसर में लाव लश्कर लेकर प्रत्याशी पहुंचे। सुरक्षा व्यवस्था के लिए पुलिस फोर्स मौजूद रही। नामांकन प्रक्रिया के आखिरी दिन सोमवार को समाजवादी पार्टी के दानिश खान, भाजपा के श्रीनिवास बुधौलिया, बहुजन समाज पार्टी के विमलेश भूपेंद्र सिंह यादव , जन अधिकार पार्टी से रविन्द्र सिंह यादव ने अपने समर्थकों के साथ तहसील पहुंचे और नामांकन पत्र दाखिल किए ?। वहीं से नगर भ्रमण करते हुए तहसील पहुंचे। कांग्रेस से राजेश कुमार ने पर्चा भरा। इसके अलावा निर्दलीय प्रत्याशियों में शोवी सैयदा,रेखा यादव, क्रीनी भरद्वाज, अखिलेश, अखिलेश कुमार, रियाजुल, भगवानदास, किरण यादव, तज्जू और सुनील ने अपना पर्चा दाखिल किया। अब तक राठ नगरपालिका अध्यक्ष पद के लिए 15 नामांकन पत्र दाखिल हो चुके हैं। इस दौरान भाजपा प्रत्याशी के साथ विधायक मनीषा अनुरागी सहित अन्य कार्यकर्ता मौजूद रहे।

चोरी की बाइक के साथ युवक गिरफ्तार, भेजा जेल

संवाददाता, ऊँचाहार, रायबरेली। कोतवाली पुलिस ने वाहन चेकिंग के दौरान एक युवक को चोरी की बाइक के साथ गिरफ्तार कर जेल भेजा है , वही पकड़े गए युवक की निशानदेही पर पुलिस ने एक अन्य चोरी की गई बाइक को बरामद किया है। मिर्जापुर एहारी टेल नहर के पास रविवार की शाम पुलिस टीम द्वारा चेकिंग अभियान चलाया जा रहा था, तभी एक संदिग्ध युवक को रोककर उससे पूछताछ की गई तो पता चला कि युवक के पास मौजूद पल्सर बाइक चोरी की है, जिसके बाद उसकी निशानदेही पर एक सीडी डीलक्स बाइक को भी बरामद किया गया, सोमवार को पकड़े गए युवक पर सम्बंधित धाराओं में केस दर्ज कर उसे जेल भेजा गया है। कोतवाल बालेन्दु गौतम ने बताया कि राहुल सिंह निवासी मिर्जापुर एहारी को बाइक चोरी करने के मामले में जेल भेजा गया है, उसके पास से चोरी की दो बाइकों को भी बरामद किया गया है।

सगे भाईओ में आपसी कहासुनी के बाद मारपीट, आधा दर्जन लोग घायल

स्टार एक्सप्रेस संवाददाता

ऊँचाहार, रायबरेली। मकान की दीवार में मिट्टी का लेप लगाने को लेकर हुए विवाद में दो सगे भाईओ के परिवारों के बीच कहासुनी के बाद मारपीट हो गई, घटना में दोनों पक्षों से कुल 6 लोग घायल हो गए, सभी घायलों को परिजनों की मदद से सीएचसी में भर्ती कराया गया है, पुलिस ने दोनों पक्षों की तहरीर पर मामला दर्ज कर लिया है। मामला कोतवाली क्षेत्र के गांव किरवाहार मजरे सांवापुर नेवादा का है, जहां गांव निवासी शिव प्रसाद व मथुरा प्रसाद सगे भाई हैं और गांव में अगल बगल ही दोनों के घर है। सोमवार की सुबह शिव प्रसाद की पत्नी श्रीमती देवी मकान की दीवार में मिट्टी का लेप लगा रही थी, तभी मथुरा प्रसाद की पत्नी ने दीवार में लेप लगाने का विरोध किया। इतने में दोनो पक्षों के बीच कहासुनी के बाद मारपीट शुरु हो गई और दोनो पक्षों में जमकर लाठी डंडे चले। जिसमें एक पक्ष से शिव प्रसाद 40 वर्ष, उनकी पत्नी श्रीमती देवी 35 वर्ष व बेटा अनिल कुमार 18 वर्ष जबकि दुसरे पक्ष से मथुरा प्रसाद की पत्नी कलावती 40 वर्ष बेटी सरिता 15 वर्ष व बेटा वीरेन्द्र 11 वर्ष घायल हो गए। सभी घायलों को इलाज के लिए सीएचसी में भर्ती कराया गया है। कोतवाल बालेन्दु गौतम ने बताया कि एक पक्ष से कलावती की तहरीर पर शिवप्रसाद, अनिल कुमार व दिनई दूसरे पक्ष से शिवप्रसाद की तहरीर पर मथुरा व राजकरन के विरुद्ध मामला दर्ज कर आवश्यक कार्यवाही की जायेगी।

शॉर्ट सर्किट से छप्पर में लगी आग से गृहस्थी जलकर राख

स्टार एक्सप्रेस संवाददाता

खीरों रायबरेली। घर के सामने लगे बिजली के पोल में शॉर्ट सर्किट से छप्पर में लगी भीषण आग ने अनाज सहित गृहस्थी का सामान जलाकर राख हो गया। पीड़ित का सारा सामान जल जाने पर वह खुले आसमान के नीचे अकेला रह गया। राजस्व विभाग की टीम ने मौका मुआयना कर शासन-प्रशासन से अग्निपीड़ित को जल्द आर्थिक सहयोग दिलाये जाने का आश्वासन दिया है। खीरों थाना क्षेत्र के उदवत खेड़ा मजरे जेरी में बीती दोपहर ग्रामीणों में उस समय हाहाकार मच गया जब इसी गांव निवासी राम बाबू पुत्र भोला,राकेश पुत्र बिंदा, बिंदा पुत्र गणेश,मुकेश पुत्र दूधनाथ के घर पर रखे छप्पर में दोपहर में बिजली के पोल से शॉर्ट सर्किट से आग लग गई। छप्पर में लगी आग ने घरेलू सामान, कपड़ा, अनाज सहित समस्त गृहस्थी के सामान को अपनी चपेट में लेकर राख कर दिया। आग अपना विकराल रूप धारण करती, इससे पूर्व पड़ोसी ग्रामीणों ने निजी संसाधनों से बमुश्किल आग पर काबू पाया। अग्निकाण्ड की सूचना मिलते ही कुछ देर बाद राजस्व विभाग की टीम ने पीड़ित के नुकसान का आकलन कर अपने उच्चाधिकारियों को रिपोर्ट प्रेषित कर जल्द से जल्द शासन-प्रशासन से आर्थिक सहयोग दिलाये जाने का आश्वासन दिया।

नगर पंचायत लंभुआ से अनिल बरनवाल व कोइरीपुर से नशरीन बानो ने भरा पर्चा

- ❑ सभी नगर पंचायत प्रत्याशी मजबूती से लड़ रहे चुनाव : अभिषेक सिंह राणा

स्टार एक्सप्रेस संवाददाता

सुल्तानपुर। कांग्रेस द्वारा अध्यक्ष नगर पंचायत लंभुआ के लिए घोषित प्रत्याशी अनिल बरनवाल व कोइरीपुर नगर पंचायत की प्रत्याशी नशरीन बानो पत्नी अतहर नवाब ने नामांकन पत्र दाखिल किया। जनपद प्रभारी अनीश खान, जिलाध्यक्ष अभिषेक सिंह राणा एवं राष्ट्रीय सचिव बीपी सिंह की मौजूदगी में दोनों प्रत्याशियों ने लंभुआ तहसील पहुचकर अपना नामांकन पत्र दाखिल किया। जिला अध्यक्ष अभिषेक सिंह राणा ने कहा कि हमारे सभी नगर पंचायत के प्रत्याशी पूरी मजबूती के साथ चुनाव लड़ रहे हैं। हम चुनाव के समय नहीं चुनाव होने के पहले भी जनता से बराबर रूबरू होकर उनकी समस्याओं को लेकर संबंधित अधिकारियों से निस्तारण करवाते थे जिसका जीता जागता उदाहरण है आए दिन जन समस्याओं को लेकर कांग्रेस पार्टी के सड़क पर हो रहे आंदोलन, जिसे जनता देख रही है और समझ रही है कि कौन हमारे सुख दुख का साथी है,पूरी मेहनत और लगन के साथ कॉंग्रेस के कार्यकर्ता व नेता कॉंग्रेस के सभी नगर पंचायत अध्यक्ष के प्रत्याशियों को जिताने के लिए जी जान से मेहनत कर रहे है। लंभुआ नगर पंचायत प्रत्याशी अनिल बरनवाल ने कहा कि क्षेत्र की जनता को कांग्रेस पर भरोसा है अन्य पार्टियों ने सिर्फ जनता को ठगने का काम किया है। कोइरीपुर नगर पंचायत प्रत्याशी नशरीन बानो बोली श्पार्टी ने जो मुझ पर भरोसा जताया है मैं उस भरोसे को कायम रखूंगी अपनी कोइरीपुर नगर पंचायत को को साफ सुथरा बनाऊंगीश। इस मौके पर ब्लॉक कमेटी व जिला कमेटी के समस्त पदाधिकारी व कार्यकर्ता मौजूद रहे।

लाव लश्कर से नामांकन करने पहुंची रेखा उमेश यादव

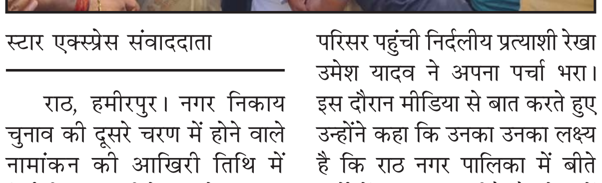

स्टार एक्सप्रेस संवाददाता

राठ, हमीरपुर। नगर निकाय चुनाव की दूसरे चरण में होने वाले नामांकन की आखिरी तिथि में निर्दलीय प्रत्याशी रेखा उमेश यादव ने भारी लाव लश्कर से तहसील परिसर पहुंचकर नामांकन किया। पिछले चुनाव में दूसरे पायदान पर रही निर्दलीय प्रत्याशी ने इस बार अपने साथ भारी समर्थन होने की बात कही। हजारों की संख्या में अपने समर्थकों की भीड़ लेकर तहसील परिसर पहुंची निर्दलीय प्रत्याशी रेखा उमेश यादव ने अपना पर्चा भरा। इस दौरान मीडिया से बात करते हुए उन्होंने कहा कि उनका उनका लक्ष्य है कि राठ नगर पालिका में बीते वर्षों में हुए तमाम तरीके के घोटालों को उजागर करेंगे। और विकास कराएंगे। राठ की जनता आज भी मूलभूत सुविधाओं विद्युत, पानी, टूटी सड़कें, जल निकासी सहित तमाम तरीके की समस्याओं से जूझ रही है। जिनका निवारण बीते वर्षों में पालिका के जिम्मेदार नहीं करा पाए हैं।

CMYK

ओडीएफ : राज मिस्त्रियों को मिला प्रशिक्षण

स्टार एक्सप्रेस संवाददाता

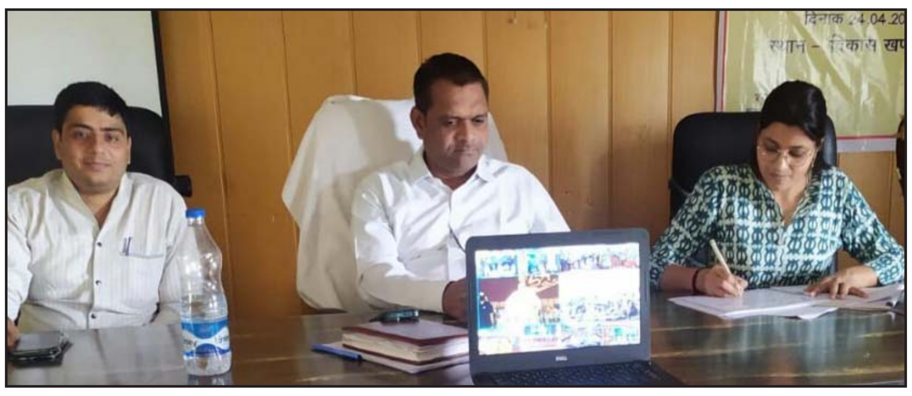

महेवा, इटावा। महेवा बिकास खण्ड के सभागार में पंचायती राज विभाग द्वारा आयोजित ओडीएफ प्लस कार्य के लिये क्षेत्र के राज मिस्त्रियों ने तीन दिवसीय प्रशिक्षण में भाग लिया। प्रशिक्षण का शुभारम्भ सहायक विकास अधिकारी पँचायत श्याम वरन राजपूत ने किया। प्रशिक्षणदाता जिला समन्वयक स्वच्छत भारत मिशन अनुराग बाजपेई ने मौजूद राज मिस्त्रियों को शौचलाय निर्माण, आरआरसी केंद्र निर्माण आदि के बारे में विस्तार से बताया। श्री बाजपेई ने कहा कि सूखे व गीले कचड़ा के निस्तातरण हेतु केंद्रों का निर्माण करना, व प्रत्येक परिवार में शौचालय निर्माण,प्रत्येक गाँव मे कम से कम एक सामुदायिक शौचालय निर्माण होना जरूरी है। सहायक विकास अधिकारी पँचायत श्री राजपूत ने कहा कि गाँवो में जब प्रत्येक परिवार के पास अपना शौचलाय मानक के अनुसार निर्मित होगा तो न तो लोग खुले में शौच जाएंगे और नहीँ गंदगी होगी, बीमारियों पर अंकुश भी होगा ।वहीँ खण्ड प्रेरक मीनाक्षी चौहान ने सभी को शौचालयों को प्रयोग करने की सलाह दी। जिला समन्वयक ने यह भी बताया कि गत वर्ष तीन गाँवो में जिनमें निवाड़ीकला, महेवा व बहादुरपुर घार शामिल है यह स्कीम लागू की गई, जबकि इस वर्ष ब्लॉक के 69 राजस्व ग्रामों में स्वच्छ भारत मिशन अभियान लागू किया जायेगा। प्रशिक्षण में जे0ई0 कुलदीप सिंह, अनुराग यादव, अंशुमान सिंह, अर्जुन सिंह सहित आधा सैकड़ा से अधिक राजमिस्त्री मौजूद रहे।

तेज आंधी पानी से टीन व छप्पर उड़े, पेड़ गिर

संवाददाता, खीरों, रायबरेली। शोमवार की शाम तेज आंधी व बारिश से खीरो व उसके आसपास के इलाके में मौसम गड़बड़ा गया। तेज आंधी के चलते कई पेड़ गिर गए। टिन-छप्पर उड़ते नजर आए। छतों पर सूखने के लिए डाले गए कपड़े कहां उड़कर चले गए पता ही नहीं चला। मौसम का यह रौद्र रूप करीब डेढ़ घंटे तक चलता रहा। तब तक लोग जहां थे वहीं दुबके रहे। पहले तेज हवा के साथ ऐसी बारिश शुरू हुई कि लोग घबरा गए। साथ में बिजली भी चमकती-कड़कती रही। हवा के चलते बारिश में इतना फोर्स था कि जिनके दरवाजे उत्तर दिशा में थे, नीचे से पानी घर के अंदर घुस रहा था। तूफान जैसी आंधी के चलते फुटपाथ पर लगी दुकानों के सामान उड़ गए। टीन व छप्पर तहस-नहस हो गए।

भाजपा प्रत्याशी रेनू सिंह ने सभासद पद हेतु किया नामांकन

स्टार एक्सप्रेस संवाददाता

सुल्तानपुर। नगर पालिका सुल्तानपुर के वार्ड 19(शास्त्री नगर) से नामित भाजपा प्रत्याशी रेनू सिंह पति अजय सिंह (पूर्व सभासद) ने सभासद पद हेतु कलेक्ट्रेट परिसर सुल्तानपुर में नामांकन किया। बताते चले की रेनू सिंह के पति अजय कुमार सिंह पूर्व सभासद हैं जो वर्तमान समय में महात्मा गांधी स्मारक इंटर कालेज में प्रवक्ता पद पर कार्यरत है। सभासद प्रत्याशी रेनू सिंह पहले भी सन 2012 में शास्त्री नगर से सभासद भी रह चुकी है। रेनू सिंह ने नामांकन करने के बाद बताया की 2012 में शास्त्री नगर की जनता ने निर्दल चुनाव जिताया था। दूसरी बार सन 2017 में शास्त्रीनगर की सीट अनारक्षित होने पर मेरे पति अजय कुमार सिंह ने निर्दल प्रत्याशी के रूप में नामांकन किया था। जनता ने पूरे विश्वास के साथ दूसरी बार भी जिताया। महिला सीट होने के कारण अबकी बार भारतीय जनता पार्टी ने मुझे प्रत्यासी बनाया है। यह हमारा सौभाग्य है शास्त्री नगर की सेवा और विकास में पूर्ण मनोयोग से पूर्व की भांति कार्य करती रहूंगी।

प्रभु की भक्ति में लीन होने पर विघ्न ठीक नही : आचार्य साकेत विहारी

स्टार एक्सप्रेस संवाददाता

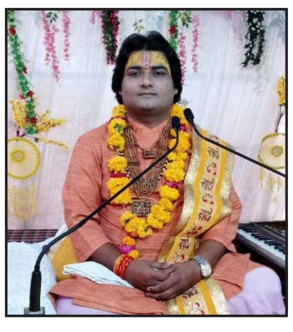

महेवा, इटावा। महेवा विकास खण्ड क्षेत्र के ग्राम ढकातल पुराबली में आयोजित श्रीमद्भागवत कथा में कथा प्रवक्ता आचार्य साकेत बिहारी दीक्षित ने ध्रुव चरित्र में बताया कि सतयुग के दौरान अवधपुरी में राजा उत्तानपद राज किया करते थे। उनकी बड़ी रानी का नाम सुनीति था और उनके कोई संतान नहीं थी। देवर्षि नारद रानी को बताते हैं कि यदि तुम दूसरी शादी करवाओगी तो संतान प्राप्त होगी। रानी अपनी छोटी बहन सुरुचि की शादी राजा से करवा देती है। कुछ समय बाद सुरुचि को एक संतान की उत्पत्ति होती है। जिसका नाम उत्तम रखा। उसके कुछ दिनों के बाद बड़ी रानी भी एक बालक ध्रुव को जन्म देती है। 5 वर्ष बाद जब राजा उत्तम का जन्म दिन मना रहे थे तो बालक ध्रुव भी बच्चों के साथ खेलता हुआ उनकी गोद में बैठ गया, जिस पर सुरुचि उठा देती है और उसे कहती है कि यदि अपने पिता की गोद में बैठना है तो अगले जन्म तक इंतजार कर, बालक ध्रुव यह बात चुभ जाती है और वह वन में जाकर कठिन तपस्या करने लगते हैं। उसकी तपस्या से प्रसन्न होकर भगवान विष्णु उन्हें दर्शन देते हैं और उन्हें मनचाहा वरदान देने का वचन देते हैं। इस प्रसंग से यह शिक्षा मिलती है कि किसी से भेदभाव नहीं करना चाहिए और प्रभु की भक्ति में कोई विघ्न नहीं डालना चाहिए। कथा में सुनाए गए भजनों पर श्रद्धालु झूम उठें। कथा के परिक्षित मुलायम सिंह पाल व परिवार ने मिल कर आरती उतारी है।

सपा प्रत्याशी के नामांकन में उमड़ी भीड़

स्टार एक्सप्रेस संवाददाता

हमीरपुर। नगर निकाय चुनाव राठ के लिए समाजवादी पार्टी से बनाये गए उम्मीदवार दानिश खान के नामांकन में खासी भीड़ उमड़ी। आखिरी सेट का नामांकन करने पहुंचे दानिश खान के साथ उनके प्रस्तावक रितेश राजपूत बाबू भी रहे। प्रशासन की चुस्त व्यवस्थाओं के चलते नामांकन परिसर में प्रत्याशी के साथ केवल प्रस्तावक के जाने की अनुमति रही। मीडिया से बात करते हुए दानिश खान ने कहा कि पिछले चुनाव में निर्दलीय लड़कर वे चंद वोटों से ही शिकस्त पाए थे। लेकिन इस बार उनपर समाजवादी पार्टी के आलाकमान ने भरोसा जताया है। और वे मजबूती से चुनाव लड़ रहे हैं और उन्हें अपार जनसमर्थन मिल रहा है। उन्होंने कहा कि उनकी लड़ाई पालिका में बीते वर्षों में लगातार हो रहे भ्र्ष्टाचार से है और लड़ाई जनता की है जो वो सशक्त तरीके से लगातार लड़ते आ रहे हैं। उनका लक्ष्य होगा कि वो एक साफ स्वच्छ राठ बनाएं और जल्द ही वह घोषणा पत्र के साथ जनता के बीच आएंगे। इस दौरान पूर्व मंत्री धूराम लोधी,पूर्व मंत्री रामाधार, प्रदेश अध्यक्ष चंद्रशेखर चौधरी, पूर्व विधायक अम्बेश कुमारी, प्रताप लोधी, रामसजीवन यादव, सुनील सविता, चन्द्रवती वर्मा, चंद्रकांता राजपूत, अंजू सक्सेना, सत्यपाल यादव, जिलाध्यक्ष इदरीस, केके द्विवेदी, दीपक राजपूत, कमलेश राजपूत आदि मौजूद रहे।

महिला को पीटा मुकदमा दर्ज

संवाददाता, महराजगंज, रायबरेली। कूड़ा फेंकने गई महिला की गांव के ही चार लोगों ने जमकर पिटाई कर दी, मारपीट के मामले में महिला के पुत्र की तहरीर पर पुलिस ने चार लोगो के विरुद्ध मुकदमा दर्ज कर कार्रवाई शुरू कर दी है। क्षेत्र के बेलवा मजरे भतीजे पुर निवासी संदीप पुत्र रमेश कुमार ने कोतवाली पुलिस को तहरीर देते हुए बताया कि रविवार को उसकी मां मायावती घर के बगल में ही कूड़ा फेंकने गई थी तभी गांव के ही देव कुमार व चेतन पुत्रगण रामऔतार , राहुल पुत्र विजय व चेतन की पत्नी ने मेरी मां को अकेला पाकर मारना शुरू कर दिया । मां को चीख पुकार सुन 12 वर्षीय बहन दीपाली मां को बचाने पहुंची तो उन लोगों ने उसे भी जमकर पीट दिया। विपक्षी आए दिन मेरे परिवार को मारने की धमकी देते रहते हैं। यदि इनके खिलाफकोई ठोस कदम न उठाया गया तो मेरे परिवार के साथ कभी भी कोई अप्रिय घटना घट सकती है। मामले में कोतवाली पुलिस ने चारो के खिलाफमुकदमा दर्ज कर कार्रवाई शुरू कर दी है।

दबंग युवक ने घर में घुसकर मां बेटे को पीटा

संवाददाता, ऊंचाहार, रायबरेली। सराय हरदो गाँव में दबंग युवक ने गालीगलौज करते हुए घर में घुसकर मां बेटे की पिटाई कर दी, कोतवाली में मामले की तहरीर दी गई है। गाँव निवासी गेंदऊ का कहना है कि सोमवार की सुबह वो घर में खाना बना रही थी, तभी पड़ोस का एक युवक घर में घुस आया, गालीगलौज करते हुए उसके बेटे साहुल को पीटना शुरू कर दिया और बीच बचाव करने पर उसकी भी पिटाई कर दी। ोतवाल बालेन्दु गौतम ने बताया कि दोनों पक्षों में मारपीट हुई थी, दोनो पक्षों के विरुद्ध शांतिभंग की कार्यवाही की गई है।

अज्ञात के खिलाफ दुर्घटना का मामला दर्ज

संवाददाता, महराजगंज, रायबरेली। कोतवाली क्षेत्र में गत 18 अप्रैल को भदिहा गांव के पास देर रात हुई संदिग्ध परिस्थितियों में युवक की मौत के मामले में पुलिस ने मृतक के भाई की तहरीर पर अज्ञात के खिलाफदुर्घटना का मामला दर्ज कर घटना की छानबीन शुरू कर दी है। कोतवाली पुलिस को दी गई तहरीर में गुरबक्श गंज थाना क्षेत्र के चंदई रघुनाथपुर गांव निवासी प्रदीप कुमार पुत्र राम मनोहर ने बताया कि उसका भाई राजकुमार विगत 18 अप्रैल की रात महराजगंज से बाइक से अपने घर लौट रहा था। तभी हरचंदपुर मोड़ के नजदीक भदिहा गांव के पास अज्ञात बोलेरो ने उसके भाई की बाइक को टक्कर मारकर गंभीर रूप से घायल कर दिया था। मृतक के भाई ने बताया क्रिया कर्म के बाद जब उसे आशीष एवं शिव बहादुर ने दुर्घटना करने वाली गाड़ी के बारे में बताया तो उन्होंने पुलिस को घटना की तहरीर दी है ।पुलिस ने मृतक के भाई की तहरीर के आधार पर अज्ञात बोलेरो व चालक के खिलाफमामला दर्ज कर घटना की जांच शुरू कर दी है।

6 दिवसीय उन्मुखीकरण कार्यक्रम का शुभारंभ

सवांददाता, अंबेडकरनगर। जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, अंबेडकरनगर में आज राजकीय माध्यमिक विद्यालयों के नवनियुक्त सहायक अध्यापकध्प्रवक्ताओ का 06दिवसीय उन्मुखीकरण कार्यक्रम का शुभारंभ उप शिक्षा निदेशक ध्प्राचार्य मनोज कुमार गिरि के द्वारा मां सरस्वती की प्रतिमा पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्ज्वलन करके किया गया। डायट प्राचार्य अपने उदबोधन में कहा कि इस प्रशिक्षण के द्वारा शिक्षकों को विभागीय जानकारी प्रदान की जाएगी। यद्यपि इस प्रकार के प्रशिक्षण सेवा के आरंभ में ही होने चाहिए ।ऐसे प्रशिक्षणों से विभाग के नियमों , योजनाओं के विषय में जानकारी होती है जानकारी न होने के कारण कई बार असहज स्थिति उत्पन्न हो जाती है ।शिक्षकों को अपने कार्यों एवं दायित्वों के विषय में जानकारी होनी चाहिए ।प्रशिक्षण प्रभारी वीना चौधरी ने 06 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत की। साथ ही उन्होंने बताया किमें कुल 73 शिक्षकों को प्रशिक्षण प्रदान दिया जायेगा। 06 दिवसों में कुल 30 सत्रों का आयोजन विभिन्न शीर्षको के अंतर्गत किया जाएगा। सभी विषय पर संस्थान के प्रवक्ताओं द्वारा प्रस्तुतिकरण किया जाएगा । आज राष्ट्रीय स्तरध्राज्य स्तर के संस्थानों के विषय पर प्रमोद सेठ ,विभागीय संरचना के बारे में वीना चौधरी,परीक्षा नियामक प्राधिकारी के विषय पर श्याम बिहारी बिंद व समग्र शिक्षा अभियान पर शुचि राय द्वारा प्रस्तुतिकरण किया गया।

ईद की नमाज के बाद देश की अमन शांति व भाईचारे के लिए मांगी दुआएँ

सवांददाता, किछौछा। ईद उल फित्तर पर शनिवार को ईदगाह और मस्जिदों में अकीदत के साथ नमाज अदा की गई मुल्क में अमन शांति और भाईचारे के लिए मांगी गई दुआएं नमाज के बाद लोगों ने एक दूसरे को गले लगाकर ईद की मुबारकबाद दी वही दरगाह मखदूम अशरफके निकट प्रसिद्ध ईदगाह में जानशीन मोहामिद अशरफ(उर्फशारिक मियाँ) ने ईद उल फित्तर की नमाज अदा कराई उसके अलावा किछौछा नगर पंचायत सहित देहात क्षेत्रों में मस्जिदों और ईदगाह में ईद उल फित्तर की नमाज अदा की गई नमाज के बाद देश प्रदेश में अमन और भाईचारे की दुआ की गई दुआ के बाद लोगों ने एक दूसरे के गले मिलकर और मिठाई खिलाकर ईद उल फित्तर की मुबारकबाद दी शारिक मियाँ ने कहा कि ईद भाईचारे का पैगाम लेकर आती है सभी को एक साथ ईद मनानी चाहिए इसके साथ ही मुस्लिम समुदाय के लोगों का ईद की बधाई देने का सिलसिला शुरू हो गया श्री अशरफने देश और प्रदेश वासियों को ईद की मुबारकबाद दी वही नमाज के दौरान ईदगाहों व मस्जिदों के पास कड़ी सुरक्षा व्यवस्था में पुलिस महकमा खड़ा रहा।

ब्राह्मण समाज सदैव से सकल समाज का पथ प्रदर्शक

सवांददाता, बस्ती। बस्ती जिले में ब्राह्मण समाज की ओर से रविवार को भगवान परशुराम की जयंती के अवसर पर विवाह मंडप में कार्यक्रम आयोजित किया गया। मुख्य अतिथि केंद्रीय राज्यमंत्री दिनेश दुबे रहे। उन्होंने कहा कि ब्राह्मण समाज सदैव से सकल समाज का पथ प्रदर्शक रहा है। ब्राह्मणों ने हमेशा ही सभी धर्मों व जातियों को साथ लेकर समाज और राष्ट्र हित के लिए कार्य किया है ।विशिष्ट अतिथि सांसद हरीश द्विवेदी ने कहा कि भगवान परशुराम के पराक्रम से दुष्टजन कांपते थे। कहा कि उनसे सीखने के लिए बहुत कुछ है। आयोजक भाजपा युवा मोर्चा के उपाध्यक्ष अच्चितानंद मिश्र ने आगंतुकों का आभार व्यक्त किया।

जिलाधिकारी की अध्यक्षता में कोविड-19 के संक्रमण की रोकथाम हेतु बैठक

स्टार एक्सप्रेस संवाददाता

अंबेडकर नगर। कोविड-19 के संक्रमण की रोकथाम हेतु स्वास्थ्य विभाग द्वारा की गयी तैयारियों तथा संक्रमित व्यक्तियों की जॉच के संबंध में जिलाधिकारी अविनाश सिंह की अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट सभागार में समीक्षा बैठक आयोजित किया गया। बैठक के दौरान जिलाधिकारी महोदय द्वारा स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों को संक्रमण से बचाव हेतु शासन द्वारा जारी निर्देशों का अनुपालन करने एवं लोगों को जागरूक करने के निर्देश दिए ।बैठक के दौरान मुख्य चिकित्सा अधिकारी द्वारा अवगत कराया गया कि कोविड-19 रोगियों की संख्या में वृद्धि को देखते हुए महामारी के प्रबंधन हेतु सभी आवश्यक तैयारियाँ समयबद्ध रूप से पूर्ण कर ली गई है ताकि आवश्यकता पड़ने पर जन सामान्य को सभी आवश्यक चिकित्सा सुविधाएं उपलब्ध कराई जा सकें। जिलाधिकारी महोदय द्वारा निर्देशित किया गया कि सभी लक्षण युक्त व्यक्ति, जिनमें खाँसी, बुखार अथवा सांस लेने में कठिनाई के लक्षण पाए गए हों तो उन व्यक्तियों का एंटीजनध्आर टी पी सी आर जांच अवश्य कराया जाए। साथ ही साथ यह भी निर्देश दिया गया कि पॉजिटिव मरीजों को आवश्यकतानुसार समय समय पर दवा उपलब्ध कराया जाए तथा निगरानी समिति के साथ निरंतर बैठक करते रहें। बैठक के दौरान मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ श्रीकांत शर्मा, मुख्य चिकित्सा अधीक्षक डॉ ओमप्रकाश, अपर मुख्य चिकित्सा अधिकारी, उप मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ आशुतोष सिंह, संजय कुमार वर्मा, अन्य चिकित्सा अधिकारी तथा संबंधित विभाग के अधिकारीध् कर्मचारी मौके पर उपस्थित रहे।

जिला कारागार में बंदियों ने की डिप्टी जेलर और दो आरक्षी की पिटाई

स्टार एक्सप्रेस संवाददाता

अंबेडकर नगर। जिला कारागार में वर्तमान परिस्थितियों में दिन पर दिन अराजक होते माहौल की खबरें आम होती जा रही हैं। जिनको अम्बेडकरनगर जेल प्रशासन दबाने में लगा रहता है। सूत्रों की माने तो आज कश्मीरी बंदियों ने अवैध वसूली का विरोध कर डिप्टी जेलर छोटेलाल सरोज तथा आरक्षी सुधीर राय और नंदलाल सिंह पर हमला कर जमकर मारपीट की। मिली जानकारी के अनुसार घटना घटित होने से पहले जेलर गिरजा शंकर यादव भी वहां पर मौजूद थे, उनके बैरक से बाहर आते ही कश्मीरी कैदी हमलावर हो गए। जबकि इसके पहले भी दो बार घटना घट चुकी है जिसकी जांच में छोटेलाल सरोज दोषी भी पाए गए। प्राप्त जानकारी के अनुसार यह विवाद कश्मीरी कैदियों को निजी स्वार्थ में लिप्त होकर जो सुविधाएं अधिकारियों के इशारे पर कर्मचारियों द्वारा मुहैया करवाई जा रही थीं, उसमें वसूली पहले ही हो जाने के बावजूदय कटौती होने के कारण कश्मीरी कैदियों का गुस्सा उभर कर फूट पड़ा। इस जेल में ऊपर से संरक्षण प्राप्तअधिकारियों-कर्मचारियों का गठजोड़ विगत कुछ समय में ऐसा बन चुका है कि यहां अब सब कुछ मैनेज हो जाता है। इससे पूर्व भी कश्मीरियों के पास से एंड्रॉयड मोबाइल बरामदगी की घटना को छुपाया जा चुका है। यदि कोई इस गठजोड़ में शामिल नहीं होता और रसूखदारों या माफिया पर सख्ती करने पर आमादा हो जाता है, तो ऐसे में उसे रास्ते से हटाने में भी लोग जरा भी पीछे नहीं रहते। अब अंबेडकर नगर जनपद का मरैला जेल प्रशासन इस घटनाक्रम को छिपाने में तत्परता से लगा हुआ है। जब इस बाबत जेलर के पास मीडियाकर्मी द्वारा फोन कर जानकारी हासिल करना चाहा तो उनके द्वारा फोन उठाया ही नहीं गया ।

सपा नेता ने किया ईद मिलन समारोह का आयोजन

स्टार एक्सप्रेस संवाददाता

मसकनवा, गोण्डा। गौरा विधानसभा में मलिक परिवार द्वारा ईद मिलन समारोह का किया गया, जिसमें सभी समुदाय के लोग शामिल हुए। जनपद के गौरा विधानसभा के पूर्व प्रत्याशी कलाम मलिक और समाजवादी नेता हाफिज मलिक ने रविवार को ईद-उल-फित्र के अवसर पर सांप्रदायिक सद्भाव की मिसाल पेश करते हुए अपने आवास पर ईद मिलन समारोह का आयोजन किया। समारोह के दौरान विभिन्न धर्मों के लोगों ने गले मिलकर एक-दूसरे को ईद की बधाई दी और सेवईं का लुत्फ उठाया। इस अवसर पर समाजवादी पार्टी के नेता हाफिज मलिक ने कहा कि ईद मिलन में जो लोग शरीक हुए और शांति व भाईचारा का उदाहरण प्रस्तुत किए उससे समाज में अच्छा संदेश जाएगा। ईद का यह पावन पर्व पूरे मुल्क में खुशहाली, तरक्की, अमन-चौन और भाईचारा का पैगाम लेकर आता है। इस मौके पर गोण्डा समाजवादी पार्टी के पूर्व जिलाध्यक्ष आनंद स्वरूप यादव उर्फ पप्पू यादव, समाजवादी नेता लेखराज यादव, शशांक यादव, संतोष यादव, नेबूलाल यादव प्रधान, विजय यादव, अखिलेश यादव, अशोक यादव, राम सुभावन वर्मा, इंदर यादव, इश्तियाक अहमद, आनंद यादव, राकेश कुमार, अर्जुन वर्मा, विजय बहादुर सहित बड़ी संख्या में लोग मौजूद रहे।

जनता के सहयोग से कमल जरूर खिलेगा’ भाजपा समर्थक मंच प्रदेश अध्यक्ष कुमैल अहमद सिद्दीकी

स्टार एक्सप्रेस संवाददाता

अंबेडकरनगर। भारतीय जनता पार्टी नगर पंचायत अशरफ्पुर किछौछा से प्रत्याशी ओमकार गुप्ता ने अपना नामांकन किया साथ में भाजपा समर्थक मंच के प्रदेश अध्यक्ष कुमैल अहमद सिद्दीकी अपने हजारों समर्थकों के साथ नामांकन करने के बाद एक निजी होटल में एक प्रेस वार्ता रखी। जिसमें कई दिग्गज व नेता मौजूद रहे। वहीं भाजपाइयों ने एक साथ अर्थात एक कुटुंब जैसा भाजपा परिवार को बताया और विरोधियों पर निशाना भी साधा। कहा कि इस बार जनपद अंबेडकरनगर में कमल जरूर खीलेगा। आप लोगों का सहयोग चाहिए जो कार्य अधूरे रह गए हैं ।उन कार्यों को पूरा करना, सरकार की योजनाओं को जन-जन तक पहुंचाना, जो योजनाओं से लोग वंचित रह गए हैं उन योजनाओं को शहरी क्षेत्रों से लेकर गांव तक पहुंचाने का हमारा काम रहेगा। भाजपा एक परिवार जैसा है हम सब उसके अभिन्न अंग हैं। इस बार अगर जनता का सहयोग मिला तो नगर निकाय चुनाव और 2024 में एक बार फिर से भाजपा अपना कमल खिलाएगी। इस अवसर पर यशस्वी जिलाध्यक्ष श्री मिथिलेश त्रिपाठी जी, नगर पंचायत प्रभारी पूर्व प्रत्याशी विधानसभा अकबरपुर श्री धर्मराज निषाद जी, युवा मोर्चा जिलाध्यक्ष आकाश वर्मा जी, श्री रूद्र प्रसाद उपाध्याय जी, पूर्व विधायक श्रीमती संजू देवी जी, अनिल वर्मा मोनू जी व अन्य कार्यकर्ता पदाधिकारी की गरिमामई उपस्थिति रही,

आनंद शुक्ला ने छोड़ी सपा, बागी हुए शाहिद

स्टार एक्सप्रेस संवाददाता

गोण्डा। नगर निकाय चुनावों को लेकर जहां राजनीतिक पार्टियां एड़ी-चोटी का जोर लगाने में मशगूल हैं वहीं समाजवादी पार्टी रूठने-मनाने का सिलसिला जारी है। टिकट न मिलने से जहां एक सपा नेता ने बगावत का झंडा बुलंद कर दिया है, वहीं दूसरी ओर एक युवा नेता ने पार्टी छोड़कर भाजपा का दामन थाम लिया है। बहुत ही प्रचलित कहावत है कि जिस ओर जवानी चलती है, उस ओर जमाना चलता है। यह ऐसे समय में फिट बैठ रही है, जब निकाय चुनाव पूरे उफान पर है। नगर पंचायत के चुनाव में पार्टी का उम्मीदवार घोषित करने की समाजवादी नीति पार्टी को चुनावी परिणाम से दूर ले जाती दिखाई दे रही है। पहली बार होने वाले नवगठित धानेपुर नगर पंचायत चुनाव में महज दो ही पार्टियां आमने-सामने थीं, किन्तु पार्टी सिम्बल के खेल में समाजवादी पार्टी का समीकरण फेल होता नजर आ रहा है। बताते चलें कि धानेपुर से कई बार प्रधान रह चुके शाहिद अली का समाजवादी पार्टी द्वारा टिकट काट दिया गया। सिम्बल न मिलने पर बागी हो गये और उन्होंने अपनी पत्नी आसमा को निर्दलीय प्रत्याशी के रूप में चुनावी मैदान में उतार दिया है। वहीं दूसरी तरफ लम्बे समय से पार्टी के सक्रिय कार्यकर्ता रहे आनन्द शुक्ला भी टिकट के दावेदार थे। लेकिन पार्टी ने उनके मंसूबे पर पानी फेर दिया तो उन्होंने साइकिल की सवारी छोड़कर भाजपा का दामन थाम लिया है। क्षेत्र में मजबूत पकड़ और राजनीतिक अनुभव को तरजीह न देकर समाजवादी पार्टी ने शहान अख्तर राईनी पर भरोसा जताते हुए उनकी पत्नी सलीका खानम को अपना उम्मीदवार बनाया है। किसी का साथ छोड़ना और किसी का बागी हो जाना नगर निकाय के इस चुनाव को दिलचस्प बना रहा है।

CMYK

खाटू श्याम ज्वैलर्स का शुभारंभ

संवाददाता, कानपुर। काकादेव कोचिंग मंडी स्थित खाटू श्याम ज्वेलर्स का शुभारंभ हुआ प्रो0 रवि शर्मा ने जानकारी देते हुए बताया कि श्री खाटू श्याम बाबा की कृपा से नवनिर्मित ज्वेलर्स शॉप का आज शुभारंभ हुआ है लोगों से कहना चाहता हूं कि हमारे यहां शुद्ध सोना चांदी से बने जेवरात हमेशा उपलब्ध मिलते हैं सभी प्रकार के फैंसी वैवाहिक ज्वेलरी शुभ कार्य हेतु एक से बढ़कर एक नई डिजाइन के जेवरात बनाए जाते हैं हमारा संकल्प लोगों को अच्छी सेवा प्रदान करना और शुद्ध खरा सोना ही हमारी पहचान है फिर से कहना चाहूंगा आप एक बार आए और अपनी सेवा का अवसर प्रदान करें।

संगम तट पर चला सफाई जागरूकता अभियान

संवाददाता

प्रयागराज। विश्व पृथ्वी दिवस के अवसर पर नेहरू युवा केंद्र प्रयागराज नमामि गंगे युवाओं की सहभागिता के अंतर्गत संगम तट पर जन जगरूकता व स्वच्छता कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में नमामि गंगे जिला परियोजना अधिकारी एषा सिंह, स्पेयरहेड लीडर्स निर्मलकांत, रोहित, रूपशंकर, गंगा दूत गगन,शिवम उपस्थित रहे। कार्यक्रम में टीम ने गंगा के तट पर सफाई अभियान चलाया और नारे लगा कर रैली के माध्यम से जागरूकता की। जिला परियोजना अधिकारी ने बताया विश्व पृथ्वी दिवस का बहुत महत्व है ब्रह्मांड में पृथ्वी गृह को छोड़कर अन्य किसी गृह पर जीवन नहीं है। घटती हरियाली, सूखता पानी,पिघलते ग्लेशियर, बढ़ता तापमान इत्यादि विषयों की वास्तविकता से हम अवगत होते है। यह हम सब की जिम्मेदारी है कुछ न कुछ ऐसा करें जिससे पृथ्वी के उसके प्राकृतिक संसाधनों के उसके जीव जंतुओं के संरक्षण के लिए कुछ जागरूकता बढ़े। हर साल पृथ्वी दिवस को अलग अलग थीम दी जाती है। इस बार इन्वेस्ट इन आवर अर्थ दिया गया है जिसका अर्थ है हमारी पृथ्वी में निवेश करें।

स्पीयर हेड लीडर रूप शंकर और रोहित ने संगम तट पर आइए हुए आम जन मानस को जागरूक किया और प्रोत्साहित करते हुए कहा हम सब पॉलिथीन के उपयोग को नकारें कागज का इस्तेमाल कम करें और रिसाइकल प्रक्रिया को बढ़ावा दें क्योंकि जितनी ज्यादा खराब सामग्री रिसाइकल होगी उतना ही पृथ्वी का कचरा कम होगा। निर्मल कांत ने ज्यादा से ज्यादा पौधा रोपण कर के पर्यावरण संरक्षण करने की अपील की। कार्यक्रम के अंत में गंगादूत गगन ने उपस्थित सभी लोगो को स्वच्छता शपथ दिलाई।

शहर में डग्गामार वाहन बने यमदूत ट्रैफिक पुलिस नदारद

संवाददाता, कानपुर। कानपुर प्रशासन ट्रैफिक व्यवस्था को सुधारने के लिए हर कदम पर तैयार खड़ी रहने की दम भर्ती है बड़ी गाड़ियों का शहर के अंदर दिन में प्रवेश नहीं होता है लेकिन अंदर चल रहे ई-रिक्शा ,लोडर ओवरलोड सामान भरकर शहर के अंदर इधर-उधर सामान भरकर जाते दिखाई पड़ते हैं लेकिन इन पर चौराहे पर लगी ट्रैफिक्क पुलिस आरटीओ को नहीं दिखता यह कितने शहर की जनता के लिए घातक है ऐसा ही मामला कल्याणपुर बिठूर रोड नच 78 कद 1366 लोडर ड्राइवर नशे की हालत में रोड पर गड्ढे को देखकर एकदम से ब्रेक लगाया जिसमें लोडर पर लदे स्टील पाइप सामने आकर गिर गए जब इसकी कवरेज करने गए पत्रकार ने वीडियो बनाया तब नशे में ड्राइवर ने पत्रकारों के साथ देख लेने की बात की कैसे लोडर शहर में व्यस्त चौराहों से निकलकर कल्याणपुर बिठूर रोड पर नशे की हालत में घटना को अंजाम दे रहे हैं व्यस्त रोड पर सामने कोई वाहन नहीं था अन्यथा कई लोग इस लोडर की चपेट में एक्सीडेंट का शिकार हो जाते

एक दूसरे को पहचानने के लिए सभी दलों के प्रत्याशियों में मच गई भारी जोर आजमाइश

संवाददाता, शुक्लागंज, उन्नाव। सभी दल के लोग एक दूसरे को पछाड़नमे चल रहे चाणक्य नीति ।शुरू हो गया धनबल का प्रयोग फ्लैग। नगर पालिका गंगा घाट मैं होने वाले पालिका परिषद व सभासदों के प्रचार में एक दूसरे को मात देने के लिए लगातार घमासान मचा हुआ है, चुनाव जीतने के लिए कुछ दल के लोग धनबल का ज्यादा प्रयोग कर रहे हैं जिसके चलते पालिका परिषद का चुनाव नए मोड़ के लिए पूरी तरह से सज रहा है इस बार पालिका अध्यक्ष सीट के लिए अभी तक लोगों के रुझान को देखते हुए सीधी लड़ाई भाजपा और बसपा में होती दिख रही है वहीं क्षेत्र की जनता, जल निकासी, सफाई व्यवस्था, नाली, खड़ंजा आज के मुद्दे को लेकर लड़ाई लड़ेगी इस बार नगर में जातिवाद से हटकर क्षेत्र के लोग अपने विवेक से अपने मतदान का प्रयोग करेंगे, आपका समाचार पत्र जहां एक रोज पालिका अध्यक्ष प्रत्याशियों के प्रति जनता की रुझान से अवगत करा चुका है बहुत जल्दी वर्णों की समीक्षा करने के बाद नगर की जनता युवा प्रदेश सरकार को अवगत कराएगी, उन्नाव जनपद की महत्वपूर्ण तहसील कि यह सीट किस दल के पास में जाएगी। फ्लिहाल समाचार आपके सामने यह जो समाचार प्रस्तुत किया गया है। यह ग्राउंड रिपोर्ट के आधार पर आधारित है अंतिम समय में मतदाता कौन सी करवट लेगा यह कहना अभी समय के गर्भ में है।

एक्का बिल्सजल प्लांट का भव्य शुभारंभ

संवाददाता, एक्का बिल्सजल प्लांट का भव्य शुभारंभ संपन्न हुआ इस दौरान पत्रकारों को कार्यक्रम की जानकारी देते हुए प्रो0 नीलांशु धवन ने बताया कि आज हमारे नवनिर्मित प्लांट का शुभारंभ मुख्य अतिथि मा0 राकेश सचान कैबिनेट मंत्री के कर कमलों द्वारा फीता काटकर किया गया अतिथि का हम लोगों ने पुष्पगुच्छ देकर उनका स्वागत किया इस दौरान उन्होंने सभी का आभार व्यक्त करते हुए शुभकामनाएं भेंट की जैसा कि दिन प्रतिदिन गर्मी का प्रकोप बढ़ता जा रहा है और ऐसे में लोग सबसे पहले शीतल जल की तलाश करते हैं और अपनी प्यास बुझाते हैं बाजार में कई कंपनियां मिलते-जुलते नामों से लोगों में पानी वितरित कर रही है जबकि हमारे यहां का शुद्ध पेयजल उत्तर प्रदेश सरकार जल विभाग के द्वारा 100 प्रतिशत प्रमाणित है इसमें किसी भी प्रकार के हानिकारक बैक्टीरिया केमिकल आपको नहीं मिलेंगे क्योंकि इस जल की शुद्धता हमारे यहां पूरी तरीके से प्रयोगशाला से गुजरने के बाद लोगों तक पहुंचाया जाता है हमारी शुद्धता ही हमारी पहचान है शुरुआत मे 250 उस से 1 लीटर तक की बोतल पैकिंग में बाजार में उपलब्ध कराई जाएगी मांग के अनुसार लोगों तक और भी क्षमता वाली पैकिंग शुद्ध जल की व्यवस्था की जाएगी हमारा यह प्लांट चकेरी अहिरवा सिटी बस चार्जिंग स्टेशन चेत नगर मे स्थित है लोगों से कहना चाहूंगा कि आप स्वयं जांचे परखे और शुद्ध जल का अपने जीवन में प्रयोग करें और हमेशा स्वस्थ रहें हमारे पानी के ऑर्डर के लिए इस नंबर पर संपर्क कर सकते हैं 8318796165 इस दौरान मुख्य रूप से मुकेश धवन नीलमा धवन दीपक धवन अनमोल धवन सहित क्षेत्र के गणमान्य लोग उपस्थित रहे हैं।

वार्ड नं0 3 से कांग्रेस के उम्मीदवार सचिन कुमार ने किया नामांकन

संवाददाता

हापुड़। जनपद हापुड़ में नगर निकाय चुनाव के लिए नामांकन की प्रक्रिया सोमवार से की जा रही है और दूसरे चरण के 11 मई को जनपद में चुनाव होने हैं वैसे ही प्रत्याशियों की दिलो की धड़कन बढ़ती ही जा रही है तो वही रविवार को हापुड़ नगर पालिका परिषद के वार्ड नंबर 3 से कांग्रेस उम्मीदवार सचिन कुमार ने अपनी माता जी व समर्थकों के साथ एसएसवी इंटर कॉलेज में नामांकन पत्र दाखिल किया तो वही मीडिया से बात करते हुए सचिन कुमार ने बताया कि वार्ड नंबर 3 में साफ-सफाई अधूरी पड़ी टूटी सड़कें व पानी से संबंधित समस्याओं का समाधान कर विकास करेंगे और सरकारी योजनाओं का लाभ लोगों को दिलाएंगे। इस मौके पर शहर अध्यक्ष अभिषेक गोयल, सेवादल जिला अध्यक्ष अंकित शर्मा, विक्की शर्मा, बबलू सैनी, प्रेमचन्द,विक्रम सिंह परविंद्र कुमार, अनिल कुमार, रामपाल सिंह, धर्म सिंह, सुनील कुमार,विपिन कुमार आदि लोग साथ रहे।

धूमधाम से मनाई गयी ईद

संवाददाता

प्रयागराज। शुक्रवार को ईद के चांद के दीदार की खबर मिलते ही लोगों का एक दूसरे को मौखिक व फेसबुक ट्विटर एमएमएस और वाट्सऐप पर मुबारकबाद देने का संदेश देर रात से शुरु होकर ईद की रात तक जारी रहा। ईद हो और सेंवई की बात न हो तो यह बेईमानी होगी ।ईद के साथ सेंवई की मिठास जहां मुस्लिमों को तो भाती ही हैं वहीं बड़ी संख्या में हिन्दू भाई हैं जो ईद की सेंवई के लिए बेताब रहते हैं।

मुस्लिमों को भी अपने हिन्दू भाईयों का इस खास दिन पर इंतेजार रहता है। मशीनों से मैदे की बनी सादी सेंवई में मेवे चीनी की चाशनी और दूध खोवा का सही तालमेल ही उसे लजीज बनाता है। सादी दूध वाली सेंवई के अलावा केमामी, शीरब्रंज, ईरानी, मुगली, अफगानी, मुम्बई की मशहूर शीरकोरमा आदि प्रकार की सेंवई का लुत्फ उठाने को लोग दिन भर एक दूसरे के आते जाते रहे ।वहीं मीठे दही बड़े,बिरयानी कबाब व कोरमा से भी लोगों ने जायका लिया ।बहादुरगंज बड़ा दायरा शाही मस्जिद के पेश इमाम मुफ्ती मोहम्मद मुकर्रब अली उर्फ अली मियाँ ने नमाज पढ़ाई। इससे पूर्व मस्जिद काजी साहब बख्शी बाजार में नमाज व खुत्बे के बाद मस्जिद के मुतावल्ली शाहरुख काजी द्वारा इमाम ए जमात मौलाना जवादुल हैदर रिजवी, मोअज्जिन अमजद हुसैन पप्पू, शहवेज, सैय्यादैन नकवी व अन्जुम मिर्जा को तोहफा भेंट कर सम्मानित किया गया। उम्मुल बनीन सोसायटी के महासचिव सैय्यद मोहम्मद अस्करी के अनुसार शाहरुख काजी की ओर से मस्जिद में नमाज अदा करने आए सभी नमाजीयों को इत्र लगा कर व एक एक रुमाल भी भेंट किया गया। मस्जिदें नूर दायरा शाह अजमल में इन्तेजामिया कमेटी की ओर से एक माह तक रमजान के दौरान छोटे बच्चों में नमाज रोजा और दीनी सवालात के सही जवाब देने वालों को पुरस्कृत किया गया। मस्जिद काजी साहब बख्शी बाजार में मस्जिद के इमाम ए जमात मौलाना जवादुल हैदर रिजवी ने अपने खुत्बे में कहा की हर बालिग पर फित्रा अदा करना वाजिब है। एक माह में खाएं जाने वाले गेंहू ,चावल या आंटा के तीन किलो के हिसाब से नमाज से पहले फित्रा निकालना चाहिये ताकि हमसे कमतर भी ईद मना सके। अपनी ख्वाहिशात को बालातर कर जरुरतमन्दों की इमदाद करो ताकि हमारे और गरीब गुरबा के बीच फर्क न रहने पाए और वह भी ईद उल फित्र अच्छे से मना सके।

सपा राष्ट्रीय अध्यक्ष के गठबंधन को लेकर दिए गए बयान के बाद सपा ने की बैठक

संवाददाता

❑ सपा पार्टी के झंडे व बैठने को लेकर भ्रमित खबर फैला रहे लोगों पर होगी सख्त कार्रवाई–अनिल आजाद

हापुड़। जनपद हापुड़ के समाजवादी पार्टी के जिला कार्यालय पर सपा जिला अध्यक्ष देवेंद्र जाखड़ की अध्यक्षता में सपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव द्वारा नगर निकाय चुनाव में गठबंधन को लेकर मीडिया द्वारा दिए गए बयान को लेकर अति आवश्यक बैठक सम्पन्न हुई। जिसका संचालन जिला उपाध्यक्ष संजय यादव ने किया। वही जिला अध्यक्ष देवेंद्र जाखड़ ने कहा कि राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव द्वारा मीडिया को दिए गए बयान के अनुसार हमारा कोई गठबंधन नहीं है हम स्थानीय लोगों को निराश नहीं कर सकते जो जनपद की तीनों निकाय की पालिका है उन पर जो प्रत्याशी घोषित किए हैं वह भी अपने सिंबल सपा के साइकिल के चुनाव चिन्ह पर चुनाव लड़ेंगे वहीं सपा से हापुड़ नगर पालिका परिषद का चुनाव लड़ रही सुनीता आजाद के पति अनिल आजाद ने कहा है जो मेरी पत्नी को बैठने को लेकर अन्य पार्टी द्वारा भ्रमित खबर कर अटकले लगाई जा रही है ऐसे लोगों पर मैं सख्त कार्रवाई करवाना चाहूंगा और जिला अध्यक्ष ने असपा से प्रत्याशी पूजा द्वारा अपने चुनाव कार्यालय पर प्रचार में सपा के झंडे व बैनर लगाने पर गठबंधन के सपा का प्रत्याशी बताकर आम जनता को गुमराह करने पर विरोध कानूनी कार्रवाई करने को कहा। इस अवसर पर जिला अध्यक्ष देवेन्द्र जाखड ने कहा कि नगर पालिका परिषद हापुड अध्यक्ष पर सुनिता आजाद पत्नी अनिल आजाद समाजवादी प्रत्याशी है। इस सीट पर असपा व राष्ट्रीय लोक दल का समाजवादी पार्टी से कोई समझौता नहीं है। हम अपने प्रत्याशी को अपने झण्डे बैनर से चुनाव लड रहे है यदि असपा के प्रत्याशी ने अपने प्रचार में सपा कें झंडे ओर बैनर लगाने बन्द नहीं किये तो उनके खिलाफ शिकायत की जायेगी ।

वार्ड नं0 11 से सपा से नीरज कुमार व कांग्रेस से जय भगवान ने किया नामांकन पत्र दाखिल

संवाददाता, हापुड़। जनपद हापुड़ में नगर निकाय चुनाव का बिगुल बजने के बाद से सभी पार्टियों के प्रत्याशी अपना नामांकन पत्र दाखिल कर रहे हैं तो कुछ प्रत्याशी मनचाहा पार्टी से टिकट ना मिलने पर दल बदल की राजनीति कर अन्य पार्टियों से सिंबाल प्राप्त कर नामांकन पत्र दाखिल करते हुए नजर आ रहे हैं तो वही हापुड़ नगर पालिका परिषद वार्ड नंबर 11 से सपा पार्टी के प्रत्याशी नीरज कुमार व जय भगवान ने बसपा पार्टी से सिंबल ना मिलने पर कांग्रेस पार्टी से अपने समर्थकों के साथ नामांकन पत्र दाखिल किया और अपनी अपनी पार्टी को जिताने का संकल्प लिया ।वहीं समाजवादी पार्टी के प्रत्याशी नीरज कुमार ने बताया कि वार्ड के लोगों की जो समस्या है उनका समाधान किया जाएगा और अपने वार्ड में सर्व समाज के लोगों का कार्य करेंगे वार्ड में साफ-सफाई,टूटी सड़कें व पानी से संबंधित समस्याओं का समाधान कर वार्ड में विकास का कार्य करेंगे। वार्ड के लोग हमें बहुत प्यार दे रहे हैं और हमे पूरी आशा है अबकी बार वार्ड नंबर 11 से जीत कर सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाओं का लाभ जनता तक पहुंचाएंगे।

43 विवादित जोड़े आपसी कलह भुलाकर साथ रहने को हुए राजी

संवाददाता, उन्नाव। जनपद के विभिन्न थानों में स्थित महिला हेल्प डेस्क में पति-पत्नी के विवादित जोड़ों को बुलाया गया। परिवार परामर्श केन्द्र, परिवार परामर्शदाताओं एवं महिला हेल्पडेस्क की टीम द्वारा उनकी काउंसलिंग करते हुए उनके बीच उपजे विवाद को खत्म कराया गया, और परिवार को टूटने से बचाया। तदोपरान्त महिला थाना से 12, थाना अजगैन से 7, थाना दही से 5, परिवार परामर्श केन्द्र व थाना अचलगंज से 4-4, थाना गंगाघाट, थाना हसनगंज व थाना बेहटा मुजावर से 2-2, थाना बांगरमऊ, थाना असोहा, थाना कोतवाली सदर, थाना आसीवन, थाना सफीपुर से 1-1 जोड़े को बिना विवाद साथ रहने के वादे के साथ विदा किया गया। उपरोक्त पुनीत कार्य में डा आशीष श्रीवास्तव प्रभारी परिवार परामर्श समिति एवं सलाहकारो मे डॉ एस0के0 पाण्डेय, डा0 शशि रंजना अग्निहोत्री, सहयोगी अकिंत रघुवंशी व शिवेन्द्र सिंह बांगरमऊ हेल्प हेस्क से अबसार अली खांन एंव डा सगीर अहमद खांन एवं संबन्धित थानों व परिवार परामर्श केन्द्र टीम से महिला थाना प्रभारी श्रीमती पुष्पा सिंह, म0आ0 मीनू सोलंकी का विशेष योगदान रहा।

सरकार स्व.उमेश पाल के परिजनों के साथ है : डिप्टी सीएम

स्वर्गीय उमेश पाल के हत्यारों की जो सजा मिली है उनके कर्मों का परिणाम है : केशव प्रसाद

संवाददाता

प्रयागराज। उत्तर प्रदेश के उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने रविवार को भाजपा नेता एडवोकेट स्वर्गीय उमेश पाल के आवास में पहुंचकर उनके चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित की। उनके परिजनों से भेंट करते हुए कहा कि भारतीय जनता पार्टी और उत्तर प्रदेश की सरकार हर संभव स्वर्गीय उमेश पाल के परिजनों के साथ ताकत बनकर खड़ी रहेगी। उन्होंने कहा कि उत्तर प्रदेश सरकार ने यूपी के अंदर गुंडा माफियाओं के खिलाफअभियान छेड़ रखी है जिससे कोई अपराधी और गुंडा बच नहीं सकता और न ही छोड़ा जाएगा। ऐसे गुंडे और मवाली समाज के लिए और समाज के सम्मानित लोगों के लिए अभिशाप है ।आगे कहा कि उमेश पाल के हत्यारों की सजा जो मिली है उनके कर्मों का फल है जो जैसा कर्म करेगा उसको ऐसे ही भुगतना पड़ेगा उत्तर प्रदेश में अब योगी सरकार है उनके साथ पूर्व कैबिनेट मंत्री सिद्धार्थ नाथ सिंह विधायक हर्षवर्धन बाजपेई, विधायक सुरेंद्र चौधरी, भाजपा महापौर के प्रत्याशी गणेश केसरवानी,क्षेत्रीय उपाध्यक्ष अवधेश चंद्र गुप्ता, वरुण केसरवानी,राजेश केसरवानी, रोहित पप्पू पांडे, शुभम बाला, पवन मिश्रा आदि मौजूद रहे।

अधिवक्ता पर फायर कर जानलेवा हमला करने वाले दो युवक गिरफ्तार

संवाददाता, शुक्लागंज,उन्नाव। गंगाघाट कोतवाली क्षेत्र के राजधानी मार्ग स्थित श्यामा प्रसाद मुखर्जी स्टेडियम के पास कंचन नगर निवासी एक अधिवक्ता बीते 13 अप्रेल की सुबह कार से उन्नाव कचेहरी जा रहा था, तभी फेरलेन स्थित श्यामा प्रसाद मुखर्जी स्टेडियम के पास बाइक सवार बदमाशों ने कार रोक कर वकील को गोली मार दी। जिससे अधिवक्ता गंभीर रूप से घायल हो गया। परिजनों ने उसे इलाज के लिये कानपुर के एक निजी अस्पताल में भर्ती कराया था। अधिकारियों ने घटनास्थल का निरीक्षण किया है। कंचन नगर निवासी रवि गौतम पुत्र श्रीराम गौतम अधिवक्ता हैं। बीते 13 अप्रेल गुरूवार की सुबह वह अपनी कार से उन्नाव कचेहरी जा रहे थे। पुराने विवाद को लेकर बाइक सवार दो बदमाशों ने फेरलेन डीबीएस स्टेडियम के पास उनकी कार रोक ली और अधिवक्ता को गोली मार गई थी। जिससे वह गंभीर रूप से घायल हो गया था। घटना को अंजाम देने के बाद बाइक सवार युवक मौके से भाग निकले थे। राहगीरों ने घायल के परिजनों को जानकारी दी थी। जिस पर अधिवक्ता का भाई मौके पर पहुंचा और घायल को कानपुर के एक निजी अस्पताल मे भर्ती कराया था। इसी कड़ी मे दो पुलिस ने दो युवकों को गिरफ्तार किया है। पुलिस के अनुसार उप निरीक्षक विनय कुमार व उ0नि0 राजीव कुमार मय हमराह फोर्स व सर्विलांस सेल के संयुक्त प्रयास से घटना कारित करने वाले आशीष पुत्र रामसेवक निवासी खुदायपुर भटपुरवा जनपद रायबरेली और हरकेश पुत्र स्व राम दास निवासी बरारा बुजुर्ग डलमऊ जनपद रायबरेली को बीते शुक्रवार को मय घटना में प्रयुक्त एक तमंचा 315 बोर मय दो जिंदा कारतूस व घटना में प्रयुक्त मोटर साइकिल सुपर स्पलेन्डर एवं मोबाइल के साथ प्रखर जी महाराज मोड़ से गिरफ्तार किया गया है। प्रेस कॉन्फ्रेंस कर अपर पुलिस अधीक्षक शाशी सिंह शेखर ने बताया कि रवी, सर्वेश व प्रदीप पुत्रगण श्रीराम नि0गण कंचन नगर तीन सगे भाइयों के मध्य पैतृक संपत्ति को लेकर विवाद है। जिसमें सर्वेश उपरोक्त द्वारा अपने पिता के साथ मिलकर रवि व प्रदीप को बेदखल करने के लिये वाद दायर किया गया था। जिससे रवी व सर्वेश के मध्य कई बार विवाद हुआ। करीब 1 वर्ष पूर्व दिनांक 28.04.2022 को जनपद रायबरेली के थाना खीरो क्षेत्रांतर्गत एक पारिवारिक वैवाहिक कार्यक्रम में रवी व सर्वेश के मध्य विवाद हुआ था, जिसमें अभियुक्त आशीष द्वारा सर्वेश के पक्ष से रवी उपरोक्त के साथ मारपीट की गई, जिसके संदर्भ में थाना खीरों में मु0अ0सं0 211/22 धारा 147/323/504/506 भा0दं0वि0 बनाम सर्वेश, आशीष व तीन अज्ञात के विरुद्ध पंजीकृत है। इसी रंजिश के चलते अभियुक्त आशीष ने अपने दोस्त हरकेश उपरोक्त के साथ मिलकर रवी उपरोक्त पर दिनांक 13.04.2023 को जानलेवा हमला किया गया था। अभियुक्तगण को गिरफ्तार कर मुकदमा उपरोक्त में धारा 34 भा0दं0वि0 व 3/25/27 आयुध अधिनियम की बढ़ोत्तरी की गई है। गिरफ्तार करने वाली पुलिस टीम मे उ0नि0 विनय कुमार, उ0नि0 राजीव कुमार, का0 आदित्य कुमार, का0 शुभम कुमार, का0 गिरीश कुमार, का0 यशवीर सिंह व सर्विलांस टीम रहे।

देश में जमकर हो रहा खाने के तेल का इंपोर्ट

एजेंसी, नयी दिल्ली। खाने के तेल का आयात जमकर बढ रहा है और मार्च में खाद्य तेल यानी एडिबल ऑयल के इंपोर्ट के आंकडे में बडा इजाफा देखा गया है। द सॉल्वेंट एक्सट्रैक्टर्स एसोसिएशन ऑफइंडिया ने एक बयान में कहा है कि मार्च 2023 में एडिबल ऑयल का आयात 8 फीसदी बढकर 11.35 लाख टन पर रहा है। मार्च में खाने के तेल का आयात 11,35,600 टन रहा है और इससे पिछले साल की समान अवधि में एडिबल ऑयल का इंपोर्ट 10,51,698 टन पर रहा था। हालांकि खाने के तेल के अलावा गैर-खाद्य तेल यानी नॉन एडिबल ऑयल का आयात मार्च 2023 में 36,693 टन पर रहा है और ये मार्च 2022 में घट गया है। मार्च 2022 में गैर-खाद्य तेल का आयात 52,872 टन का रहा था। द सॉल्वेंट एक्सट्रैक्टर्स एसोसिएशन ऑफ इंडिया ने मांग की है कि क्रूड पाम तेल और रिफाइंड पाम तेल के ऊपर लगने वाली ड्यूटी के अंतर में इजाफा किया जाए जिससे घरेलू ऑयल रिफाइनरीज को सुरक्षित और संरक्षित रखा जा सके। नवंबर 2022 से मार्च 2023 के पांच महीनों के दौरान खाने के तेल का आयात बढकर 69,80,365 टन पर आ गया है जो कि इससे पिछले ऑयल मार्केटिंग वर्ष की नवंबर-मार्च अवधि के दौरान 56,42,918 टन पर रहा था। ऑयल मार्केटिंग इयर नवंबर से अक्टूबर के दौरान रहता है।

इलेक्ट्रिक वाहनो को प्रमोट कर रही सरकार

ईवी के फैक्टरी प्राइस पर मिलेगी 15 प्रतिशत सब्सिडी, रोड टैक्स और रजिस्ट्रेशन में भारी छूट

संवाददाता, लखनऊ। प्रदूषण नियंत्रण की कवायद के तहत उत्तर प्रदेश की योगी सरकार इलेक्ट्रिक चलित वाहनो की खरीद पर कई रियायतें देने का विचार कर रही है। अमल भी शुरू हो गया है। आधिकारिक सूत्रों ने बुधवार को बताया कि सरकार राज्य में पर्यावरण को स्वच्छ और हरा-भरा रखने के लिए पेट्रोल-डीजल की बजाए 100 प्रतिशत ग्रीन फ्यूल यानी इलेक्ट्रिक व्हीकल्स की खरीद को प्राथमिकता दे रही है। 2030 तक सभी सरकारी विभागों में उपयोग किए जाने वाले वाहनों को चरणबद्ध तरीके से ईवी में तब्दील करने का लक्ष्य रखा गया है और इस लक्ष्य को हासिल करने के लिए तैयारी भी शुरू कर दी गई है। सरकार की ओर से निर्देश दिए गए हैं कि सरकारी विभाग बिना टेंडर के भी नामांकन के आधार पर ईवी वाहन क्रय कर सकते हैं, जबकि ईवी वाहनों के क्रय पर आवश्यकता के अनुसार तय अधिकतम सीमा से अधिक भी खर्च किया जा सकता है। उत्तर प्रदेश 2030 से पहले ही इस लक्ष्य को हासिल करके सरकारी विभागों में शत प्रतिशत ईवी वाला देश का पहला राज्य बन सकता है। उल्लेखनीय है कि प्रदेश में ईवी व्हीकल्स को प्रोत्साहित करने के लिए सरकार ने 14 अक्टूबर को उत्तर प्रदेश इलेक्ट्रिक व्हीकल विनिर्माण एवं गतिशीलता नीति 2022 को नोटिफ़ाई किया था। इसके तहत सरकार ने ईवी की खरीद पर तीन साल तक टैक्स और रजिस्ट्रेशन फीस से छूट प्रदान की है। प्रदेश में निर्मित ईवी की खरीद पर यह छूट पांच साल तक मान्य होगी।मुख्य सचिव दुर्गा शंकर मिश्र द्वारा जारी आदेश में विभागों एवं उनके अधीन कार्यरत संस्थाओं को निर्देश दिया गया है कि ईवी पॉलिसी के अनुरूप 2030 तक शत प्रतिशत वाहनों को ईवी वाहनों में तब्दील किया जाए। सरकारी अभिकरणो से बिना निविदा के नामांकन के आधार पर पर ईवी वाहन क्रय किया जाए तथा शासकीय आयोजन के लिए वाहनों के क्रय पर प्रचलित ऊपरी अधिकतम सीमा को शिथिल किया जाए। परिवहन विभाग के एक अधिकारी के अनुसार अभी तक सरकारी वाहनों की खरीद जेम पोर्टल पर टेंडर के माध्यम से होती थी लेकिन ईवी कंपनियां इसमें रजिस्टर्ड नहीं हैं इसीलिए पॉलिसी में व्यवस्था दी गई कि सरकारी अभिकरणो जैसे राजस्थान इलेक्ट्रॉनिक्स इंस्ट्रूमेंट लि. आरईआईएल व एनर्जी एफिशिएंसी सर्विसेज लि.ईईएसएल इत्यादि से बिना टेंडर के नामांकन के आधार पर ईवी क्रय किए जा सकेंगे। इलेक्ट्रिक व्हीकलपेट्रोल डीजल की तुलना में महंगे हैं इसलिए सरकार ने वाहनों की खरीद पर ऊपरी अधिकतम खर्च सीमा पर भी छूट दी है। मुख्य सचिव ने विभागों को निर्देश दिए हैं कि राज्य सरकार द्वारा शासकीय विभागों में कार्यरत कर्मचारियों को वाहनों के लिए दिए जाने वाले एडवांस में भी ईवी को शामिल किया जाए। तय समय के अंदर विभाग इसपर कार्यवाही करें।ये कदम इलेक्ट्रिक व्हीकल्स की खरीदारी को प्रोत्साहित करने के लिए उठाया गया है। ईवी पॉलिसी में भी प्रावधान किया गया था। मूल उद्देश्य है कि सरकारी कर्मचारी ईवी को प्राथमिकता देंगे तो आम जनता भी प्रेरित होगी। प्रदेश सरकारें अपने अधिकारियों व कर्मचारियों को मोटर व्हीकल, स्कूटर या बाइक की खरीद के लिए अग्रिम भुगतान करती है जिसे अधिकारी या कर्मचारी को निर्धारित समय में वापस करना होता है। कार, स्कूटर या बाइक खरीदने के लिए यह अग्रिम राशि अलग-अलग निर्धारित है। यूपी में ईवी को बढ़ावा देने के लिए योगी सरकार ने तीन साल तक रोड टैक्स और रजिस्ट्रेशन शुल्क पर 100 प्रतिशत तक छूट देने का निर्णय लिया है। तीन वर्ष की यह गणना 14 अक्टूबर 2022 से की जाएगी। अगर कोई व्यक्ति यूपी में बने इलेक्ट्रिक व्हीकल्स खरीदता है तो उसे पांच वर्ष तक की छूट मिलेगी। ईवी पर केंद्र सरकार की ओर से भी छूट दी जा रही है। राज्य सरकार की छूट केंद्र सरकार की सब्सिडी से अलग होगी।केंद्र और राज्य सरकार की ओर से मिलने वाली छूट की वजह से टू व्हीलर की कीमतें 20 हजार और कारों की कीमत करीब एक लाख रुपए तक कम होने की संभावना है। यूपी में सरकार की नीति के मुताबिक ईवी के फैक्टरी प्राइस पर 15 प्रतिशत सब्सिडी दी जाएगी। ईवी को लेकर सरकार के प्रयासों के नतीजे देखने को मिल रहे हैं। ऑडिट एवं कंसल्टिंग फर्म केपीएमजी और इंडस्ट्री बॉडी सीआईआई की ज्वॉइंट रिपोर्ट में कहा गया है कि ईवी को अपनाने को लेकर अब लोगों में अनिश्चितता जैसी बात नहीं है। सरकार की ओर से बुनियादी ढांचे के विकास, प्रोत्साहन और नए इलेक्ट्रिक वाहन मॉडल पेश किए जाने के साथ देश में ईवी की बिक्री चालू दशक की बची हुई अवधि में बढ़ने की उम्मीद है। इस बिक्री में दोपहिया और तिपहिया वाहनों का दबदबा रहने की संभावना है।

भारत के साथ मुक्त व्यापार समझौता अधिक व्यापक होना चाहिए : इजराइल मंत्री

एजेंसी, नयी दिल्ली। इजरायल और भारत के बीच प्रस्तावित मुक्त व्यापार समझौता (एफ्टीए) को जितना संभव हो, उतना अधिक व्यापक होना चाहिए। इजरायल के अर्थव्यवस्था और उद्योग मंत्री एम के नीर बरकत ने मंगलवार को यह बात कही। मंत्री ने कहा कि वह दोनों देशों के बीच एफ्टीए के संबंध में भारतीय पक्ष के साथ चर्चा करेंगे। इसके लिए एक दशक से अधिक समय से बातचीत जारी है। बरकत ने उद्योग मंडल सीआईआई के एक कार्यक्रम में कहा, मैं आपके मंत्री के समक्ष मुक्त व्यापार समझौते का स्वभाविक रूप से विस्तार करने, कौशलपूर्ण ढंग से कारोबार का विकास करने और ज्ञान तथा अनुभव को जितना संभव हो उतना साझा करने का प्रस्ताव करूंगा। उन्होंने कहा कि दोनों पक्षों को प्रस्तावित मुक्त व्यापार समझौते के लिए पूरक क्षेत्रों पर ध्यान देना होगा, जहां भारत और इजराइल प्रतिस्पर्धात्मक लाभ रखते हैं। बरकत ने कहा, अधिक से अधिक व्यापार के लिए इसे (एफटीए) जितना संभव हो, उतना व्यापक होना चाहिए, क्योंकि मुक्त व्यापार लोगों को आपस में जोडता है उन्होंने कहा कि इजराइल कृषि प्रौद्योगिकी, स्वास्थ्य प्रौद्योगिकी और खाद्य प्रौद्योगिकी जैसे क्षेत्रों में बहुत अधिक योगदान कर सकता है और व्यापार में दोनों तरफ से देने के लिए काफी कुछ है।

सर्वाधिक आबादी वाले देश का रुतबा छिनने से चिढ़ा चीन

भारत के नंबर वन बनने पर कसा तंज

एजेंसी, बीजिंग। भारत की आबादी 142.86 करोड़ हो गई है और वह चीन को पीछे छोड़कर दुनिया का सबसे अधिक जनसंख्या वाला देश बन गया है। सर्वाधिक आबादी वाले देश का रुतबा छिनने से चीन चिढ़ गया है। चीन ने भारत के नंबर वन बनने पर तंज कसते हुए इसे हकीकत से परे सिर्फ आंकड़ों की सफलता बताया है। चीन ने इस रिपोर्ट को तवज्जो न देते हुए कहा कि उसके पास अब भी 90 करोड़ से अधिक लोगों का गुणवत्ता वाला मानव संसाधन है। संयुक्त राष्ट्र जनसंख्या कोष के ताजा आंकड़ों के अनुसार 142.86 करोड़ आबादी के साथ भारत ने इस मामले में चीन को पीछे छोड़ दिया है और सर्वाधिक जनसंख्या वाला देश बन गया है। चीन की आबादी 142.57 करोड़ है और वह दुनिया का दूसरा, सबसे अधिक जनसंख्या वाला देश हो गया है। इस रिपोर्ट पर प्रतिक्रिया देते हुए चीन के विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता वांग वेनबिन ने यहां संवाददाता सम्मेलन में कहा, ''मैं आपको बताना चाहता हूं कि जनसंख्या लाभांश संख्या पर नहीं, गुणवत्ता पर निर्भर करता है। उन्होंने कहा कि अमेरिका के बाद दुनिया की दूसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था चीन के लिए जनसंख्या महत्वपूर्ण है और प्रतिभा भी महत्वपूर्ण है। उन्होंने कहा, ''चीन की आबादी 1.4 अरब से अधिक है। काम करने की आयु वाले लोगों की संख्या 90 करोड़ के करीब है और आबादी का यह हिस्सा औसत 10.5 वर्ष पढ़ाई करने वाला है। वांग ने कहा, ''जैसा कि हमारे प्रधानमंत्री ली क्विंग ने कहा है कि हमारा जनसंख्या लाभांश कम नहीं हुआ है और हमारा प्रतिभा लाभांश तेजी से बढ़ रहा है। यूएनएफपीए की नयी रिपोर्ट के अनुसार भारत की 25 प्रतिशत आबादी 0 से 14 साल के आयु वर्ग में है। उसकी 18 प्रतिशत जनसंख्या 10 से 19 वर्ष, 26 प्रतिशत जनसंख्या 10 से 24 वर्ष, 68 प्रतिशत जनसंख्या 15 से 64 वर्ष के आयुवर्ग में और सात प्रतिशत आबादी 64 वर्ष से ऊपर उम्र वाली है।

प्राकृतिक आपदाओं से फसल हानि की भरपाई करे सरकार

संवाददाता, लखनऊ। भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी की राष्ट्रीय कार्यकारिणी के सदस्य डा. गिरीश ने कहा कि फसल खरीद सीजन में केन्द्र सरकार और कई राज्य सरकारों के किसान विरोधी करतबों से किसान बरवादी की ओर धकेले जा रहे हैं। पीड़ित किसान उद्वेलित हैं, सड़कों पर उतर रहे हैं, मगर सरकारों पर अभी तक कोई प्रभाव नहीं दिखता। हाल ही में कई बा मौसम बदला और आंधी, बारिश और ओलों ने किसानों की फसल पर कहर ढाया। गेहूं सरसों आलू आदि बुरी तरह प्रभावित हुये। किसानों की उपज की पैदावार घट गयी, जिस पर कि वे पूरी और महंगी लागत लगा चुके थे। अब इन उपजों की समर्थन मूल्य पर खरीदारी करना तो दूर सरकार ने उनको कम मूल्य पर खुले बाजार में बेचने को बाध्य कर दिया है। इतना ही नही केन्द्र सरकार ने गेहूं के समर्थन मूल्य में 5 रुपये 50 पैसे से लेकर 31 रुपए 87 पैसे प्रति कुंतल तक की कटौती कर दी है। जबकि किसान प्रति कुंतल रुपये 50 हजार की भरपाई की मांग कर रहे हैं। खरीद केन्द्र और सरकारी खरीद दोनों ठप पड़े हैं। सरसों में भारी नमी और धब्बे बता कर समर्थन मूल्य से काफी कम कीमत पर खरीदा जा रहा है और किसान ठगा महसूस कर रहा है। सरकार के पिट्ठुओं द्वारा संचालित फसल बीमा कंपनियाँ और सरकारी अनुदान देने वाले विभाग किसानों को अलग पलीता लगा रहे हैं। डा. गिरीश ने कहा कि समाजवादी देशों में फसल हानि की भरपाई की जाती है, और यहाँ आपदा का भार उन पर अलग से डाला जारहा है। अतएव लगभग हर जगह किसान उद्वेलित हैं। पंजाब के किसानों ने तो ट्रैक ही जाम कर अपनी आवाज उठाई। हरियाणा, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, बिहार, छत्तीसगढ़ आदि सभी जगह से किसानों की कार्यवाहियों की खबरें मिल रहीं हैं। सरकार खतरनाक खामोशी अख्तियार किये हुये है। हम मांग करते हैं कि गेहूं के समर्थन मूल्य में की गयी कटौती रद्द की जाये, गेहूं, सरसों आदि न्यूनतम समर्थन मूल्य पर खरीदे जायें, फसल हानि की भरपाई किसानों की मांग के अनुसार की जाये, फसल बीमा कंपनियों की लूट रोकी जाये तथा प्राकृतिक आपदा से हुयी फसल हानि की भरपाई सरकार करे, आपदा की आफत किसानों के कंधों पर लादना बन्द करे।

शाखा से मुख्यालय को दी जाने वाली सेवा पर लगेगा 18 प्रतिशत जीएसटी एएआर

एजेंसी, नयी दिल्ली। किसी कंपनी के अलग राज्यों में स्थित शाखा कार्यालय के कर्मचारियों की तरफसे उसके मुख्यालय को मुहैया कराई जाने वाली सेवाएं 18 प्रतिशत जीएसटी के दायरे में आएंगी। एडवांस रूलिंग प्राधिकरण (एएआर) ने यह व्यवस्था दी है। माल एवं सेवा कर (जीएसटी) संबंधित विवादों में फैसला करने वाले निकाय एएआर ने प्रॉफि सॉल्यूशंस प्राइवेट लिमिटेड के मामले में यह निर्णय दिया है। कंपनी ने एएआर से यह जानने की कोशिश की थी कि मुख्यालय को दी जाने वाली सेवाएं भी क्या जीएसटी के दायरे में आएंगी। प्रॉफिसॉल्यूशंस का कर्नाटक में पंजीकृत कार्यालय है जबकि तमिलनाडु में उसका शाखा कार्यालय है। शाखा कार्यालय इंजीनियरिंग, डिजाइन एवं लेखा जैसी सेवाएं अपने मुख्यालय को मुहैया कराता है। कंपनी की दलील थी कि कर्मचारी कंपनी में नियुक्त हुए हैं और वे मुख्यालय या शाखा कार्यालय के बजाय पूरी कंपनी के लिए काम करते हैं। हालांकि एएआर ने कहा कि जीएसटी प्रावधानों के मुताबिक भौतिक उपस्थिति रखने वाले हरेक राज्य में जीएसटी पंजीकरण कराना जरूरी होता है। अगर एक ही संस्था के दो पंजीकरण नंबरों के बीच सेवाओं की आपूर्ति होती है तब भी उस पर कर लगेगा। इसका मतलब है कि किसी कंपनी के अलग राज्यों में स्थित शाखा कार्यालय के कर्मचारियों की तरफ से उसके मुख्यालय अथवा मुख्यालय से शाखा को कर्मचारियों द्वारा दी जाने वाली सेवाएं जीएसटी के दायरे में आएंगी। प्राधिकरण ने कहा, अगर मुख्यालय एवं शाखा कार्यालय के पंजीकरण अलग-अलग हैं तो एक से दूसरे को दी जाने वाली सेवाओं पर जीएसटी देनदारी बनेगी। एएमआरजी एंड एसोसिएट्स के वरिष्ठ साझेदार रजत मोहन ने कहा कि एएआर का यह निर्णय एक ही पैन नंबर पर पंजीकृत दो अलग-अलग जीएसटी पंजीकरणों के बीच सेवाओं की आपूर्ति पर 18 प्रतिशत की दर से कर लगने की व्यवस्था देता है। हालांकि कारोबार पर कर जोखिम बाए बगैर इस कर की गणना के तरीके पर स्थिति साफनहीं है।

ब्लू स्टार लिमिटेड ने 2023 के लिए लॉन्च की रूम एसी की बेस्ट-इन-क्लास अफोर्डेबल नई रेंज

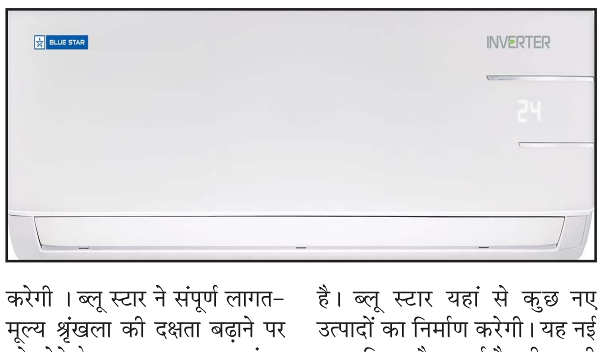

संवाददाता, लखनऊ। इस गर्मी के मौसम के लिए ब्लू स्टार लिमिटेड ने आज एसी की एक नई व्यापक रेंज का अनावरण किया, जिसमें बेस्ट-इन-क्लास अफोर्डेबल रेंज के साथ-साथ फ्लैगशिप प्रीमियम रेंज भी शामिल है। कंपनी ने हर ग्राहक वर्ग की जरूरतों को पूरा करने के लिए इन्वर्टर, फिक्स्ड स्पीड और विंडो एसी जैसे अलग-अलग वैरिएंट में और अलग-अलग मूल्य स्तरों पर लगभग 75 मॉडल लॉन्च किए हैं। कंपनी 2020 में बाजार में बड़े पैमाने पर प्रीमियम ब्रांड के रूप में खुद को रणनीतिक रूप से पुन: स्थापित करने के बाद, अपने उत्पादन, अनुसंधान और विकास और नवीन उत्पाद क्षमताओं को लगातार बढ़ाने पर ध्यान केंद्रित कर रही है। इसके जरिए कंपनीने किफायती स्प्लिट एसी की एक नई, अभिनव और बेहतर रेंज लॉन्च की है, जो टियर 2, 3, 4 और 5 के शहरी बाजारों में कीमत के प्रति जागरूक और पहली बार एसी खरीदने वालों की जरूरतों को पूरा करेगी । ब्लू स्टार ने संपूर्ण लागत-मूल्य श्रृंखला की दक्षता बढ़ाने पर जोर देने के साथ कुल लागत प्रबंधन (टीसीएम) कार्यक्रम को भी अपनाया है। श्री सिटी में ब्लू स्टार क्लाइमेट का नया ऑटोमेटेड और स्मार्ट मैन्युफैक्चरिंग प्लांटब्लू स्टार आत्मनिर्भर भारत अभियान का प्रबल समर्थक है और उसने अपनी पूर्ण स्वामित्व वाली सहायक कंपनी ब्लू स्टार क्लाइमेटटेक लिमिटेड के माध्यम से श्री सिटी में एक अत्याधुनिक विनिर्माण सुविधा स्थापित की है। ब्लू स्टार क्लाइमेट ने जनवरी 2023 में इस मैन्युफैक्चरिंग प्लांट से रूम एसी का व्यावसायिक उत्पादन शुरू कर दिया है। ब्लू स्टार यहां से कुछ नए उत्पादों का निर्माण करेगी। यह नई स्वचालित और स्मार्ट फैक्ट्री अपनी असेंबली लाइन और उत्पाद हैंडलिंग के लिए नवीनतम स्वचालन तकनीकों और उपकरणों से लैस है, और कंपनी ने बड़े पैमाने पर कृत्रिम बुद्धिमत्ता और डिजिटलीकरण की दिशा में कई पहलें शुरू की हैं। कंपनी ने स्थिरता पर अधिक जोर दिया है और इसलिए इस मोर्चे पर कई अभिनव पहलें की हैं जैसे कि बहुत उन्नत सीवेज उपचार संयंत्र, वर्षा जल संचयन परियोजनाएं और सौर ऊर्जा संयंत्र स्थापित करना। साथ ही, ग्रीन मिशनसे निकटता से जुड़ी कंपनीने इस विनिर्माण संयंत्र के लिए गोल्ड रेटिंग के लिए आवेदन किया है। दक्षिणी बंदरगाहों के निकट स्थित श्री सिटी प्लांट कंपनी के लिए कुशल कार्गो प्रबंधन को सक्षम करेगा, साथ ही लागत को नियंत्रित करते हुए परियोजना के निर्मित सामानों की आवाजाही को तेज करेगा। इस परियोजना के निर्माण से आसपास के क्षेत्र के स्थानीय लोगों को भी लाभ होगा । कंपनी ने अब तक परियोजना के लिए लगभग 350 करोड़ रुपये का निवेश किया है (कुछ वर्षों में परियोजना के लिए कुल 550 करोड़ रुपये की योजना बनाई गई है)। परियोजना ने जनवरी 1, 2023 को उत्पादन शुरू कर दिया है और पहले वर्ष में लगभग 3 लाख यूनिट का उत्पादन करेगी और उसके बाद धीरे-धीरे उत्पादन को बढ़ाकर बारह लाख यूनिट कर देगी।सभी ब्लू स्टार इन्वर्टर एसी स्मार्ट रेडी हैं और एक अलग स्मार्ट मॉड्यूल जोड़कर इन्हें स्मार्ट एसी में बदला जा सकता है।ब्लू स्टार के इन्वर्टर एसी की और एक अन्य महत्वपूर्ण विशेषता उनकी विस्तृत वोल्टेज रेंज है, जिससे बाहरी वोल्टेज स्टेबलाइजर की आवश्यकता बिलकुलही खतम हो जाती है। यह न केवल स्टेबलाइजर की लागत बचाता है, बल्कि एसी के बगल में इसे स्थापित करने के लिए अतिरिक्त जगह की आवश्यकता को भी मिटा देता है।ब्लू स्टार के एयर कंडीशनर अपनी गुणवत्ता, विश्वसनीयता और स्थायित्व के लिए जाने जाते हैं, जो ग्राहकों को बेहद किफायती मूल्य पर अद्वितीय कूलिंग प्रदान करते हैं, जिससे ब्लू स्टार कुलिंग उद्योग में एक टॉप कंपनी बन जाती है। घरेलू एसी क्षेत्र में 2011 में कंपनी के प्रवेश करने के बाद, ब्लू स्टार ने इस सेगमेंट में भी मजबूती से वृद्धि की है। कंपनी ने कई बार उद्योग से बेहतर प्रदर्शन किया है। कंपनी का लक्ष्य वित्त वर्ष 2025 तक रूम एयर कंडीशनर श्रेणी में 15 प्रतिशत बाजार हिस्सेदारी पर कब्जा करना है। कंपनी अपने उत्पादों के लिए वारंटी और आसान फायनान्सिंग भी प्रदान करती है।

देश में उत्पादित कच्चे तेल पर फिर लगा अप्रत्याशित लाभ कर

डीजल निर्यात फिलहाल शुल्कमुक्त

एजेंसी, नयी दिल्ली। सरकार ने देश में उत्पादित कच्चे तेल पर फिर से अप्रत्याशित लाभ कर लगा दिया है। अंतरराष्ट्रीय बाजार में ईंधन के दाम में तेजी के साथ यह कदम उठाया गया है। वहीं डीजल के निर्यात पर शुल्क को घटाकर शून्य कर दिया गया है। मंगलवार यानी जारी आधिकारिक आदेश के अनुसार, ऑयल एंड नैचुरल गैस कॉरपोरेशन (ओएनजीसी) जैसी कंपनियों द्वारा उत्पादित कच्चे तेल पर अब 6,400 रुपये प्रति टन का शुल्क लगेगा। इससे पहले, चार अप्रैल की समीक्षा में देश में उत्पादित कच्चे तेल पर अप्रत्याशित लाभ कर को घटाकर शून्य कर दिया गया था। इसका कारण वैश्विक स्तर पर कच्चे तेल के दाम घटकर 75 डॉलर प्रति बैरल से नीचे आना था। हालांकि, उसके बाद तेल निर्यातक देशों के संगठन (ओपेक) और रूस जैसे उसके सहयोगी देशों के उत्पादन में कटौती की घोषणा के बाद कच्चे तेल के दाम में तेजी आई। आदेश के अनुसार, सरकार ने डीजल के निर्यात पर कर 50 पैसे प्रति लीटर से घटाकर शून्य कर दिया है। विमान ईंधन एटीएफ के निर्यात पर शुल्क शून्य बना रहेगा। इस बारे में इक्रा लि. के उपाध्यक्ष और सह-समूह प्रमुख (कॉरपोरेट रेटिंग) प्रशांत वशिष्ठ ने कहा, ''पिछले महीने कच्चे तेल के दाम में नरमी रही। इसलिए चार अप्रैल, 2023 की समीक्षा में विशेष अतिरिक्त उत्पाद शुल्क को घटाकर शून्य कर दिया गया था।'' उन्होंने कहा, ''ओपेक और उसके सहयोगी देशों के कच्चे तेल के उत्पादन में 11.6 लाख बैरल प्रतिदिन की कटौती की घोषणा के बाद इसके दाम में तेजी आई है।'' इसको देखते हुए विशेष अतिरिक्त उत्पाद शुल्क (एसएईडी) को शून्य से बढाकर 6,400 रुपये प्रति टन (10.6 डॉलर प्रति बैरल) किया गया है। इक्रा का अनुमान है कि सरकार को इस उत्पाद शुल्क से 2023-24 में करीब 15,000 करोड रुपये प्राप्त होंगे। कीमतों के आधार पर ईंधन पर कर दरों की हर पखवाडे समीक्षा की जाती है। सरकार ने एक जुलाई, 2022 से कच्चे तेल के उत्पादन और पेट्रोलियम उत्पादों के निर्यात पर विशेष अतिरिक्त उत्पाद शुल्क लगाया था। इससे बीते वित्त वर्ष में लगभग 40,000 करोड रुपये प्राप्त होने का अनुमान है।

»» बॉलीवुड ««

क्या राघव चड्ढा संग परिणीति चोपड़ा ने रचा ली हैं सगाई, रिंग फिंगर में सिल्वर बैंड पहने स्पॉट हुई एक्ट्रेस

आम आदमी पार्टी के नेता राघव चड्ढा संग अपने रिश्ते को लेकर खूब सुर्खियां बटोरने वाली परिणीति चोपड़ा इन दिनों चर्चाओं में छायी हुई हैं। एक्ट्रेस को लेकर लम्बे समय से एक ही सवाल उठ रहा हैं की क्या वह राघव संग रिलेशन मून हैं और जल्द ही ये जोड़ा अपने रिश्ते के चलते शादी के बंधन में भी बंधने वाला हैं लेकिन अब तक भी इस बात की कोई आधकारिक सूचना किसी को नहीं मिल पाई हैं। लेकिन इन सब खबरों के बीच एक ऐसी तस्वीर सामने आई हैं जिसने फिर एक बार सबको इनके रिश्ते के लिए सोचने पर मजबूर कर दिया हैं। बॉलीवुड़ एक्ट्रेस परिणीति चोपड़ा अपनी रिंग फिंगर में एक सिल्वर बैंड पहने स्पॉट किया गया। जिसके बाद यह देख सबकी आंखें सीधा उनकी उस रिंग फिंगर और उसमे पहनी वो सिल्वर रिंग पर ही गड़ी रही। बीते दिन सोमवार की रात परिणीति चोपड़ा ने अपनी रिंग से सबका ध्यान अपनी ओर खींच लिया। हालांकि इस दौरान सिर्फ एक सिंपल सिल्वर बैंड रिंग का प्लेसमेंट नजर आ रहा था। बता दें कि एक्ट्रेस को सोमवार रात सेलिब्रिटी मैनेजर पूनम दमानिया के ऑफिस में स्पॉट किया गया था। इस दौरान परिणीति ने व्हाइट क्रॉप टॉप के साथ बिना बटन वाली शर्ट को श्रग के तौर पर पहना था। इसे उन्होंने डेनिम के साथ पेयर किया था। परिणीति कैजुअल लुक में काफी अट्रैक्टिव लग रही थीं। उन्होंने गोल्ड की अंगूठी और रिंग फिंगर में सिल्वर बैंड को छोड़कर मिनिमल मेकअप किया हुआ था। ऑफिस से निकलने से पहले एक्ट्रेस ने कैमरों के लिए स्माइल भी दी। वहीं आपको एक और खबर बता दे कि राघव चड्ढा ने प्रेस के साथ हाल ही में एक मुलाकात के दौरान अपनी रुमर्ड वेडिंग के सवालों को चालाकी से टाल दिया था। जी हाँ...! कुछ दिन पहले मीडिया के साथ बात–चीत करते हुए पॉलिटिशियन से पूछा गया था कि, परिणीति की खूब चर्चा हो रही है. इस पर राघव शरमा गए थे और हंसते हुए कहा था, जश्न मनाइये की आम आदमी पार्टी राष्ट्रीय पार्टी बनी है। और कई सारे जश्न मनाने का मौका आएगा। और इसी सरलता के साथ राघव इस सवाल से निकलते हुए दिखाई दिए थे।

जब अपने ही फिल्म के प्रीमियर में नहीं मिला था शहनाज गिल को इनविटेशन

बॉलीवुड की बबली और बेहद ही क्यूट एक्ट्रेस कही जाने वाली शहनाज गिल इन दिनों खूब सुर्खियों में बनी हुई हैं। दरअसल एक्ट्रेस जल्द ही बॉलीवुड के भाईजान सलमान खान के साथ बॉलीवुड डेब्यू करने वाली हैं। ऐसे में फिल्म से जुडी शहनाज को लेकर रोज नई–नई खबर सुनने को मिलती रहती हैं। इसी बीच अब शहनाज को लेकर एक और बड़ी खबर सोशल मीडिया पर जमकर वायरल हो रही हैं। जिसे सुनकर आप भी हैरान रह जाएंगे। दरअसल शहनाज आज भले ही किसी भी पहचान की मौहताज नहीं हैं। लेकिन शहनाज को यह पहचान इतनी आसानी से नहीं मिली है। इसके लिए एक्ट्रेस ने काफी स्ट्रगल किया है। कई बार तो शहनाज खुद भी अपने स्ट्रगल के किस्से शेयर करती रहती हैं। ऐस में अपने एक हालिया इंटरव्यू में शहनाज अपने एक और स्ट्रगल स्टोरी के बारे बात करती हुई नजर आई हैं। जहां शहनाज यह कहते दिखी है की किसी तरह से पंजाबी फिल्म इंडस्ट्री ने उन्हें पूरी तरह से बॉयकॉट कर दिया। उन्होंने खुलासा किया कि एक बार उनकी पंजाबी फिल्म के निर्माताओं ने उन्हें प्रीमियर पर इनवाइट नहीं किया था जिससे वो काफी हर्ट हुई थी। शहनाज यह कहते दिखी है की– मैं फिल्म में सेकेंड लीड में थी और उन्होंने मुझे प्रीमियर के लिए इनवाइट नहीं किया। उन्होंने सभी को बुलाया, यहां तक कि प्रोडक्शन हाउस को भी। यह एक पंजाबी फिल्म थी. मैंने फिल्म देखी और जब मैं जा रही थी तो मैंने प्रीमियर के वीडियो और तस्वीरें देखीं। मैं उस दिन बहुत रोई. उन्होंने मुझे फोन किया और फिर उन्होंने कैंसल कर दिया। मुझे नहीं पता था, उस वक्त मैं बहुत परेशान थी। पंजाबी इंडस्ट्री ने मुझे पूरी तरह से अलग कर दिया था. बता दे की शहनाज को असली पहचान छोटे परदे का फेमस रियलिटी शो बिग बॉस 13 से मिली थी। जहां शो में शहनाज ने अपने गेम से हर किसी का दिल जीत लिया था।

सारा तेंदुलकर से हुआ सुहाना खान का कंपैरिजन

रंगवाद भरा ट्वीट देख भड़क उठे लोग

इन दिनों आईपीएस का नशा पूरे देश पर चढ़ा हुआ है। क्या आम लोग और क्या सेलिब्रिटीज कोई भी एक भी मैच मिस करने को तैयार नहीं है। वहीं, रविवार को कोलकाता नाइट राइडर्स और मुंबई इंडियंस के बीच हुए आईपीएल मैच पर लोगों की नजरे टिकी रहीं। हर कोई इस मैच को देखने के लिए बेताब था। ऐसे में शाहरुख खान की लाड़ली सुहाना खान और सारा तेंदुलकर भी संडे को हुए इस आईपीएल मैच को देखने पहुंची थीं। लेकिन इस दौरान कुछ ऐसा हुआ जिसके बाद सोशल मीडिया पर एक बेहद शर्मनाक चीज देखने को मिली। दरअसल, एक ट्विटर यूजर ने सरेआम सुहाना और सारा तेंदुलकर को कम्पेयर कर डाला। हैरानी की बात तो ये है कि ये कम्पैरिजन दो महिलाओं के अपीयरेंस पर था। ये देख लोग भड़क उठे और ज्यदातर लोगों को ये बात पसंद नहीं आई। नेटिजन्स ने इस कमेंट को यूजर की कलरिस्ट और सेक्सिस्ट मानसिकता बताया। दरअसल, एक ट्विटर यूजर ने हुए आईपीएल मैच में सारा तेंदुलकर और सुहाना खान की अपनी–अपनी टीमों के लिए चीयर करते हुए तस्वीरें पोस्ट कीं। उन्होंने सारा तेंदुलकर की तस्वीर को कैप्शन दिया, ये ब्यूटी है जबकि उन्होंने सुहाना कि तस्वीर पर लिखा, ये क्या है। नेटिजन्स को ये ट्वीट बेहद घटिया लगा, जिसमें सुहाना खान को सिर्फ उनकी स्किन टोन के लिए नीचा दिखाया गया। अब लोग इसपर अलग–अलग तरह से रियेक्ट कर रहे हैं। एक यूजर ने इस वायरल ट्वीट के जवाब में लिखा, यही वजह है कि कई सेलेब्रिटीज अपने बच्चों का चेहरा जनता को नहीं दिखाना चाहते। विश्वास नहीं होता कि इस देश में अभी भी रंगवाद मौजूद है। तो एक यूजर ने ट्वीट किया, रंगवाद इस देश में जीवित है और फल–फूल रहा है। एक सोशल मीडिया यूजर ने लिखा, मैं सिर्फ दो यंग वीमेन को देखती हूं जिनके पास भारी पीढ़ीगत संपत्ति है जो अपने काम से काम रख रही है जबकि एक मूर्ख उनसे ऑब्सेस्सेड है। एक शख्स ने लिखा, भारतीय अभी भी सोचते हैं कि गोरी त्वचा सुंदरता का प्रतीक है या जो भी हो। मैं हैरान भी नहीं हूँ, मैंने अपने पूरे जीवन में इसका अनुभव किया है और मैं अब भी करता हूँ। कुछ इसी तरह से लोगो के रिएक्शन अब सोशल मीडिया पर देखने को मिल रहे हैं।

ब्रेकअप के बाद पहली बार स्पॉट हुई माहिरा शर्मा और पारस छाबड़ा

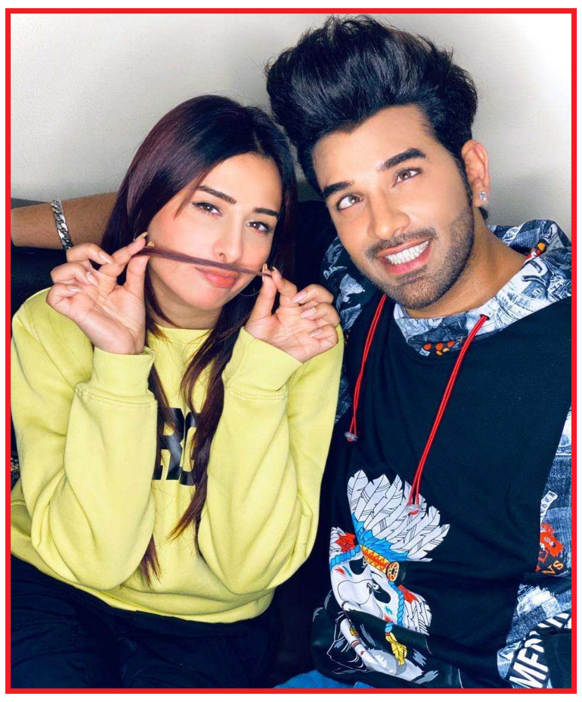

बी–टाउन एक ऐसी जगह हैं जहां आए दिन रिश्तें बनते और टूटते रहते हैं। यहां कब कौन सा कपल रिलेशन में आ जाए और कब किनका ब्रेकअप हो जाए यह तय कर पाना बड़ा ही मुश्किल हैं। ऐसे में अब बी–टाउन की गलियारों में एक और कपल के ब्रेकअप की खबर तेजी से वायरल हो रही हैं। दरअसल यह कपल कोई और नहीं बल्कि बिग बॉस 13 में बनी चर्चित जोड़ी माहिरा शर्मा और पारस छाबड़ा हैं। वही अब इन दोनों के ब्रेकअप की खबरे सोशल मीडिया पर जमकर वायरल हो रही हैं। दरअसल पाहिरा नाम से मशहूर पारस और माहिरा की जोड़ी को बिग बॉस के वक्त से खूब पसंद किया जाता था। लेकिन हाल ही में यह खबर इंटरनेट पर तेजी से वायरल हुई थी की दोनों ने एक दूसरे से ब्रेकअप कर लिया है। साथ ही दोनों ने एक दूसरे को फॉलो करना भी बंद कर दिया हैं। ऐसे में अब ब्रेकअप के खबरों के बीच पहली बार माहिरा शर्मा को मीडिया के कैमरों के सामने स्पॉट किया गया हैं। वायरल हो रहे वीडियो में माहिरा किसी और लड़के साथ बेहद खुश दिखाई दे रही हैं। गाड़ी में एक दूसरी लड़की भी नजर आ रही है। यहां उनके फेक एक्सेंट को सुनने के बाद सोशल मीडिया यूजर्स उन्हें ट्रोल कर रहे हैं। बीती रात माहिरा शर्मा अपनी टीम के सदस्यों के साथ मुंबई के जुहू लॉन्ज के बाहर स्पॉट हुई थीं। माहिरा ने पार्किंग बॉय को कुछ टॉफी और पैसे दिए और अपनी पंजाबी फिल्म लेम्बोर्गिनी देखने की बात कही। इस दौरान माहिरा बेहद खुश नजर आ रही थीं। उन्हें देख कर कहना मुश्किल है कि हाल में पारस छाबड़ा से उनका ब्रेकअप हुआ है। पैपराजी से इंटरैक्ट करते वक्त उन्होंने एक्सेंट बदल कर बात की जो शायद सोशल मीडिया यूजर्स को पसंद नहीं आया जिसकी वजह से अब एक्ट्रेस को सोशल मीडिया पर जमकर ट्रोल किया जा रहा हैं। जहां एक यूजर ने कमेंट कर लिखा है की– फेक एक्सेंट मारने से फिल्म का नाम नहीं चेंज हो जाएगा। तो वही एक यूजर ने लिखा है की– ये आज भी उतनी ही इर्रिटेटिंग है जितनी बिग बॉस में थी। तो वही एक यूजर ने तो यह तक कह दिया की– पहले इसी आवाज इर्रिटेटिंग थी, अब इसकी फेक एक्सेंट इर्रिटेटिंग है। वही अब इस तरह के ढेरो कमेंट कर यूजर्स लगातार माहिरा को ट्रोल करते हुए नजर आ रहे हैं।

»» बॉलीवुड ««

पार्टी में प्रेगनेंट बीवी को घसीटने पर ट्रोल हुए अनस सईद, सना खान ने दी पति की हरकत पर सफाई

पार्टी में बड़े–बड़े बॉलीवुड और टीवी एक्टर्स स्पॉट हुए। इस दौरान पैपराजी ने कुछ ऐसी तस्वीरें और वीडियो अपने कैमरा में कैप्चर कर लिए जिसके बाद सोशल मीडिया पर तेहेलका मचा हुआ है। यहां तक कि कई सेलेब्स को सोशल मीडिया ट्रोलिंग का भी सामना करना पड़ रहा है। आपको बता दें, बाबा सिद्दीकी की पार्टी में एंटरटेनमेंट इंडस्ट्री को हमेशा के लिए छोड़ चुकी एक्ट्रेस साना खान भी मौजूद थीं। यहां वो अपने पति अनस सईद के साथ शिरकत करती दिखाई दी थीं। इस दौरान का एक वीडियो फिलहाल इंटरनेट पर खूब वायरल हो रहा है, जिसमे कपल को देख लोग खुद को कमेंट करने से रोक नहीं पाए। इस वायरल वीडियो को जिसने भी देखा उसने सना खान के पति को ट्रोल करना शुरू कर दिया। हालांकि, अब एक्ट्रेस ने इस वायरल वीडियो पर अपनी सफाई दी है। आपको बता दें, बाबा सिद्दीकी की इफ्तार पार्टी में प्रेग्नेंट सना खान बुर्का पहने पहुंची थीं। हालांकि, उनका बेबी बंप साफ नजर आ रहा था। लेकिन इसी बीच एक वीडियो भी सामने आया, जिसमें साफ देखा जा सकता है कि अनस– सना का हांथ खींचकर उन्हें जल्दी–जल्दी अपने साथ लेकर जा रहे हैं। सना थकीं हुई हैं, उन्हें चलने में भी परेशानी हो रही है और उनके चेहरे पर थकान साफ नजर आ रही है। ऐसे में प्रेग्नेंट पत्नी को इस तरह खींचने पर अब सना के पति यूजर्स के निशाने पर हैं। लोगों ने जमकर उन्हें ट्रोल किया, जिसके बाद एक्ट्रेस ने अब इसकी सच्चाई बताई है। ट्रोलिंग के बाद सना खान ने लिखा, ये वीडियो अभी मेरे नोटिस में आया है। मैं जानती हूं कि मेरे सभी प्यारे भाई और बहनों को देखने में ये अजीब लग रहा है, यहां तक की मुझे भी लगा। हम लोग ड्राइवर से कॉन्टैक्ट नहीं कर पा रहे थे। कार का भी पता नहीं लग रहा था। मैं काफी देर तक खड़ी थी और मुझे बहुत पसीना आ रहा था। मैं बहुत अनकम्फर्टेबल भी हो गई थी।

फिल्म एनीमल : तो इस कारण खुशी से फूले नहीं समा रहे रणबीर कपूर

बॉलीवुड के मशहूर अभिनेता रणबीर कपूर अपनी आने वाली फिल्म एनीमल के लिए इन दिनों खूब मेहनत कर रहे हैं। जिसके लिए वह हाल ही में लंदन में शूटिंग कर रहे थे, और सेट के नए फुटेज से संकेत मिलता है कि फिल्म की इंटरनेशनल शूटिंग अब खत्म हो गई है। इस अवसर को चिह्नित करने के लिए फिल्म के कलाकारों और चालक दल ने सेट पर एक छोटा सा जश्न मनाया, जिसमें बॉबी देओल ने भाग लिया। एनिमल कास्ट और क्रू ने केक काटने के सत्र की मेजबानी करते हुए एक वीडियो ऑनलाइन सामने आया है। वीडियो में बॉबी और रणबीर गर्म कपड़ों में नजर आ रहे हैं और पूरा क्रू मेंबर उनका हौसला बढ़ा रहा है। उनके सामने टेबल पर केक रखा हुआ था। काटने से पहले रणबीर ने बॉबी के गाल पर किस किया। उन्होंने उन्हें कमाल बताते हुए कहा, थैंक यू बॉबी सर। यू आर अमेजिंग। इस पर बॉबी ने जवाब में रणबीर और बाकी सभी को अद्भुत कहकर जवाब दिया। उन्होंने साथ में केक काटा और सभी ने तालियां बजाकर उनका उत्साह बढ़ाया। केक पर फिल्म का फर्स्ट लुक पोस्टर था। इस वीडियो को एक पैपराजी अकाउंट ने इंस्टाग्राम पर शेयर किया है। इसमें लिखा था, एनिमल के सह–कलाकार बॉबी देओल और रणबीर कपूर लंदन शेड्यूल की रैप अप पार्टी मनाते हैं। हम उन्हें स्क्रीन पर एक साथ देखने के लिए उत्साहित हैं। इसे साझा किए जाने के तुरंत बाद, एक उपयोगकर्ता ने टिप्पणी अनुभाग में ले लिया और लिखा, बॉबी आप महान हैं।

स्टार एक्सप्रेस
स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक नरेन्द्र कुमार द्वारा सांई ऑफसेट प्रिन्टर्स, 40 वासुदेव भवन, कैसरबाग, लखनऊ से मुद्रित एवं एमजी–18, सेक्टर–सी, अलीगंज, लखनऊ (उ.प्र.) से प्रकाशित।
सम्पादक: नरेन्द्र कुमार । (पीआरबी एक्ट के अन्तर्गत सभी विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ होगा) R.N.I. No.- UPHIN/2008/24076 Email Id : starexpressnews@gmail.com

CMYK